आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
सितम्बर–2024, RNI-50756
वर्ष-33, अंक-406 मूल्य 150/-

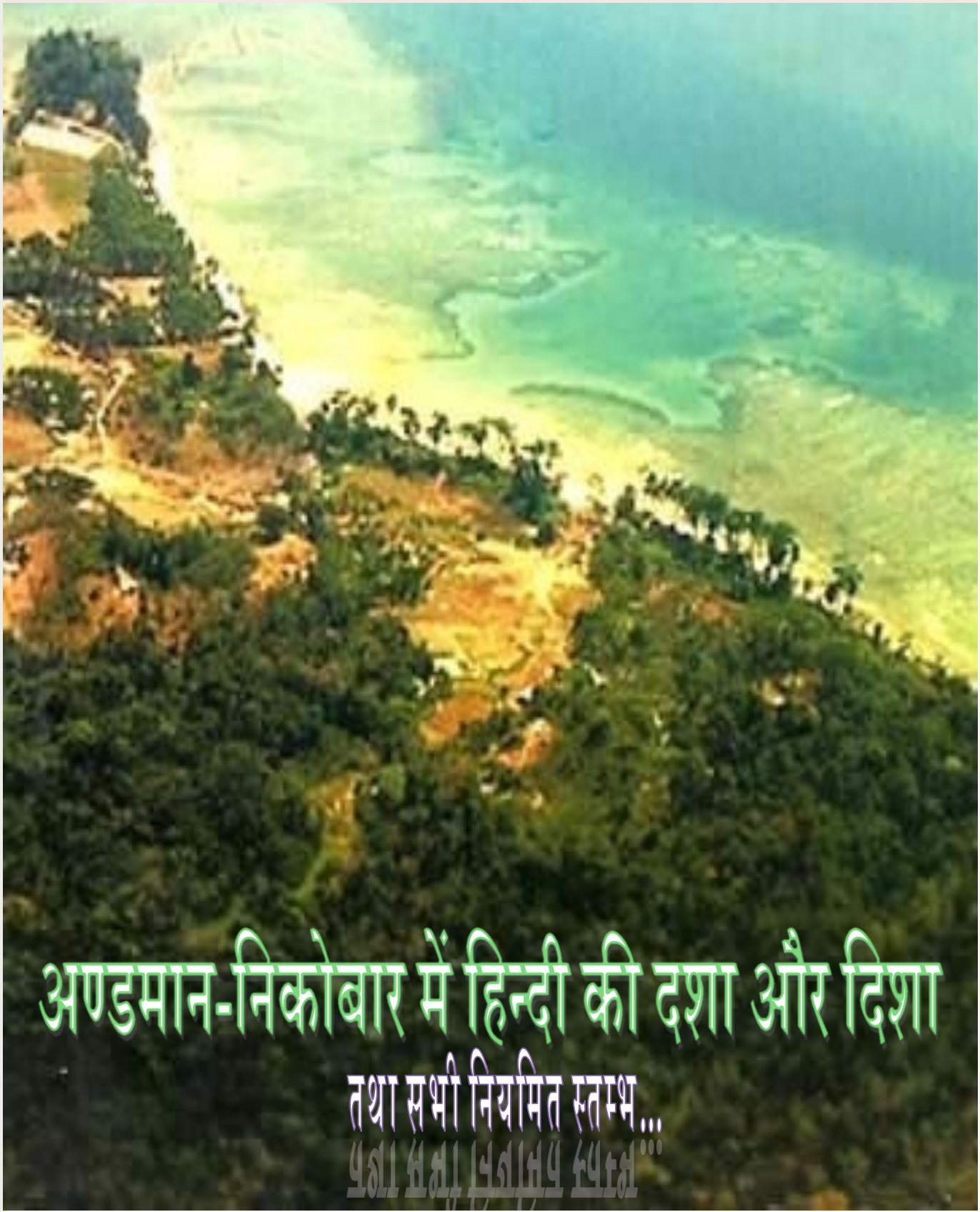

अण्डमान-निकोबार में हिन्दी की दशा और दिशा

तथा सभी नियमित स्तम्भ...

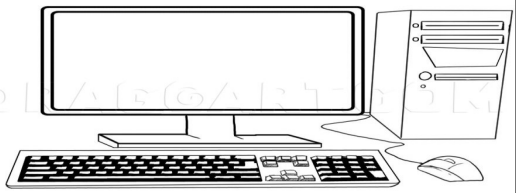

अपनी बात...

प्रिय समस्त!

संपर्क भाषा भारती का नवीनतम, सितंबर 2024 अंक आपके समक्ष रखते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है।
पत्रिका अनवरत रूप से पिशहले कई वर्षों से आप को सुलभ हो रही है यह इस बात को प्रमाणित करता है कि आप का प्यार और स्नेह हमें बराबर प्राप्त हो रहा है।
संपर्क भाषा भारती परिवार का बराबर प्रयास रहता है कि पत्रिका आपको समय पर मिलती रहे किन्तु, कई बार कंप्यूटर इत्यादि की कुछ विवशताएँ हो जाती हैं।
हमारा प्रयास रहेगा कि आगामी अंकों में हम दो-तीन दिन के इस विलंब को भी दूर कर लेंगे।

सादर,

सुधेन्दु ओझा
(संपादक)

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304
पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। **प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092**

"संपर्क भाषा भारती" हिन्दी साहित्य की आपकी परिचयिका...

संपर्क भाषा भारती

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा
प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

सितम्बर-2024

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	साहित्यिक समाचार		6
3	कविता	डॉ मनोहर अभय	8
4	समाचार/लघुकथा	ज्योत्सना सिंह	9
5	कविता	ब्रह्मानन्द गुप्ता	10
6	रामानुज अनुज की साहित्यिक यायावरी	डॉक्टर अमोल बटरोही	11
7	हिन्दी दिवस	पद्मा अग्रवाल	12
8	गुजरात के मुख्यमंत्री द्वारा डाक चौपाल जारी	एमएम शेख	13
9	लघुकथा: शक्ति	प्रगति त्रिपाठी	14
10	लघुकथा : पंच प्रस्थान	दीपक कुमार	14
11	लघुकथा : एसी	सुमन ओबरोय	17
12	ग़ज़ल	विनय बंसल	17
13	ग़ज़ल	अंजना वर्मा	18
14	कविता	सूर्य प्रकाश मिश्र	19
15	कविता	विनोद वर्मा	19
16	कहानी : मिस कॉल	अशोक दर्द	21
17	हिमाचल प्रदेश का जनजातीय समाज	छविन्दर शर्मा	25
18	कविता	व्यग्र पाण्डेय	29
19	यादों के गलियारे से : भवानी प्रसाद मिश्र	शीला झुनझुनवाला	30
20	लघुकथा : वो नाश्ता	मृत्युंजय कुमार सोनी	35
21	लघुकथा : माँ का मर्म	आकांक्षा यादव	37
22	कहानी : अपराधबोध	डॉ रजनीकान्त	38
23	केशव शरण की कवितायेँ	केशव शरण	43
24	हिन्दी राष्ट्रभाषा और चुनौतियाँ	पद्मा अग्रवाल	44
25	कविता	निर्मला कुमारी	44
26	मध्यकालीन कविता में राष्ट्रीयता	डॉ ओम प्रकाश प्रजापति	45
27	कविता	सोनल मंजू ओमर	50
28	कविता	आरती ठाकुर	52
29	अंतर्द्वंद्वों का अधूरा कथानक : मनगरिया	डॉ राम भरोस पाण्डेय 'विकल'	53

30	कविता	स्मिता श्रीवास्तव	55
31	कविता	मोती लाल दास	60
32	कविता	सुषमा सक्सेना	61
33	कविता	अंकुर सिंह	61
34	अंडमान-निकोबार में हिन्दी की दशा और दिशा	कृष्ण कुमार यादव	65
35	लघुकथा : टाइम पास	रतन चंद रत्नेश	71
36	कीमती कुर्ता	अर्चना त्यागी	74
37	यात्रा वृत्तान्त : अर्बुदाचल	डॉ सतीश बब्बा	79
38	गायत्री मंत्र	शशिबिंदु नारायण मिश्र	81

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

साहित्यिक समाचार

समकालीन कविता की राह पर सतर्क हैं निर्मल कर्ण

कथा लेखिका एवं कवयित्री निर्मला कर्ण की अधिकांश कविताओं में सपाटबयानी नहीं है l उन्होंने छँद जोड़ने का प्रयास किया है l तुक मिलाने का प्रयास किया है l आज कविता के संकट के दौर में जब अधिकांश मुखधारा के कवि कविता को मजाक बनाकर सपाटबयानी बना दिए हैं, और विषय की ताजगी के स्थान पर शब्दों की कलाबाजी दिखलाते हुए पहेली बुझा रहे हैं, उस मायने से निर्मला कर्ण कहीं बेहतर और सार्थक प्रयास कर रही हैं l क्योंकि उनकी कविताएं सपाटबयानी होकर भी बोझिल नहीं है, बल्कि बहुत ही सहज रूप से अपनी बातों को अभिव्यक्त करने में सफल दिखायी पड़ती है l

बेटी के बारे में ढेर सारे कवियों ने अपनी अपनी तरह से शब्दों को अभिव्यक्त किया है l निर्मल कर्ण अपनी कविता में कहतीं है - लक्ष्मी और सरस्वती का अवतार है बेटियां /आती है जग पर करने को उपकार बेटियां

बहुत दिवस तक शोषित रह कर पाया है अपमान/अपने गुण को सम्मुख रखकर जग से लिया सम्मान!/ समकालीन कविता की राह पर सतर्क है निर्मल कर्ण l

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वावधान में, गूगल मीट के माध्यम से, फेसबुक के अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर, हेलो फेसबुक कवि सम्मेलन का संचालन करते हुए संयोजक सिद्धेश्वर ने उपरोक्त उद्गार व्यक्त किया l हेलो फेसबुक सम्मेलन में शामिल होने वाले कवियों में प्रमुख थे सर्वश्री गोपाल सिंह / पूनम कतरियार / जयप्रकाश अग्रवाल (काठमांडू) / नलिनी श्रीवास्तव / सिद्धेश्वर / निर्मला कर्ण /अनीता मिश्रा सिद्धि / डॉ अनुज प्रभात/ राज प्रिया रानी / जागृति गौर / पूनम वर्मा / त्रिपुरारी कुमार पांडे / विजया कुमारी मौर्या / राजीव कुमार जिया आदि l इनके अतिरिक्त फेसबुक के माध्यम से एकलव्य केसरी, सुनील कुमार उपाध्याय, पूनम वर्मा, नरेश कुमार आष्टा सुधा पांडे, बीना गुप्ता, नीलम श्रीवास्तव, रत्ना माणिक, ऋचा वर्मा संतोष मालवीय, प्रियंका श्रीवास्तव शुभ्र, नीता शेखर, रश्मि लहर, अर्चना कोहली, रजनी श्रीवास्तव अनंता, आशीष आनन्द आर्य ईच्छित आदि की भी महत्वपूर्ण भागीदारी रही l

अपने अध्यक्षीय टिप्पणी में वरिष्ठ लेखिका अनीता मिश्रा सिद्धि ने कहा कि - कविता, आलेख में अंतर होता है पद्य के अंतर्गत " कविता आती है चाहे तुकांत हो अतुकान्त हो, वार्णिक हो, मात्रा गणना में हो। गद्य के अंतर्गत निबंध, कहानी, लघुकथा, यात्रा वृतांत आते हैं, जिसमें भावो का विस्तार हो।

कविता में भाव होते है और कवि अपने शब्दो के चयन से अलंकृत कर उसे लयमय बना देते हैं।

जैसे - नारी से ही घर बने, नारी से संसार।/नारी बिन सूना लगे, सारा घर परिवार।

समकालीन कवि सपाटबयानी में गद्य लिखते हैं, कविता नहीं l प्रथम सत्र में कथा लेखिका और कवयित्री निर्मला कर्ण ने सार्थक समकालीन कविताओं का पाठ कर अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है l

इस ऑनलाइन कवि सम्मेलन में पढ़ी गई कविताओं पर समीक्षात्मक टिप्पणी करते हुए मुख्य अतिथि निर्मल कर्ण ने कहा कि - आभारी हूँ आदरणीय सिद्धेश्वर जी का साथ ही बहन अनीता मिश्रा जी का भी आज के हेलो फेसबुक कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि बनाने के लिए। मैं मुख्यतः गद्य विधा में लेखन करती हूँ, कविताओं में भी मुक्त छंद की रचना होती है। छंदबद्ध बहुत कम रचनाएँ मैंने की है। छंदबद्ध रचनाएँ अधिकतर गाते हुए लिखी जाती हैं, क्योंकि गाकर लिखने से मात्रादोष या लयात्मकता की कमी होने की संभावना नहीं रहती । यही कारण है कि आज अधिकतर पद्य रचनाएँ छंदमुक्त और अतुकांत होने लगी हैं। कई लोगों से मैंने सुना है –" गद्य लिखना बहुत कठिन है कौन इतनी लंबी -लंबी रचना लिखता रहे। कविता तो झट पेन उठाया और लिखकर छुट्टी। कुछ काम करते-करते भी चार पंक्ति लिख लिए तो एक कविता तैयार हो गई। उन लोगों के लिए मैं कहना चाहूंगी – ' कविता मात्र टाईम पास नहीं है। कविता साहित्य की वह विधा है जिसमें अपनी भावनाओं को कलात्मक रूप से व्यक्त किया जाता है। कविता में कहानी का कथ्य तो हो लेकिन लयात्मकता भी हो। साथ ही शब्द संयोजन भी सुरुचिकर और सुव्यवस्थित हो।' कविता एक गहन गंभीर विधा है। जो इसे टाईम पास समझने की भूल करते हैं वे कभी काव्य लेखन में आगे नहीं बढ़ पाते। हेलो फेसबुक कवि सम्मेलन का

समापन, संचालक सह प्रभारी डॉ अनुज प्रभात के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से हुआ l

प्रस्तुति : बीना गुप्ता

नई शैली में लघुकथा की अप्रतिम हस्ताक्षर है यशोधरा भटनागर

सहजता औऱ प्रतीकात्मकता यशोधरा भटनागर की लघुकथाओं की विशेषता है : योगराज प्रभाकर

जब हम लघुकथा की शास्त्रीयता की बात करते हैं, तब यशोधरा भटनागर की लघुकथाएं हमें बहुत प्रभावित करती है l उनकी लघुकथाओं में विषय की ताजगी और शैली की अपनी अलग विशेषता है l आज भौतिकवादी युग में हम अधिक पैसे कमाने की लालसा में अपनी संतान को अधिक पैकेज वाली नौकरी की अपेक्षा करते हुए, ईश्वर से प्रार्थना करते हैं l चाहे उसकी नौकरी विदेश में ही क्यों ना हो जाए l और जब भगवान उनकी विनती सुन लेते हैं, तब यही भव्यता उन्हें खालीपन का एहसास कराने लगती है l तब हम भूल जाते हैं- ' साईं इतना दीजिए जामे कुटुंब सामाए' की पारंपरिक अवधारणा l आज के कटु सत्य को यशोधरा भटनागर ने अपनी लघुकथा 'एक मुट्ठी मिट्टी में ' व्यक्त किया है, जिसका अंत हमें भीतर से तिलमिला देता है l

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वावधान में, गूगल मीट के माध्यम से, फेसबुक के अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर, हेलो फेसबुक लघुकथा सम्मेलन का संचालन करते हुए संयोजक सिद्धेश्वर ने उपरोक्त उद्गार व्यक्त किये l अपनी डायरी में सिद्धेश्वर ने कहा कि यशोधरा भटनागर की एक मुट्ठी मिट्टी , रोटी मेकअप जैसी लघुकथाएं अधिक सार्थक दिख पड़ती है और इन लघुकथाओं के माध्यम से नई शैली में लघुकथा को अभिव्यक्त करने वाली अप्रतिम हस्ताक्षर लगती है यशोधरा भटनागर l

अपने अध्यक्षीय टिप्पणी में पंजाब के यशस्वी साहित्यकार एवं लघुकथा कलश के संपादक योगराज प्रभाकर ने कहा कि अधिकांश लघुकथाकारों ने अच्छा प्रयास किया है, किंतु उन्हें अपने जानकारों से राय परामर्श अवश्य लेनी चाहिए l कुछ रचनाओं में बेहद पुराना और घिसा पिटा विषय दोहराया गया है l स्तरीय औऱ आधुनिक लघुकथा का अध्ययन करना चाहिए। इससे उनकी कल्पना का दायरा विशाल होगा l कोई भी प्रबुद्ध रचनाकार आलोचना से नहीं डरते बल्कि सार्थक आलोचना का स्वागत करते हैं l और मार्गदर्शन लेकर रचना में वांछित सुधार भी करते हैं l कभी भी अपनी लिखी हुई रचनाओं को पत्थर की लकीर नहीं माननी चाहिए, और जरूरत पड़ने पर आवश्यक संशोधन भी स्वयं करना चाहिए l इससे रचना और श्रेष्ठ हो जाती है l यशोधरा भटनागर की लघुकथाओं में नैसर्गिक सौंदर्य है l सहजता औऱ प्रतीकात्मकता यशोधरा भटनागर की लघुकथाओं की विशेषता है l

इस ऑनलाइन कवि सम्मेलन में पढ़ी गई लघुकथाओं पर समीक्षात्मक टिप्पणी करते हुए मुख्य अतिथि ऑस्ट्रेलिया से वरिष्ठ लघुकथा लेखिका डॉ यशोधरा भटनागर ने कहा कि - गागर में सागर भर देने वाली विधा है लघुकथा जो अपने आकार में लघु है और साथ ही जिसमें कथा तत्व भी समाहित है। अपने एकांगी स्वरूप के कारण लघुकथा एक ही कालखंड में सिमटी होती है।यह एक घटना या एक क्षण पर आधारित होती है।

लघुकथा का अंत मारक क्षमता लिये हुए होना चाहिए जो पाठक के हृदय को उद्वेलित कर सके। लघुकथा पढ़ते और लिखते समय मेरे मन-मस्तिष्क में रीतिकालीन कवि बिहारी जी का दोहा सदा आच्छादित रहता है - सतसैया के दोहरे,ज्यों नाविक के तीर।

देखने में छोटे लगें, घाव करें गंभीर।।डॉ. सतीशराज पुष्करणा जी ने भी कहा है–"समाज में व्याप्त विसंगतियों में किसी विसंगति को लेकर सांकेतिक भाषा-शैली में चलने वाला सारगर्भित, प्रभावशाली एवं सशक्त कथ्य जब झकझोर/छटपटा देने वाली लघु आकारीय कथात्मक रचना का आकार धारण कर लेती है, तो लघुकथा कहलाती है।"इसके साथ ही मैं अपनी वाणी को विराम देती हूँमुझे इस सुंदर कार्यक्रम में सम्मिलित होने का सुअवसर प्रदान करने के लिए'अवसरसाहित्यधर्मी पत्रिका मंच' के संस्थापक आदरणीय सिद्धेश्वर जी को हृदय से धन्यवाद देती हूँविद्वान द्वय योगराज प्रभाकर जी एवं सिद्धेश्वर जी की उदारता एवं सभी को साथ ले कर चलने की भावना के लिए मैथिलीशरण गुप्त जी की एक पंक्ति समर्पित हैं -" तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे l"

हेलो फेसबुक लघुकथा सम्मेलन में गार्गी रॉय ने कब तक / कल्पना भट्ट ने नव प्रकाश / सीमा रानी ने बोहनी / नलिनी श्रीवास्तव ने जिंदा हसरतें / अनीता पांडे ने दिगभ्रमित / निधि गौतम ने मौसम/ ऋचा वर्मा ने हुलिया/ रश्मि लहर ने मेरी बिटिया / अनीता रश्मि ने आज की दुनिया/ पूनम कतरियार ने धूप हवा / सिद्धेश्वर ने मां के साथ-साथ यशोधरा भटनागर /योगराज प्रभाकर/ऋचा वर्मा / निर्मल कुमार /पूनम वर्मा / विजय कुमारी मौर्य /निशा कुमारी /राजप्रिया रानी /अनिल कुमार जैन ने भी अपनी विचार उत्तेजक लघुकथाओं का पाठ किया l

दो गीत

एक

तुम्हारी उँगलियों में
होंगी अँगूठियाँ
हीरे जड़ी
खो जाएगी जिंदगी की
सब हड़बड़ी
जब हम मिलेंगे|

चाँदियों की चम्मचें
खनखनाएँगी
भोर की सुहागिलें
बिछुए दबाएँगी
सैकड़ों शतदल खिलेंगे|

सत्य है, स्वप्न या
ख्याली -पुलाव
आधी रात में टूटते
सितारों का मेहराव
क्या कहेंगे?

दिव्यांग ढोलकी सा
दो गजा घर मिला
चौंधियाते शहर से
भी गिला
भभकती रोशनी में
पतिंगों से जलेंगे|

जो नहीं सोचा कभी
वही हुआ
पीछे लग गया
वक्त का तेंदुआ
प्राण अब
कैसे बचेंगे?

डॉ मनोहर अभय

दो

तुम आए
ज्यों घोर तपन में
मधुमास पवन
मुस्काए|

छलक पड़े हों
भरे दूध के कलशे
निदियारी बेटी सूरज की
मुँह धोती हो जल से
विश्रान्त पथिक को
अमराई मिल जाए|

नई सुबह की लाली
जैसे मेंहदी रची हथेली
भरी भीड़ में
मिली अचानक
बिछुड़ी हुयी सहेली
पीहर से कोई
खबर नई लाए|

अनछुए फूल की खुशबू
छू ले अम्बर की दूरी
जलती दुपहर में
बरस पड़े
सावन की बदरी
कोई दुखियारा
विरहा गाए|

घड़ी दो घड़ी ठहरो
आने को कह गई अभी पुरवाई
एम्बर के नील महल में
रही बाज शहनाई
फालसई बादल
हर्ष हर्ष हर्षाए|

9167148096

डॉ सविता चड्ढा जी की "अध्यक्षता" में संपन्न हुआ "तिरंगा काव्य समारोह"

तिरंगा हमारी आन - बान और शान है। इसकी हिफाज़त हम सब भारतीयों का काम है। इसकी रक्षा में हमारे जवान हर समय तैयार हैं। -यह उद्गार अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवयित्री और लेखिका डा. सविता चड्ढा ने, क्रिएटिव अनलॉक, पालम एक्सटेंशन सेक्टर 7 में आयोजित " तिरंगा काव्य समारोह " की अध्यक्षता के दौरान व्यक्त की। उन्होंने आगे कहा - ' जो हमसे टकरायेगा, चूर -चूर हो जायेगा। '

कार्यक्रम की "मुख्य अतिथि" के रूप में आगरा से पधारी ओज विधा की राष्ट्रीय कवयित्री और भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता "अंशू छौंकर अवनी" ने अपने ओज भरे अंदाज में कहा - ' मैं भी इस मिट्टी का कर्ज चुकाऊंगी। '

पंतनगर की धरती से आए "अति विशिष्ट अतिथि" गजलकार डा. के. पी सिंह ' विकल ' ने कहा - इतनी गुंजाइश रखना यार खता भी हो सकती है जाने अनजाने में

"विशिष्ट अतिथि" आशुकवि शिक्षक और पत्रकार आ० "के पी एस चौहान " इंदौर एम पी से आए और अपनी आशु कविताओं से आनंदित किया।

स्वाधीनता दिवस के लगभग पखवाड़ा पूर्व आयोजित इस कार्यक्रम में देश भक्ति से परिपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन "पोएट्री विद मोहिनी" दिल्ली संस्था के तत्वावधान में दिनांक 4 अगस्त 2024 दिन रविवार को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कवि तरूण तरंग की चिरपरिचित सुरीली आवाज में माँ सरस्वती की पूजा अर्चना और वाणी वंदना से हुआ। उसके बाद उपस्थित सभी साहित्यकारों द्वारा राष्ट्रगान गाया गया।

तत्पश्चात "महफ़िल- ए - समागम" "तिरंगा काव्य समारोह" की शुरुआत की गई। वहाँ उपस्थित एक से बढ़कर एक धुरंधर रचना कारों ने राष्ट्र प्रेम, मित्रता दिवस आदि-2 के संबंध में सुमधुर रचना पाठ किया।

जितेंद्र यादव ' चंबल ' ने खुदकुशी पर तंज कसते हुए पढ़ा - हर समस्या का हल तो नहीं खुदकुशी, दिल्ली से पधारे कवि साहित्यकार और पत्रकार सुभाष श्रीवास्तव ने अपनी देश भक्ति को कुछ इस तरह बयां किया- मेरा देश रंगीला है, रंगीला रंग रंगीला है। माँ का चूनर हरा है, पिता ब्योम नीला है।

पोएट्री विद मोहिनी की संस्थापिका , संचालिका और श्रंगार रस की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुमन मोहिनी सलोनी ने अपनी ग़ज़ल पढ़ी और खूब तालियाँ बटोरी, ग़ज़ल का मतला इस प्रकार था - रूठी ये है गजल मुझसे, रूबाई देती है ताना। गली से आजकल उसकी नहीं होता

दुआ

सुदिनी ने बच्ची के शरीर को हाथ लगाया और बुदबुदा उठी-

"भट्टी की तरह तप रहा है।"

माँ के छूते ही अचेत पड़ी बच्ची के शरीर में हरकत हुई और सूखे होंठो से उसने कहा-

"माई भूख सी लागे है।"

"हाँ,लाड़ो,हाँ"

वह लड़खड़ाते हुए ठंडी पड़ी रसोई की तरफ़ बढ़ी।एक-एक करके तीन चार जो भी मटके थे उसने सब खंगाल डाले।सब उसे मुँह चिढ़ा रहे थे।

रीते हाथों वह बिटिया के बिछौने तक जाने की हिम्मत न जुटा पा रही थी। अपने दोनों हाथ दुआ में उठा वह बोली

"हे देवी माँ! कुछ भी करके आज बड़ी कोठी से बुलावा लगवा दे मेरी लाड़ो की तड़प अब न सही जाती।"

कि तभी देवी माँ ने उसकी सुन ली बड़ी कोठी से रुदालियों का बुलावा आ गया बड़े मालिक परलोक सिधार गए थे।

ज्योत्सना सिंह

लखनऊ

है अब जाना । हरियाणा गौरव सुनील शर्मा ने तरन्नुम में समा बांधा - वतन मेरा मुस्काता जब, मैं भी मुस्काता हूँ।
संचालन कर रहे ललित मोहन जोशी ने कहा - गम से रिश्ता अब भुलाया जायेगा। एक नया रिश्ता अब बनाया जायेगा।।
युवा दिलों की धड़कन अभिषेक मिश्रा ' अभि ' ने कहा- ये दिल्ली है दिलवालों की, न मेरी न, घरवालों की, संयोजन समिति के सदस्य और सुप्रसिद्ध रचनाकार ऋषि मौर्य ने कहा - मोहब्बत करने वाले जाल नहीं बिछाते, जमशेदपुर से आई संजुला सिंह ' संजू ' ने नारी रूप को इस तरह बताया - नारी कोमल है निर्मला, नारी अबला नहीं अब है सबला, गुरूग्राम से आए व्यंगकार कृष्ण राघव ने व्यंग्य रचना से आहलादित किया, वैदिक प्रकाशन की प्रकाशिका, संपादिका और कवयित्री प्रशस्ति सचदेव ने सुमधुर भजन और कुसुम लता सिंह ने कजरी गाया, दिल्ली की चेतना गौतम ने मित्रता के संबंध में कहा - दोस्त दवा है, दुआ है। रितु रस्तोगी ने कहा - रोज लड़ती हूँ, जिंदगी में जिंदगी के लिए, कवि पवन मलहोत्रा ने राष्ट्र प्रेम में पढ़ा- मेरा भारत मेरी आन- बान - शान है, ठेठ मलिहाबादी लखनऊ से आए गिरराज किशोर शर्मा ने मित्रता पर मधुर आवाज में पढ़ा - मित्र बनने बनाने में बहुत कुछ सहना पड़ता है, ओज की कवयित्री कंचन वार्ष्णेय ने कहा - स्वतंत्रता दिवस मनाना है। खुशियों के गीत गाना है, दिल्ली से ही उमा जैन ने कविता सुनाई -दोस्ती दिल से करती हूँ, दिल से निभाती हूं, देश भक्ति को दयाराम खारवाल ने यूँ पढ़ा - मेरे लिए इस देश से ज्यादा बड़ा कोई नहीं। इसके अलावा इन साहित्यकारों की रचनाएं भी सराहनीय रहीं और तालियां बटोरी। जिनके नाम क्रमशः गुरूग्राम से अश्वनी यादव, अजमेर से अजय जैन, प्रमोद प्रजापति, वीरेंद्र बेधड़क, विवेक तिवारी, बुराड़ी से तरूण तरंग, जौनपुर से प्रवीण रंजन, गाजियाबाद से पी के शायर, फैज़ाबाद से सैयद बदरूद्दुजा, सुनीता कुमारी प्रसाद, निट्टू नैन, महेन्द्र सिंह, सेंटी अमरजीत, राकेश मोहन गुप्ता, क्रियेटिव अनलाक की प्रबंधक गिरिका बतरा , आदि-2 साहित्यकारों एवं श्रोताओं की सराहनीय उपस्थिति ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिया। समारोह का सफलता पूर्वक संचालन सुमन मोहिनी सलोनी और ललित जोशी ने संयुक्त रूप में किया।
संयोजक समिति के सदस्यों ललित मोहन जोशी, ऋषि मौर्य, अभिषेक मिश्रा अभि, गिरिराज किशोर शर्मा , तरुण तरंग एवं प्रायोजक हित प्रकाश कटारिया के कार्य की संस्थापकों सुमन मोहिनी सलोनी द्वारा सराहना की गई और बताया कि उनकी टीम एक जुट होकर इस कार्यक्रम की तैयारी में लगभग दो महीनों से लगी हुई थी तब जाकर इस कार्यक्रम को अपार सफलता हासिल हुई है । सलोनी जी का मानना है कि अकेले हम कुछ भी नहीं लेकिन एकजुट होकर हम मुश्किल से मुश्किल काम को भी अंजाम से सकते हैं उसी एकजुटता का स्वरूप इस कार्यक्रम में देखने को मिला ।

हाशिए पर खड़ा आदमी....

जिंदगी की लैंड स्लाइडिंग ,
की चपेट में आता है वह आदमी,
जो बस बना है मतदान के लिए।
वह रेल की जनरल बोगी में,
करता है यात्रा।
सरकारी योजनाओं के,
मोह के संवरण को छोड़ नहीं पाता।
दिनों दिन सरकारी कार्यालय में,
चक्कर लगाता रहता है।
उसकी फाइल चली जाती है।
न जाने कौन से पाताल लोक में।
जिंदगी की दौड़ में,
फिसड्डी रह गया वह आदमी।
परिवार वाले उसका मुंह ताकते हैं।
आदमी बगले झांकता है।
मर चुकी है उसकी,
आकांक्षा।
उसकी हड्डियां बजने लगी है।
हाशिए पर खड़ा आदमी,
जिंदगी की हवा को,
आते जाते देख रहा है।
उसके सरोकार का टूट गए,
उसके उन दोस्तों से।
जो चले गए क्रीमी लेयर के ऊपर।
वह गरीबी रेखा के नीचे ,
बस बसर कर रहा है।
सियासत में उसका जिक्र,
होता है बहुत जोरो से।
उसका उत्थान हीं सियासत का,
एजेंडा है।
उसकी सुध ली जाती है,
राजा बनाने के त्योहार पर,
जैसे वलि के प्राणी की,
मनुहार की जाती है।
छोटे बच्चों की तरह,
वह गौरांवित है।
अपने महत्व पर।
वह भूल जाता है अपने,
स्व को।

- **ब्रह्मानंद गुप्ता ब्रह्मपाद**, हिंडौन सिटी राजस्थान

रामानुज 'अनुज' की साहित्यिक यायावरी

धरातल की यायावरी और भरतीय वाङ्मय में यायावरी ने रामानुज 'अनुज' को परकाया प्रवेश - सिद्धि प्रदान की है। वे पात्रों के अन्तस्तल में प्रवेश कर संवेदना संसार के यायावर हो जाते हैं। यही कारण है कि वे सलिला गीत-संग्रह से गजल-हजल, व्यंग्य, कहानी के अपने साहित्य जगत के यायावर हो कर , आगे चलते जाते हैं, पीछे को मुड़ कर नहीं देखते हैं। वे आगे बढ़ते हुए अपने ही रचना संसार में परिभ्रमण करने लगते हैं, फिर आगे बढ़ जाते हैं। इस क्रम में वे सीमित से असीमित की ओर बढ़ते हैं । अतः गीतानुक्रम से वे उपन्यास में पहुँच गये हैं, जहाँ वे अव्याहत-गति से यायावरी कर रहे हैं। जूजू,मैं मौली (तीन खंड) कैसी चाहत, झुके हुए लोग, मंगला, अपुन पेट बोल रये हैं, जमूरा, गेल्हा, वनराज (पाँच खण्ड) मृणालिनी, गौरी, मालिनी, अंजली और भी अनेक के साथ वे हिन्दी से बघेली में प्रवेश कर गये हैं, और मनगिरिया उसी का परिणाम है। 'अनुज' की साहित्यिक यायावरी में भी मानवीय संवेदना

और प्रकृति के नित नूतन परिवर्तन वाले विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं।

'अनज' सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले साहित्यकार है। उनके उपन्यास विद्रूपताओं और कुत्सित कर्मों के बीच से सहृदयता, शुभ चिंतन और कर्म ढूंढ़ लेते हैं। मानवता- विरोधियों, कुकर्मियों को वे शुभ चिन्तन-कर्म की ओर मोड़ देते हैं। अबला मानी जाने वाली मातृशक्ति को अत्यंत शक्तिशाली बना दे ते हैं, औ नामर्दी को भी मर्दानगी से सम्पन्न कर देते हैं। 'मनगिरिया' बघेली उपन्यास भी इसी क्रम में अनुज की बढ़ती यायावरी का एक परिभ्रमण-स्थल है, जिसकी सृष्टि तीर्थराज प्रयाग से होती है। सतना जिले के धारकुंडी तीर्थ स्थल के पास से उपजे पात्रों की यह भावना और क्रिया प्रयाग में तथा अंततः हरिद्वार में अपना लक्ष्य पाती है। मनगिरिया, जो बलात्कार का शिकार हुई है, जिसके एक छोटी बच्ची भी है, उसी के गांव के बाबा करनदास का संरक्षण प्राप्त कर अवसाद से उबर जाती है और जिजीविषा-संपन्न हो जाती है। करनदास के गुरु बाबा गोकुल दास का स्नेह तो लगता है दीनानाथ, दीनबन्धु श्री हरि के स्नेह से कमतर नहीं है। डाकुओं कुकर्मियों, समाज द्वारा ठुकराई गई पवित्र किन्तु तथा कथित पतिता नारियों के उद्धार और समाज की मूल धारा में उन्नत सिर होकर रहने की परिस्थिति एवं प्रक्रिया जो 'मनगिरिया' में है, अत्यन्त दुर्लभ है। गावों में प्रेमभाव से जिस प्रकार द्रोपदी को द्रोपदा, चौरसिया को चौरासा, मनकुमरी को मनकुमरा, सुकुली को सुकला कहते हैं, उसी तर्ज पर गोकुलदास महाराज ने 'मनगिरिया' को 'मनगीरा'

नाम दिया है, और उसे पुत्री मानने लगे है।

डॉ० अभयराज त्रिपाठी कृत 'कुटी केर महराज' जो बघेली का प्रथम प्रकाशित उपन्यास था के पश्चात 'मनगिरिया' द्वितीय प्रकशित उपन्यास है। हो सकता है कुछ साहित्यकार और लिखे हों या लिख रहे हों किंतु अभी तक के बघेली साहित्य में यह द्वितीय प्रकशित उपन्यास है जो अपनी प्रेरणा से अनेक बघेली उपन्यासों की हरित पंक्ति खड़ी कर देगा।

'मनगिरिया' की कथावस्तु धारकुंडी के निकट कोठार से प्रयागराज और हरिद्वार तक की है किंतु इसमें पूरा बघेलखंड समाया हुआ है। यहां (रीवा, सतना,सीधी, शहडोल समासतः पूरा बघेलखंड) की रीति-रिवाज सामाजिक विद्रूपताओं और सौमनस्य तथा नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर अग्रसर विचारों - क्रियाओं से उपन्यास को आढ्य किया गया है उपन्यास में जैसा होना चाहिए पात्रों के मुख से व्यावहारिक ज्ञान की दुर्लभ बातें कहलबाई गई है। यह एक सपाट एवं सत्वर गति से चलने वाली लम्बी कहानी नहीं है, वल्कि एक उपन्यास है जो औपन्यासिकता की दृष्टि से बघेली में प्रथम स्थान का पात्र है मैने पूरे उपन्यास का अध्ययन किया है।(फोन में अनुज द्वारा पी.डी.एफ उपलब्ध कराने पर)और पाया कि यह अनुज के हिंदी उपन्यासों से कमतर नही है, भले ही वस्तु ग्राम्यांचल की हो और इसमें कुछ पात्र कम विदग्ध हों।

रामानुज अनुज चूंकि निरंतर अपने साम्राज्य के यायावर हैं, उनको परकाया-प्रवेश की सिद्धि प्राप्त है वे सहज स्वरूप में भी लगता है कि कहीं चिंतन - जागत में भ्रमण कर रहे हैं, अतः वे जो कुछ लिखते है अनुकरणीय-अनुसरणीय होता है।

'मनगिरिया' की शैली सरल एवं बोधगम्य है कथानक इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि लगता है सब का सब देखा सुना है। बघेली उपन्यास होने पर भी पात्रानुकूल शुद्ध हिंदी हिंदुस्तानी, खिचड़ी हिंदी और बघेली का प्रयोग किया गया है जिससे वस्तु अधिक सार्थक हो गई है।

कोई भी व्यक्ति जन्म से न तो अपराधी होता और न कुत्सित कर्मी, परिस्थितियां उसको विद्रूप बना देती हैं। पुनः अगर अनुकूल परिस्थितियां बन जाएं तो 'सुरजन'- से सभी डाकू भी रत्नाकर से वाल्मीकि हो सकते हैं। नकारात्मकता में सकारात्मकता , निर्बलता में सबलता, कुटिलता में सुमनता का अन्वेषण कर उसे सही सरणि देना ही 'मनगिरिया' का लक्ष्य है । रामानुज 'अनुज' इसी तरह अपनी साहित्यिक यायावरी में सौ वर्षों की आयु तक रत रहें यही शुभाशीष है।

डॉ. अमोल बटरोही

रतहरा,रीवा

हिंदी दिवस

अरे वाह हिंदी बहन आज तो तुम बहुत बढिया बनारसी साड़ी में सज धज कर निकली हो .... कहाँ जा रही हो

इंग्लिश बहन तुम्हें शायद याद नहीं , आज हिंदी दिवस है 14 .. सितंबर ... देश भर में हिंदी दिवस मनाया जा रहा है . जगह जगह कार्यक्रम होते हैं और मुझे सम्मानित किया जाता है . मेरी आत्मा खुश हो जाती है . यदि तुम्हें मेरा सम्मान देख कर खुशी होती है , तो आज मेरे साथ चलो बहन...

जरूर जरूर बहन तुम्हारा मान सम्मान देख मुझे बहुत अच्छा लगेगा . वह दोनों एक जाने माने अँग्रेजी स्कूल में पहुँच गईं . वहाँ स्टेज पर बड़ा से बोर्ड पर लिखा था ,टु डे इज हिंदी डे 14 सेप्टेम्बर हिंदी की आँखों से अपनी दुर्दशा देखकर आँसू निकल आये थे . चेहरे पर गहरी उदासी छा गई. तभी मुख्य अतिथि स्टेज पर आये . वह बोर्ड की तरफ देख कर बोले , माई डियर फ्रेंड्स .... गुड मॉर्निंग ... टुडे वी आर सेलीब्रेटिंग हिंदी डे 14 सेप्टेम्बर ... आई फील प्राउड फॉर हिंदी .... बच्चों ने तालियाँ बजाई इतना सुनते ही इंग्लिश बहन बोली , हिंदी बहन , तुम तो कह रहीं थीं कि मेरा आज बहुत मान सम्मान होता है लेकिन यहाँ तो सब इंग्लिश में बोल रहे हैं . यहाँ तो साफ साफ तुम्हारा अपमान और मेरा सम्मान हो रहा है . हिंदी बहन मैं तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहती लेकिन यदि इस तरह से मेरा अपमान किया जाता तो मैं यहाँ एक मिनट भी नहीं रुकती . ऐसा सुनते ही हिंदी फफक फफक कर रोने लगी . अपने आँसू पोछते हुये बोली , सच कह रही हो बहन ... मुझे अपनों ने ही ज्यादा अपमानित किया है . हमेशा तुम्हें मेरे ऊपर आसन देकर बैठाया है . इसमे गलती तुम्हारी कतई नहीं है वरन् मेरे अपनों की है . अपनों के द्वारा किया गया अपमान ज्यादा कष्टकारी और असहनीय होता है. मैं अब यहाँ एक पल के लिये भी नहीं रुक सकती . रोती बिलखती हिंदी के पीछे पीछे इंग्लिश भी वहाँ से चल दी . हिंदी बहन तुम रो नहीं ... तुम तो राष्ट्र भाषा पद पर सुशोभित हो . दुनिया में तुम्हारा बहुत मान सम्मान बढ रहा है . भगवान् के यहाँ देर है अंधेर नहीं .... कहते हैं कि घूरे के भी दिन कभी न कभी फिर जाते हैं . तुम तो बहुत समृद्ध और सरल हो ... तुमको जल्दी ही तुम्हारा मान सम्मान मिलेगा . हिंदी का अपमान करने वालों को भारत में रहने का हक भी नहीं बनता . इंग्लिश बहन की यह बातें सुन हिंदी भावुक हो उठी और वह सुबकते हुये उसके गले लग गई .

पद्मा अग्रवाल

‘डाक चौपाल’ पर जारी किया विशेष आवरण एवं विरूपण

डाक विभाग द्वारा आवश्यक सरकारी और नागरिक-केंद्रित सेवाओं को जन-जन तक पहुँचाने हेतु हर जिले में 'डाक चौपाल' का आयोजन किया जा रहा है। गुजरात में ‘डाक चौपाल’ के प्रति लोगों को जागरूक और प्रेरित करने के उद्देश्य से गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल द्वारा नया सचिवालय, स्वर्णिम संकुल, गांधीनगर में ‘डाक चौपाल’ पर एक विशेष आवरण एवं विरूपण जारी किया गया। अहमदाबाद मुख्यालय परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव और गांधीनगर मंडल के प्रवर अधीक्षक डाकघर श्री पियूष रजक भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल ने 'डाक चौपाल' अभियान की सराहना करते हुए कहा कि डाक चौपाल जनमानस और सरकारी कार्यों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में काम करेंगे, जिससे दूरी और पहुँच जैसी बाधाएँ कम होंगी। माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में डाक विभाग की भूमिका में तमाम सकारात्मक बदलाव आये हैं। ऐसे में, इस पहल का उद्देश्य आवश्यक सरकारी और नागरिक-केंद्रित सेवाओं को समाज के अंतिम छोर तक ले जाना है, जिसका फायदा गुजरात की जनता और सभी लाभार्थियों को मिलेगा। केंद्रीय सेवाओं के साथ-साथ राज्य स्तर की विभिन्न सामाजिक एवं कल्याणकारी योजनाओं का लाभ भी एक छत के नीचे प्राप्त हो सकेगा।

अहमदाबाद मुख्यालय परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि 15 अगस्त को हर डाकघर में स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा फहराने के साथ ही 'डाक चौपाल' के माध्यम से सरकार की तमाम जनकल्याणकारी योजनाओं और इनके लाभों के प्रति लोगों को जागरूक किया जायेगा। डिजिटल इण्डिया, वित्तीय समावेशन और अंत्योदय की संकल्पना से समाज के अंतिम व्यक्ति को जोड़ने हेतु गुजरात में विभिन्न जगहों पर डाक चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। इनमें ‘सरकारी सेवाएँ आपके द्वार’ के तहत वित्तीय सेवायें, बीमा, पेमेन्ट्स बैंक सेवायें, डीबीटी, ई कॉमर्स और निर्यात सेवाएँ सहित तमाम नागरिक केंद्रित सेवाओं के प्रति जागरूकता के साथ लोगों को जोड़ा जा रहा है।

एम. एम. शेख. सहायक निदेशक (व्यवसाय विकास) कार्या. पोस्टमास्टर जनरल अहमदाबाद मुख्यालय परिक्षेत्र

अहमदाबाद -380004

शक्ति

मंदिर से भगवान की बारात निकलने वाली थी।

"अरे .. अरे जब तुम औरतों से वजनी काम होता नहीं तो फिर करती क्यों हो? समूह के सारे लोग निकल पड़े और तुम चारों नई दुल्हनिया जैसे डेग डाल रही हो। जल्दी - जल्दी चलो।" संचालक मंगरूआ ने चिल्लाते हुए कहा।

अपनी बेबसी और लाचारी के कारण फुलवा सर पर रौशनी का बोझ उठाए बाकि औरतों के साथ चलने लगी। उनका संचालक मंगरूआ रोज की तरह आज भी उससे छेड़खानी करने से बाज नहीं आया।

" तुझे ऐसे काम करते देख बिलकुल अच्छा नहीं लगता। जाने तू क्यूं इतना कष्ट उठाती है? मेरे साथ एक रात बिता ले तुझे मालामाल कर दूंगा।"

बच्चे की बीमारी, सर पर लाखों का कर्जा, रौशनी की तीव्र गर्मी और ऊपर से मंगरूआ की गंदी बातों से फुलवा के अंदर शक्ति का तीव्र संचार हुआ और उसने अपने सर से रौशनी को उठाकर मंगरूआ के ऊपर पूरी ताकत से फेंककर मारा।

मंगरूआ जलन और कांच के टुकड़ों से घायल होकर चिल्लाने लगा और फुलवा क्रोध से कांपने लगी। शोर सुनकर सड़क पर जाते हुए लोग इकट्ठे हो गए।

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं साहब आज मां दुर्गा ने एक राक्षस को सबक सिखाया है।" तीनों स्त्रियां एक साथ बोल पड़ी और विजय गान गाते हुए मंदिर की ओर बढ़ चली।

प्रगति त्रिपाठी

बैंगलुरू

पंच प्रस्थान

रामलाल लोहार की बेटी एक निषाद जाति के लड़के के साथ भाग गयी। गांव में हंगामा हुआ, मारने-काटने की बात हुई, और धीरे-धीरे मामला शांत भी हो गया।

स्थिति सामान्य होते ही प्रेमी जोड़ा गांव आ गया। अब रामलाल की लड़की अपने निषाद प्रेमी अर्थात पति के साथ गांव में ही रहने लगी।

गांव में कांड और गांव में आकर रहना छाती पर मूंग दलने से कम न था।

एक दिन कुछ इज्जतदार लोगों ने पंचायत बुलायी। पंचों ने रामलाल को ऐसे कोसा कि वह इज्जत के लिए मरने या मारने को विकल हो उठा। घर के अंदर गया। एक हाथ में गड़ांस और एक हाथ में कागज का एक टुकड़ा लेकर बाहर आया। पंचों से बोला- मैं अभी जाके अपनी बेटी और उस मल्लाह के लड़के को इस गड़ांस से काट देता हूँ लेकिन आप सभी इज्जतदार लोगों से विनती है कि इस कागज पर लिखकर दीजिए कि मेरे जेल जाने के बाद मेरे परिवार का भरण-पोषण आपलोग करेंगे।

सभा खामोश थी।

धीरे-धीरे पंच लोग बिना कुछ कहे प्रस्थान करने लगे।

दीपक कुमार

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

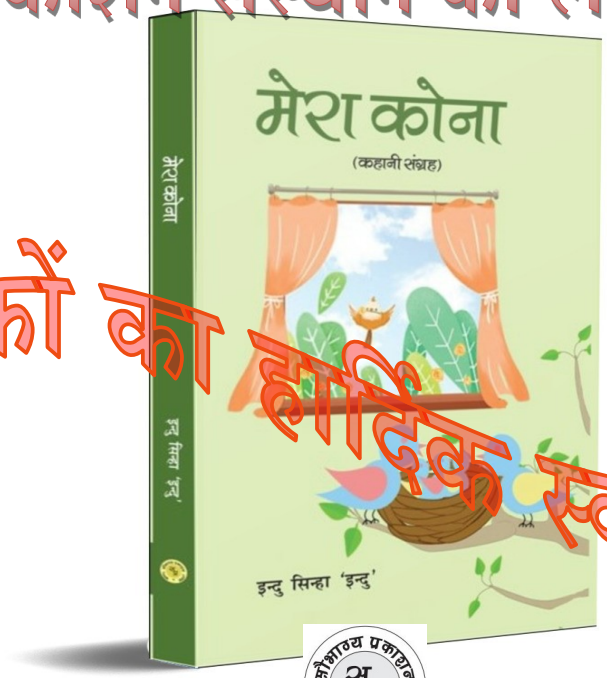

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)

Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'

ISBN : 978-81-958985-1-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250/-

Genre : Prose /गद्य

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-9-4**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 208

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

(लघुकथा)

ए. सी.

वह सरकारी अस्पताल में डाक्टर हैं। अच्छी आय है मगर उनकी पत्नी और बच्चे उनसे नाराज़ हैं, कारण है ए.सी.।पत्नी का कहना था कि इतनी भयंकर गर्मी पड़ रही है, आप तो दिनभर ए.सी.का आनंद ले रहे हो और हम सारा दिन पंखों की गर्म हवा खा रहे हैं। बच्चे भी तुनक कर बोलते कि आजकल लोगों के घरों में दो-तीन ए.सी. होना तो आम बात है, हमारे यहाँ कम से कम एक तो हो।

उनके घनिष्ठ डाक्टर मित्र भी समझा-समझाकर कर थक गये मगर डाक्टर साहब की पच्चीस-तीस हजार

खर्च करने की हिम्मत ही नही पड़ रही थी।

एक दिन वही डाक्टर मित्र जब उनके घर आये तो हैरान रह गये। ठंडे कमरे में परिवार संग बैठकर वह कहकहे लगा रहे थे। डाक्टर मित्र की नज़र जैसे ही दीवार पर लगे ए.सी.पर लिखे अस्पताल के नाम पर गयी वह उछल पड़े, चिल्लाकर बोले, 'यह क्या किया तूने? अस्पताल का, वह भी शवगृह का ए.सी.तूने अपने घर में लगवा लिया? होश है तुझे कोई शिकायत कर देगा तो कितना हल्ला मचेगा...?'

डाक्टर बोला, "नहीं मचेगा।"

"क्यों नहीं मचेगा?"

"इसलिए क्योंकि मुर्दे न तो शिकायत करते हैं और न ही हल्ला मचाते हैं।"

सुमन ओबेरॉय

ग़ज़ल

जिंदगी थी नर्क तब तक, देख के जख्म रोते थे।
दोस्ती दर्द से कर ली, मजा जीने में फिर आया।

चाह थी आम खाएंगे, मगर बोया बबूल था।
समझ में आ गया अब तो, जो बोया था, वही पाया।

हुआ वीरान सा जीवन, थी जब तक ऐंठ अपने में।
किया जब प्यार लोगों से, लगा ऋतुराज है आया।

रहे माया के चक्कर में, मिली ना शांति तब तक,
सुकूं पाया ये जाना जब, महाठगनी है ये माया।

सदा रोते रहे तब तक,जो समझा तन विनय अपना।
मजे में हैं यूँ जाना जब, कि नश्वर है कलित काया।

विनय बंसल, आगरा

9458060262

ग़ज़ल

सफर ये ज़िंदगी का है जहाँ चलना ही मुश्किल है
बनो फौलाद गर हो काँच तो बचना ही मुश्किल है

हज़ारों मील की दूरी बहुत आसान तय करना
मगर दुखते दिलों में पैठना उतना ही मुश्किल है

उधर से आ रहे हैं लोग बढ़ते जा रहे हैं सब
ठहरकर बात क्या होगी? नज़र मिलना ही मुश्किल है

कहो तो चोट तुमने दी जताते सबसे फिरते हो
यहाँ इस दौर में मासूमियत चलना ही मुश्किल है

किसीकी बेबसी को कौन कैसे जान सकता है?
सभी हैं द्वीप दूरी पाटकर जुड़ना ही मुश्किल है

कि ऐसे ही उतरते हैं नहीं ये शब्द अंतर में
न हो धड़कन सृजन में तो असर होना ही मुश्किल

अंजना वर्मा

ग़ज़ल

जागे बिना रातों को समझे कौन क्या है जागना
जब ख़्याल सोने ही न दें मुमकिन न होता टालना

कैसे खुले ही रह गए दरवाज़े दिल के रात-दिन
अब दर्द आकर बस गया हर रोज़ उससे सामना

पूरी करोगे रस्म तो दुनिया रहेगी ख़ुश सदा
होना ही दिखता है छुपी रहती है दिल में भावना

इतना धड़कता दिल मिला बेचैन तो होना ही था
बहते गए दरिया बने आसां नहीं है बाँधना

देखो ख़ुदा जो रूठ जाए मान भी तो जाएगा
इंसान का दिल टूटकर जुड़ता नहीं है जानना

हर चीज़ है बदली हुई ना रंग वो ना रूप है
अच्छा लगा करता बहुत बीते दिनों में झाँकना

सच्चा सुख़नवर तोड़ता है फूल किसके बाग़ से
शब्दों की खेती में जलाता दिल यही है साधना

अंजना वर्मा

घास और घोड़ा

हरिया चौकीदार हो गया

झूम रहा है टोला सारा
मानो थानेदार हो गया

ठाकुर साहब की बलिहारी
लगा हाथ में ओहदा भारी
सुनकर कान निहाल हो गये
हरिया नौकर है सरकारी

छूट गया है मामूलीपन
मनई जिम्मेदार हो गया

वर्दी जूता नया मिलेगा
चूल्हा दूनो जून जलेगा
चटख लाल पगड़ी के दम पर
अब घूरे का पेड़ फलेगा

थाने की रंगत में ढलकर
कल का मूस बिलार हो गया

जब से आई नई लुगाई
हरिया की किस्मत फरियाई
पढ़ना लिखना सीख गया है
अब ये नई नौकरी पाई

मूँछ ऐंठ कर नये सिरे से
जीने को तैयार हो गया

नये रंग में रंग जायेगा
घोड़ा हो कर दिखलायेगा
नाम कटा जिस घास फूस से
उसी घास को खुद खायेगा

सुख दुःख संग जीने वाले का
अब अपना घर बार हो गया

सूर्य प्रकाश मिश्र

दुर्गेश के दोहे

1) फर्ज़ बड़ा है कर्ज़ से, इतना ले तू मान।
रह जाए सब कुछ धरा, तज झूठा अभिमान।।

2) अपना-अपना फर्ज़ है, अपना-अपना काम।
सबको अपने कर्म से, मिलती है पहचान।।

3) आन बान से है बड़ा, सब पूतों पर कर्ज़।
बलिहारी हों मात पर, इतना सबका फर्ज़।।

4) सरहद पर सैनिक डटे, कर बाधाएं पार।
डर के आगे जीत है, सब सारों का सार।।

5). डर का अपना दाव है, भय का अपना भाव।
पलक झपकते ही करे, मन में गहरा घाव।।

6) आजादी के बाद सब, भूल गए आजाद।
क्योंकर मतलब में घिरे, सैंतालिस के बाद।

7) दिन सावन के हैं सभी, पावन अरु अति खास।
शिव शंकर के नाम से, कट जाते सब पाश।

8). मन चंगा कर लीजिए, गुरुओं का आशीष।
पल-पल पद बढ़ने लगे, मानो कोई महिष।

9) गुरू वंदना कीजिए, चरण लगाकर शीश।
तजकर सब दुर्भावना, ले लेना आशीष।

विनोद वर्मा दुर्गेश,

तोशाम, जिला भिवानी,

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-9-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 188
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

मिस कॉल....

(कहानी)

अशोक दर्द

रात के दस बज गए थे। दिसंबर की ठंडी रात पहाड़ों में लोग इतनी देर तक नहीं जागते खासकर गांवों में दिन भर की मेहनत मजदूरी के बाद थक कर जल्दी सोने की आदत अक्सर हर घर में देखी जा सकती है। गांव में दस-बारह घर थे। पहाड़ के टीले का यह गांव भी अब थक कर सो गया था। सभी घरों की बतियां बुझ गई थीं। बाहर कड़ाके की सर्दी थी। बर्फीली चोटियों को छूकर आती ठंडी हवा अंदर तक चीर जाती थी। फुलमु बरामदे में आकर रास्ते की तरफ देखती किसनु का कहीं कोई नामोनिशान नजर नहीं आ रहा था। वह दूर तक देखती कहीं टॉर्च की रोशनी नहीं दिखती थी क्योंकि वह अक्सर रोज ही तो लेट खा पीकर आता और आकर खूब हुड़दंग मचाता। टॉर्च तो उसके झोले में अक्सर रहती क्योंकि उसे बाजार में खाते पीते अक्सर आधी रात जो हो जाती थी। बच्चे सुरेंद्र और जितेंद्र जो क्रमशः नौ और छः वर्ष के थे कमरे में निश्चिंत सोए थे। सुरेंद्र चौथी में पढ़ता था जबकि जितेंद्र अभी पहली कक्षा में था। दोनों बच्चे अपनी मस्ती में सोए थे मां की बेचैनी से बिलकुल बेखबर बेचैन फुल मु थोड़ी थोड़ी देर बाद बाहर बरामदे में आकर रास्ते की ओर देखती परंतु फिर निराश होकर भीतर चूल्हे पर जा बैठती। चूल्हे में आग सुलग रही थी और फूलमु के भीतर भी। वह उसकी रोज-रोज की इस आदत से तंग आ गई थी। परंतु जब वह बच्चों की तरफ देखती तो उसके कदम दहलीज के भीतर जैसे ठिठक जाते वह स्वयं को संभालती और फिर अपनी गृहस्थी के सुखद सपनों में खो जाती। वह सोचती किस जन्म के पाप थे कि उसे ऐसा हमसफर मिला जिसे ना तो बच्चों की परवाह थी और ना उसकी। सुबह सबसे पहले उठ जाती और गौशाला में गोबर उठाती पशुओं को दुहती और घास डालती फिर चूल्हा जलाती रोटियां बनाती और बच्चों को त्यार करके स्कूल भेजती और किशनु के थैले में रोटी का टिफिन डालकर फिर उसकी अगली दिनचर्या शुरू हो जाती। किशनु और बच्चों के चले जाने के बाद वह घर की साफ सफाई करती कपड़े धोती और फिर पशुओं को लेकर घासनियों की ओर चल देती वहां जाकर पशुओं को चराने के साथ साथ कभी घास काट कर लाती तो कभी अपने वजन से ज्यादा लकड़ियों का गट्ठर सिर पर उठाए घर पहुंचती। फिर बच्चों को स्कूल से आते ही संभालती उन्हें खिलाती पिलाती और फिर शाम के काम में पशुओं को दुहती उन्हें घास डालती पानी पिलाती और फिर रात का खाना तैयार करती। इस सारी दिनचर्या के दौरान उसे पल भर का विश्राम नहीं मिलता और अब आधी रात गए तक इस शराबी का इंतजार। अगर सो गई तो वह फिर रोटी के लिए झगड़ा करेगा बस यही सोच कर चूल्हे के पास सुलगती रहती। वह फिर उठकर बाहर गई।अब रात के ग्यारह बज रहे थे दूर रास्ते की तरफ देखा तो टार्च

की रोशनी धीमे-धीमे गांव की ओर आती हुई दिखी। घनघोर अंधेरे में चमकती रोशनी देखकर उसे थोड़ा सुखद एहसास हुआ आ गया तो रोटी खिला कर सो जाऊंगी। दिन भर की थकान से वदन में पीड़ा होने लगी थी। उसने चूल्हे की आग अंदर आकर और सुलगा दी और साग और मक्की की रोटियां गर्म करने लगी। चूहे के पीछे पतीले में रखा पानी हाथ लगा कर देखा तो ठंडा हो गया था उसे गर्म करने के लिए फिर उसने उसे चूल्हे पर चढ़ा दिया ताकि किशनु गर्म पानी से हाथ पांव धो सके।गर्म पानी से हाथ पाव धोकर उसकी थकान भी उतर जाएगी। अब वह उसके इंतजार में अपने सारे काम को रेडी कर चुकी थी। तभी बाहर दरवाजे पर उसके आने की आहट हुई वह लड़खड़ाता हुआ धीरे धीरे चूल्हे की ओर आने लगा फुलमु ने उसे घूर कर प्यार से देखा और डांटने के अंदाज में बोली आज तू फिर पीकर आ गया ? किशनु चुप रहा जैसे उसने सुना ही नहीं। उसने चूल्हे पर रखे पतीले से गरम पानी तसले में उड़ेल कर हाथ पांव धोने के लिए तसला किसनु की तरफ सरका दिया। किशनु ने गर्म पानी से हाथ धोए तो फुलमु ने गर्म साग थाली में डालकर ऊपर गर्म देसी घी का चम्मच उड़ेल कर मक्की की रोटियां व साग की थाली उसकी ओर बढ़ा दी। किसनु के इंतजार में उसने भी रोटी नहीं खाई थी।किसनु जैसे ही रोटी खाने लगा तो फुलमु ने भी अपने लिए रोटी डाली।अभी उसने दो तीन कौर ही मुंह में डाले थे कि चूल्हे पर रखे फुलमु के फोन की घंटी बजी। वह उठाने ही लगी थी कि फोन बंद हो गया। उसने देखा कोई नया नंबर था जिससे मिस कॉल लगी थी। उसने फोन वापिस चूल्हे की बगल में रख दिया।किशनु तो यूं भी नशे में था। अब वह मिस कॉल सुनकर तिलमिला उठा था। किसका फोन है वह गुस्से से बोला - फुलमु ने कहा- पता नहीं कोई नया नंबर है। आप खुद ही कर लो और पूछ लो कौन है ? तेरा यार होगा कोई ? आधी रात को तेरी याद आ गई होगी। और फिर उसने एक भद्दी सी गाली फुलमु को देते हुए खाने की थाली एक और पटक दी। दोनों में झगड़ा बढ़ गया। किशनु ने भद्दी गालियों के साथ साथ उसे पीटना भी शुरू कर दिया। वह बेचारी रोए जा रही थी।आधी रात को अब किसे कहे कि उसे इस राक्षस से छुड़ाए। आसपास के लोग तो सोए हुए थे।उसने हिम्मत करके अपने भाई को फोन लगा दिया और रोते-रोते बोली कि मुझे बचा लो नहीं तो यह मुझे आज मार देगा।भाई ने रोती हुई बहन सुनी तो विचलित हो उठा। उसने थाने में फोन करके सारी स्थिति से अवगत करवा दिया। अभी उनका झगड़ा चालू ही था की पुलिस गाड़ी लेकर किसनु के घर पहुंच गई। पुलिस दोनों को अपने साथ थाने ले आई और तब तक आस पड़ोस वाले भी जाग गए थे।पड़ोसियों ने बच्चे संभाल लिए अपने घर सुला लिए। उधर मायके वाले भी थाने पहुंच गए। आधी रात उतर चुकी थी।दिन भर की थकान फिर पति की मार और अब थाने की परेशानी। किशनु को देखकर थानेदार ने घूरते हुए कहा - ज्यादा शराब चढ़ी है क्या उतारते हैं तेरी शराब।औरत पर मर्दानगी दिखाता है साले। फिर एक भद्दी सी गाली देते हुए थानेदार ने सिपाही को कहा - ले जाओ इसे अंदर और जरा इसकी गर्मी उतारो। सिपाही उसे अंदर कमरे में ले गया।थानेदार ने फूलमु के मुंह पर पड़े नीले निशानों को देखते हुए कहा -क्यों हुआ आपका झगड़ा पूरी बात सच सच बताओ ?उसने सुबकते हुए सारी घटना जिसमें मिस कॉल का बहाना लेकर किशनु ने उस पर हाथ उठाया था कह सुनाई। उसने बताया मुझे नहीं पता यह किसकी मिस कॉल थी ? थानेदार ने मिस कॉल का नंबर लेकर सिपाही को फोन लगाने के लिए कहा। सिपाही ने फोन लगाया तो वह यू .पी. के किसी बुजुर्ग का नंबर था जो अपने बेटे को फोन लगा रहा था परंतु एक डिजिट गलत लगने के कारण मिस कॉल लग गई थी।जब उसे यह भान हुआ कि गलत नंबर लग गया है

तो तुरंत उसने फोन काट दिया। यह सारी बात उस बुजुर्ग ने सिपाही से कही। उस बेचारे को क्या पता कि उसकी इस मिस कॉल से किसी के घर में भूचाल आ जाएगा। थानेदार ने सिपाही से पूरी बात सुनी और अब उसे सच्चाई का पता लग चुका था। थानेदार खुद अब कमरे में गया और फिर किशनु की जैसे ही सेवा शुरू की उसकी चीखें और चटक चटक की आवाजें बाहर सुनाई देने लगी। औरत के अंदर कितनी ममता होती है उसकी चीखों और चटक चटक की आवाजों से उसके कलेजे पर छुरियां चलने लगी। वह अपने चेहरे पर उभरे नीले निशान भूल गई। वह भूल गई थी कि थोड़ी देर पहले ही तो वह उसे इसी तरह पीट रहा था। उसने अपने भाई से कहा - इसे पीटने मत दो। इसे बचा लो। भाई ने कहा- उतरने दो इसकी गर्मी फिर आइंदा यह ऐसा नहीं करेगा। परंतु फुलमु तो रोए जा रही थी भाई ने एक बार फिर थानेदार से विनती की और किशनु को छोड़ देने के लिए कहा। थाने वालों ने राजीनामा लिखवाया और किशनु को छोड़ दिया। औरत भी कितने ही हिस्सों में बंटी होती है। अब राजीनामा तो हो गया किशनु ने माफी भी मांग ली। अब तक उसकी शराब भी उतर गई है। अब वह क्या करे ? छोटे-छोटे बच्चे घर में हैं।कहां जाए वह ? अंतर्द्वंद में फंस गई। तभी भाई ने कहा- चलो आज आप हमारे साथ घर चलो। मैं सुबह खुद आपको आपके ससुराल छोड़ आऊंगा ।और किसनु को कहा तुम घर चले जाओ। यह सुबह आ जाएगी।फिर न चाहते हुए भी फुलमु भाई के साथ चली गई। परंतु आज के इस पूरे घटनाक्रम ने उसे झकझोर कर रख दिया था। उसे अपने देह पर उभरे नीले निशानों की जरा भी पीड़ा नहीं थी। पीड़ा थी तो किसनु को थाने में पड़ी मार की। वह सोचती पता नहीं कितना मारा है उसे पुलिस ने।और फिर वह सब दृश्य थाने के जिसमें किसनु का रोना और चटक चटक की आवाज उसके कानों में गूंजती और फिर आंखों से आंसुओं की झड़ी लग जाती। वह स्वयं को कोसती क्यों मैंने भाई को फोन किया ? इसी कशमकश में उसने वह रात मायके में जागकर ही काट दी। उधर किसनु घर तो पहुंच गया परंतु उसे जो शर्मिंदगी महसूस हुई वह उसकी बर्दाश्त से बाहर थी। सुबह गांव वालों को क्या मुंह दिखाऊंगा ? और फिर फुलमु के सामने जो बेइज्जती हुई मार पड़ी उसके साथ कैसे नजरें मिलाउंगा। न जाने क्या क्या विचार मन में उठते गिरते रहे और फिर उसने गौशाला से घास बांधने की रस्सी लाकर स्वयं को कमरे में लटका लिया। सुबह जब पड़ोसी उसके बच्चे लेकर घर आए तो किशनु कमरे में टंगा हुआ झूल रहा था।उसके प्राण पंखेरू उड़ गए थे। किशनु के इस तरह आत्महत्या करने की खबर पूरे गांव में फैल गई।फुलमू को फोन करके तुरंत घर बुलाया गया। पुलिस आई और उसने अपनी कार्रवाई की। आत्महत्या का केस बना।अब फुलमु और उसके बच्चे अनाथ हो गए थे।फुलमु फूट फूटकर रोई। गांव में इस आत्महत्या का लोग अपने अपने ढंग से बखान करते और एक दूसरे के साथ कानाफूसी करते। कोई कहता फुलमु बदचलन थी तो कोई कहता किसनु ही गलत था। कुछ दिन तो किशनु के मरने के बाद सगे संबंधी आते जाते रहे। फिर सब इस हादसे को भूलकर अपनी अपनी दुनिया में रम गए। फुलमु अब भी बरामदे में खड़ी होकर आधी रात तक घुप अंधेरे में रास्ते की ओर ताकती रहती है। जिधर से उसके घर की ओर मुट्ठी भर रोशनी उसकी दहलीज तक आती थी।परंतु अब कोई रोशनी उसके घर की ओर नहीं आती। वह अपने छोटे-छोटे बच्चों को गले लगा कर सुबकती हुई रात काट लेती है।

डलहौजी चंबा हिमाचल प्रदेश

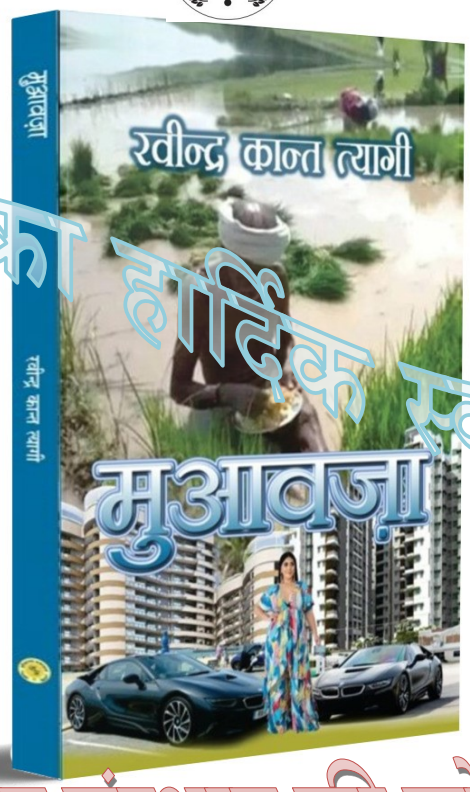

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिमाचल प्रदेश का जनजातीय समाज : एक विश्लेषण

छविन्दर शर्मा

भारत में अनेकों जनजातियां वर्तमान में ऐसे भौगोलिक क्षेत्र में निवास करती है जहां सभ्यता का प्रकाश नहीं पहुंचा है तथा वे संस्कृति प्रायः प्राचीनतम अवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। इन जनजातियों को आदिम समाज, आदिवासी, वन्य जाति, गिरिजन एवं अनुसूचित जनजाति की संज्ञा दी जाती है। ये तमाम जनजातियां भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधताओं के कारण अपनी विशिष्ट पहचान बनाये हुए हैं। यह समुदाय प्रकृति के मध्य रहकर प्रकृति से प्रेरणा लेकर अपनी लोक संस्कृति से जुड़े विविध पक्षों को अपनी कलात्मक समझ के अनुसार रंगों और रेखाओं के माध्यम से प्रकट करता रस है। भारत के अठारहवें राज्य के रूप में पंद्रह अप्रैल सन्1948 में अस्तित्व में आया हिमाचल में भिन्न-भिन्न जनजातियों के लोग निवास करते हैं। जनजातीय लोगों की जातियों पर यदि दृष्टिपात करें तो यहां अमूमन सात प्रमुख जनजातियां हैं जिनमें किन्नौर जनजाति, गुज्जर, लाहौली, गद्दी, स्वांगला, पंगवाल व खम्पा प्रमुख हैं।

हिमाचल प्रदेश की जनजातीय संस्कृति हमारी विशिष्ट धरोहर है। इस समुदाय की अपनी भिन्न कला एवं संस्कृति है। जनजातियों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक सरोकार आधुनिकता से दूर व आस्था के करीब है। इनका एक अलग संसार है जिसमें आस्था और विश्वास है। उन सबकी जड़ धर्म है। धार्मिक एवं सामाजिक परम्पराओं में बंधे पर्व और उत्सव जनजातीय जीवन का अभिन्न अंग है जो स्वतंत्र और समीरत रूप में प्रकट होते हैं। जनजातीय संस्कृति हरदम प्रकृति से जुड़ी हुई है और प्रकृति के सभी अंग जीवन के पंचतत्व जैसे धरती , आकाश, जल, अग्नि और वायु सदैव पूजनीय है। इसके अलावा वृक्ष, नदियां-नाले व पर्वत इत्यादि भी जनमानस में पूजनीय है।

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि नाम से जाना जाता है। देवभूमि हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र की लोकगीतों, लोक गाथाओं व लोक नाट्य की अपनी विशिष्ट पहचान है जो स्थानीय लोगों को अपने परिवेश की ओर आकर्षित करते हैं। मन्दिरों की काष्ठ कला हो या पर्वतीय घाटियां अपनी अनुपम छंटाए बिखेर कर पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। खेती बाड़ी, बागवानी यहां की अर्थव्यवस्था के मूल स्त्रोत है। यहां पर सतलुज, व्यास,रावी चंद्रभागा (चिनाव) व यमुना नदियों के संग छोटे बड़े नदी नाले मधुर ध्वनि से सराबोर होकर शान्ति प्रदान करते हैं। संस्कृति के विकास में धर्म दर्शन, ज्ञान विज्ञान, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है। यही हमारी संस्कृति व विरासत है। भौतिक उन्नति के साथ अभौतिक उन्नति की चेष्टा मन व मस्तिष्क को शान्ति प्रदान करती है। सृष्टि की रचना तथा

मानव जाति के उत्थान के साथ-साथ मानव मन में अपने आसपास की घटनाओं से सम्बन्ध रहा है और कालांतर में यही स्मृतियां लोक कथाएं बन गई। लोक कथाएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक परम्परा के रूप में प्रचलित है। इनमें लोक जीवन, लोक संस्कृति एवं लोक विश्वासों की अभिव्यक्ति होती है। समय परिवर्तन के अनुसार इनमें भी परिवर्तन होता रहता है तथा नूतन अंश इसमें जुड़ते रहते हैं और अब ये कथाएं अब लोक साहित्य के जिज्ञासुओं द्वारा लिपिबद्ध की जा रही है। प्रत्येक क्षेत्र के लोक में मौखिक परम्परा लिखित रूप में कथाकार की रचनाधर्मिता के अनुसार परिवर्तित होने लगी है।

जनजातीय क्षेत्रों में स्थानीय संस्कारों, विश्वासों, रीति-रिवाजों के अनुरूप चली है। यहां की कथाओं में प्रकृति के सुन्दर वर्णन संग भाषा शैली की दृष्टि से सुन्दर मुहावरों, लोकोक्तियों व स्थानीय शैली की रोचक रंगत देखने को मिलती हैं।

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र किन्नौर के सन्दर्भ में यदि विचार करें तो वहां की लोक संस्कृति में सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, चमत्कारिक, उपदेशात्मकता, नीति, मनोरंजक व हास्य कथाओं का समावेश है। इनके संरक्षण व संवर्धन में लेखकों, लोक कलाकारों, गायकों व कथाकारों का महत्वपूर्ण अभिदान रहा है। किन्नौर के लोग जब खेतों से थके मांदे घर पहुंचते हैं तो उनके मनोरंजन एवं परस्पर प्रेम और जीवन चर्या का साधन लोक कथाएं होती है। यहां शरद ऋतु में लोग एक साथ बैठकर हास्य एवं अलौकिक प्राकृतिक कथाओं से परस्पर मनोरंजन करते हैं। देवी देवताओं के लिए तमाम पूजा पाठ व धार्मिक उत्सव होते हैं जो विश्व प्रसिद्ध है। इसके साथ ही विभिन्न पर्वों एवं त्यौहारों में लोग पारम्परिक परिधान, खान-पान एवं लोक संगीत का आनन्द लेते हैं।

अमूमन जनजातीय लोक कथाओं का मानव जीवन संग घनिष्ठ सम्बन्ध है ,वो चाहे पौराणिक हो या वर्तमान देव कथाएं या ग्रामीण अंचल की कथाएं । किन्नौर में शीत ऋतु में लोग अलाव के पास बैठकर कथाएं सुनाते हैं। बुजुर्ग लोग अक्सर कथाएं सुनाते हुए मिलते हैं और नौजवान तथा बच्चे बड़े चाव से कथाएं सुनते हैं। ये कथाएं मनोरंजक देवी देवताओं सम्बन्धी, राजा-रानी पांडवों, भूत-प्रेत व परियों इत्यादि से सम्बन्धित होती है। इन कथाओं के बीच में खूब चर्चाएं व तर्क वितर्क होते हैं। नौजवान बुजुर्गों से प्रश्न पूछते हैं व अपनी जिज्ञासा पूर्ति करते हैं। इन कथाओं को सुनने से हमें स्वयं की संस्कृति व संस्कार को गहनता से समझने का सुअवसर प्राप्त होता है। इन कथाओं के साथ-साथ लोक कहावतों का भी विशेष महत्व है।

जनजातीय क्षेत्रों में शुमार व भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का जीवन्त दस्तावेज लाहौल-स्पीति अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत संग वहां की नैसर्गिक सुषमा पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। हालांकि यहां पर पहुंचना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं होता है। यह क्षेत्र सदियों से अपने स्वर्णिम इतिहास को सहेजे हुए हैं। साधना व आस्था के प्रतीक गोम्पा व मन्दिर विद्यमान है जिनमें कारदंग, शाशुर, गैमूर, तायूल व गुरु घण्टाल गोम्पा तथा मन्दिरों में उदयपुर का त्रिलोकी नाथ तथा मृकुला देवी मन्दिर शामिल हैं। वही हिमाचल प्रदेश की अजंता नाम से मशहूर ताबो मठ के अलावा 'कीह ' गोम्पा, ढंकर गोम्पा व कुगती गोम्पा विश्व प्रसिद्ध है। महर्षि पद्म संभव की तपोस्थली इस भूमि की अपनी दिव्यता है।

ईश्वर पर अटूट विश्वास रखने वाले लाहौल-स्पीति के वासियों की सादगी व उल्लास भरे जीवन की झलक यहां पर मनाये जाने वाले मेले एवं त्यौहारों में दिखाई देती है । इस घाटी में जनवरी से मार्च माह

तक हालड़ा,फागली व तथा गोची उत्सव जून-जुलाई में गौंदला, गैमूर व शांशुर में छेशू मेला तथा अगस्त माह में अनेक बड़े मेले होते हैं जिसमें प्रदेश के साथ-साथ देश विदेश से लोग शामिल होते हैं। दो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का मणि कंचन संयोग इस पावन धरा में देखने को मिलता है।

तकनीकी युग में विश्व में तमाम परिवर्तन हुए हैं और इस युग की धारा लाहौल-स्पीति में भी प्रवाहित हुई है। यहां पर अन्नदाताओं द्वारा आधुनिक कृषि संयंत्रों को अपनाया जा रहा है। ये लोग याक को खेतों में जोतकर खुदाई करते थे और आज याक का स्थान लोहे के बैल (ट्रैक्टर) ने ले लिया है। यहां पर आलू,मटर,कुठ,हाप्स व सब्जियों ने इस घाटी की तस्वीर ही परिवर्तित कर दी है। बहुचर्चित व बहुउपयोगी छरमा के उत्पादन ने इलाके को एक विशिष्ट पहचान दी है। जिस प्रकार से आधुनिक समाज में तमाम उत्सव व सामाजिक सम्मेलन होते रहते हैं उसी प्रकार जनजातीय समाज के भी अपने सामाजिक त्यौहार एवं मेले होते हैं। संस्कार व उत्सव समाज की धार्मिक आस्थाओं व मान्यताओं के प्रतिबिम्ब होते हैं। समाज जिस धर्म को अपनाता है वो संस्कारों व उत्सवों द्वारा प्रदर्शित होता है। समाज विशेष में जीवन मूल्य क्या रहे हैं उनका प्रादुर्भाव कैसा रहा है, ये हमें उस समाज के उत्सवों और मेलों के परीक्षण से स्पष्ट हो जाता है। समाज के तमाम वर्गों के लोगों का एक स्थान पर एकत्र होना और परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करना सह अस्तित्व की भावना को प्रेरित करता है। प्रत्येक उत्सव का सम्बन्ध किसी न किसी सुखद अनुभूति व उल्लास से होता है। मनुष्य परस्पर भेदभाव व विषमता को विस्मृत कर परस्पर गले लगाकर बधाईयां देते हैं और प्रेम भावना का सन्देश देते हैं।

जनजातीय क्षेत्र हिमाचल प्रदेश का दुर्गम जनपद चम्बा अपनी समृद्ध संस्कृति व विरासत के लिए प्रसिद्ध है। इसे देव भूमि या शिव भूमि नाम से जाना जाता है। यहां के लोक गीतों में शिव एक ओर कैलाश वासी और संकट हरने वाले हैं तो दूसरी ओर प्रसन्न मुद्रा में नृत्य करते हैं। यहां का मानस जीवन देव परम्पराओं के अनुसार ही चलता है। देव संस्कृति और लोक संस्कृति का मणि कंचन संयोग यहां दिखाई देता है जो इस जनपद की बहुमूल्य विरासत है। चम्बा जनपद के भरमौर वासी गद्दी समुदाय में आते हैं जो स्वयं को शिव भक्त मानते हैं। किंवदंती है कि शिव का वास यहां उतना ही पुरातन है जितना कि मानस जीवन।शिव गद्दी समुदाय के लोगों के रक्षक व आश्रयदाता है। यहां के लोगों का जन जीवन भगवान शिव की अनुकम्पा से ही चलता है या यूं कहें कि भगवान शिव में यहां के लोगों की अगाध श्रद्धा है। भरमौर क्षेत्र की पुरातन राजधानी ब्रह्मपुर में एक प्राचीन मणिमहेश मन्दिर है। इस मन्दिर के बाह्य स्थान पर नंदी के शिलालेख है जो मेरू वर्मन के समय के यानी आठवीं शताब्दी के मानें जाते हैं। शिव का वास मणिमहेश को माना जाता है और इसकी ऊंचाई करीब तेरह हजार फीट है। यहां पर हर वर्ष हजारों श्रद्धालु आते हैं और बाबा शिव के दर्शन करते हैं लेकिन इस स्थान पर पहुंचना स्वयं में किसी चुनौती से कम नहीं है और दूसरे यह यात्रा एक साहसिक यात्रा सदृश है। हर वर्ष ये मणिमहेश की छड़ी यात्रा होती है। चम्बा के प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मन्दिर के साधु लोग छड़ी लेकर इस यात्रा का शुभारंभ करते हैं और

मणिमहेश झील में सर्वप्रथम चेला स्नान करता है जो कि गद्दी विरादरी से होता है। इस पवित्र झील से पूर्व गौरी कुण्ड आता है जिसमें महिलाएं भी स्नान करके अपनी छड़ी यात्रा के लिए निकलती है। मान्यता है कि कैलाश से गौरी मैया यहां नित स्नान करने आती है।

यहां का प्रसिद्ध क्षेत्र पांगी भी अपनी नैसर्गिक सुषमा के लिए विश्व प्रसिद्ध है। जिस पर्वतीय श्रृंखला को पीर पंजाल कहते हैं सामान्यतः उसे पांगी घाटी श्रृंखला नाम से भी जाना जाता है। ये चम्बा जनपद को दो भागों में विभाजित करती है और ये विभाजन इतना सघन है कि दोनों हिस्सों का ग्रीष्म ऋतु में भी सम्पर्क नहीं हो पाता है। विभाजित क्षेत्र में छोटा उत्तरी खण्ड जिसे पांगी और लाहौल नाम से जाना जाता है, ये शेष विश्व से कट जाता है। पूर्वकाल में जनजातीय क्षेत्र पांगी राजनीतिक विरोधियों के लिए निर्वासन स्थल के रूप में प्रयोग किया जाता था। पांगी तहसील का मुख्यालय किलाड़ है। यहां की नैसर्गिक सुषमा भी हर किसी को यहां आने के लिए आकर्षित करती है। यहां पर तमाम तरह की वनस्पति पाई जाती है जिनमें चीड़, देवदार, चिलगोजा, भोजपत्र व बान इत्यादि। इनसे सुशोभित ये प्राकृतिक सौन्दर्य का मनोहारी दृश्य यहां निहारने को मिलता है। पांगी के मध्य चंद्रभागा अपने पूरे वेग से प्रवाहित होती है।यहां के लोग नदी की रेत को छानकर सोना निकालते हैं। इससे निर्मित सोने के गहने आज भी यहां लोगों के पास देखे जा सकते हैं। हालांकि अब लोग ये कार्य नहीं करते हैं। पांगी के लोगों को पंगवाल कहा जाता है और उनकी अधिष्ठात्री देवी मां भगवती मिन्धल वासनी है प्रतिवर्ष जून माह में जम्मू क्षेत्र से हजारों की तादाद में छड़ी यात्रा संग मां के दरबार में हाजिरी लगाते हैं और आशीर्वाद लेते हैं। इस जनपद में इसके अलावा भिन्न-भिन्न त्यौहार व उत्सव भी मनाये जाते हैं। ये मेले एवं त्यौहार ही हमारी संस्कृति के परिचायक है।

वास्तव में हिमाचल प्रदेश भारत वर्ष का एक दिव्य गिरि क्षेत्र है जिसे अपनी विविध संस्कृतियों और असाधारण मौसम के कारण पर्यटन आकर्षण का केन्द्र माना जाता है।प्रतिवर्ष यहां घुमने हेतु लाखों पर्यटक आते है । यहां के गगनचुंबी पर्वत बारह महीने बर्फ से आच्छादित रहते हैं और लगता है मानो ये रजत शिखर हो। इन दुर्गम स्थानों पर जीवन यापन करना कोई सुगम कार्य नहीं है और ये वही जनजातीय लोग हैं जो इनमें वास करते हैं।

ऐतिहासिक रूप से चम्बा, कुल्लू या लद्दाख के शासकों ने समग्र प्रबन्धन और राजस्व संग्रह के प्रयोजनार्थ क्षेत्र के तीन या चार उल्लेखनीय परिवारों को राणा, वज़ीर या ठाकुर की उपाधियां दी है। इन जनजातीय क्षेत्रों में प्रकृति के प्रत्येक तत्व पर्वत,वन, नदी, झरने, पेड़-पौधे,पशु-पक्षियों में परमसत्ता के अदृश्य रूप में विराजमान मानती है और प्रकृति की पूजा विशिष्ट अनुरागों द्वारा की जाती है। इस संस्कृति में उपादानों का अपना महत्व है। इन पर्वतीय क्षेत्रों में बहुमूल्य जड़ी बूटियां पाई जाती है और यदि हम इन जड़ी बूटियों को संजीवनी भी कहे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी चूंकि लोग अपने गौण इलाज फिलहाल इन्हीं जड़ी बूटियों से करते हैं। इनका गांव में कोई एक बुजुर्ग या कोई भी जानकार होता है जिसे वैद भी कहा जाता है और वही लोगों का इलाज इनसे करता है। अरण्यी जड़ी बूटियां या वनस्पतियां न केवल जनजातीय लोगों के लिए ही अपरिहार्य है बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अनुपम वरदान है। हमारे हर एक अनुष्ठान व यज्ञों में वनस्पति का होना अपरिहार्य माना जाता है। इन वनस्पतियों की कितनी महत्ता है,इसका उल्लेख वेदों में भी देखने को मिलता है।

हमारी लोक परम्पराओं में यज्ञ, हवनों इत्यादि के द्वारा देवी- देवताओं को प्रसन्न करने की परम्परा है। मान्यता है कि इन तमाम किस्म की जड़ी बूटियों द्वारा लोग देवताओं को प्रसन्न करते थे जैसे यदि वृष्टि न हो तो इन्द्र देवता को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ व हवन करवाये जाते थे और वृष्टि होती थी। ऐसे में यदि ये कहें कि हमारा हर शुभ और अशुभ कार्य प्रकृति से जुड़ा हुआ है।

वर्तमान में ये जनजातीय क्षेत्र विकास के पथ पर अग्रसर है। आज इन लोगों के जीवन में सुधार हो रहा है। हिमाचल प्रदेश को रोशन करने वाला चम्बा जनपद हो या किन्नौर और लाहौल-स्पीति या कुल्लू इन तमाम जनपदों में जल विद्युत परियोजनाएं सरकार द्वारा स्थापित की गई है। एक तरफ ये देश व प्रदेश हित में है तो दूसरी ओर इनसे कहीं न कहीं हमारे पर्यावरण का ह्रास हो रहा है। गत वर्ष कुल्लू और मंडी जनपद में आई भयावह त्रासदी ने ऐसे जख्म दिए हैं कि शायद ही हम उन्हें विस्मृत कर पायेंगे। जनजातीय क्षेत्रों में चौड़ी सड़कें बनाई जा रही है और जिससे हर वक्त भूस्खलन की सम्भावनाएं बनी रहती है। नदियों में अत्यधिक विद्युत परियोजना निर्माण करना हिमाचल प्रदेश में नुकसान का कारण बन गया है। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने पर ही नदियां व नाले रौद्र रूप धारण कर रहे हैं और खामियाजा हम भुगत रहे हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों की संस्कृति वहां के मानस जीवन का एक अटूट हिस्सा होती है जिसकी परिधि के बाहर अकेले मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं होता है। मानव के व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है कि वह अपने समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक विचारों से पूर्णतः अवगत हो। निश्चय ही गिरिजन या जनजातीय लोग प्रकृति के सच्चे संरक्षक हैं। उनकी भिन्न संस्कृति व संस्कार ही उनकी वास्तविक अस्मिता है जो प्रदेश व देश की संस्कृति से उन्हें अलग करती है।

सन्दर्भ सूची

1. गुलाब राय, भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर, संशोधित संस्करण, वर्ष 1956, पृष्ठ संख्या 117

2.रणपतिया अमर सिंह, पांगी, हिमाचल कला संस्कृति (भाषा अकादमी) शिमला, पृष्ठ संख्या 47, प्रकाशन वर्ष 2002

3. सिंह दलीप, प्राचीन भारतीय कला में प्रकृति पूजा, स्वाति पब्लिकेशन -34, सैंट्रल मार्केट, अशोक बिहार, नई दिल्ली , पृष्ठ संख्या -16

4. ठाकुर मौलू राम, हिमाचल की लोक कलाएं और आस्थाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नेहरू भवन, वसन्त कुंज,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 36

5. बलोखरा जगमोहन, अलौकिक हिमाचल प्रदेश, एच.जी. पब्लिकेशन, मैदान गिर ग्राम मार्केट नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 90

विद्या वाचस्पति हिन्दी,हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, जनपद कांगड़ा। अणु डाक - 98170-18700

ये झरने नहीं...

ये झरने नहीं
ये आंसू हैं खुशी के
जो बहने लगे हैं अब
सावन के आते आते
ये झरने नहीं
ये भाव है मेरे दबे हुए
महीनों पुराने
जो निकले हैं अब
इस शक्ल में
ये झरने नहीं
ये तेरी धारना के उत्तर हैं
जिसके चलते
तू कहता मुझे
अचल, कठोर-हृदयी
मैं पहाड़ पाकर
पावस का साथ
देता हूँ तुझे
अपनी सजीवता का प्रमाण
मेरी प्रसन्नता
हरियाली बनकर
सुख पहुंचाती रही तुझे
पर जब तेरा व्यवहार
करता मुझे तंग
तो चुप्पी हो जाती भंग
खुद को संभाल नहीं पाता
फिर चाहे बादल का फटना हो
या मेरा टूट कर बिखर जाना
गुस्सा है प्रकृति संग
इंसान ! मेरा तेरे प्रति...

व्यग्र पाण्डे

यादों के गलियारों से : भवानीप्रसाद मिश्र

शीला झुनझुनवाला

बिंदु-बिंदु जोड़कर जिन्होंने समूचा आकाश रच डाला l ऐसे भवानी दादा अर्थात भवानीप्रसाद मिश्र को वर्षों पहले मैंने दिल्ली के लाल किले के कवि मंच पर पहली बार कविता पाठ करते हुए सुना था l वे कह रहे थे :

न, निरापद कोई नहीं है
न मैं, न तुम, न वे
कोई है, कोई है, कोई है
जिसकी जिन्दगी दूध की धोई है

मंच से उठते स्वर लाल किले की बुलंदियों से टकराते हुए, ऊपर और ऊपर उठते हुए आकाश के विस्तार में समाते जा रहे थे l सचमुच, कौन कह सकता है दावे से, कि उसकी जिन्दगी दूध की धोई है l अपने 'गीतफरोश' होने का ऐलान उन्होंने भले ही कितने ही जोर-शोर से किया हो, पर सच तो यह है कि भवानी दादा कविता बेचते नहीं, लुटाते थे l जिस किसी ने भी मांग की, दो शब्द एक पोस्टकार्ड पर लिखकर भेज दिए और वही कविता होती थी l आधी सदी से भी अधिक समय तक निरंतर चलती रही उनकी काव्य-यात्रा l कितनी कविताएँ लिखीं, इसका भान उन्हें भी नहीं था l

किशोरावस्था में उनकी प्रसिद्ध कविता 'गीत फरोश' की पंक्तियाँ

जी हां हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ l
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ
जी माल देखिए दाम बताऊंगा
बेकाम नहीं हैं काम बताऊंगा
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने l
यह गीत सख्त सरदर्द भुलाएगा l
यह गीत पिया को पास बुलाएगा l
यह गीत सुबह का है, गाकर देखें

यह गीत गजब का है, ढा कर देखें l

जी छंद और बेछंद पसंद करें

जी अमर गीत और वे जो तुरंत मरें

जी बहुत ढेर लग गया, हटाता हूँ

गाहक की मर्जी, अच्छा जाता हूँ l

यह भीतर जाकर पूछ आइए आप

है गीत बेचना वैसे बिलकुल पाप

क्या करूँ मगर लाचार

हारकर गीत बेचता हूँ

जी हां हुजूर मैं गीत बेचता हूँ !.....

से कवि के प्रति जो एक लगाव, मुझमे पैदा हुआ था, वह जैसे-जैसे उनको जाना, उनके प्रति आदर और श्रद्धा में बदलता गया l उनके भीतर कविता की कोमल बेल कैसे बढती और फैलती गई l और जिसका रहस्य केवल वही जानते थे l इस रहस्य को जानने की उत्सुकता मेरे मन में उथल पुथल मचाने लगी l

एक दिन मैंने उनसे इस बारे में पूछ ही लिया

उन्होंने कहा - "मेरा जीवन बहुत खुला-खुला बीता है l किसी बात की तंगी मैंने महसूस नहीं की l मेरे प्रति मेरे माता-पिता और परिवार के सिवाय सभी लोग उदार रहे l एक तो मेरी इच्छाएं ही बहुत कम रहीं, जो हैं बराबर पूरी होती रहीं l थोड़े में आनंद से जीना दरिद्र ब्राह्मण परिवार से विरासत में मिला l इसलिए ज्यादा पढ़-लिखकर पैसा कमाने की इच्छा भी मन में नहीं जगी l एक छोटा-सा स्कूल चलाकर आजीविका प्रारंभ की और जब वह स्कूल सरकार ने छीन लिया तो चार साल स्नेह और मुक्ति से भरे वर्धा के वातावरण में रहा l एक कवि सम्मेलन में हैदराबाद गया और बद्री विशाल जी ने इतना स्नेह दिया कि तीन साल हैदराबाद में काट दिए l जब हैदराबाद से उखड़ा तो चित्रपट के संवाद लिखे और मद्रास के ए.बी.एम. में संवाद-निर्देशन भी किया l मद्रास से बम्बई आकाशवाणी का प्रोडूसर होकर चला गया l वहां से आकाशवाणी केंद्र दिल्ली पर आया l बम्बई के मुकाबले यहाँ काम बहुत थोडा लगा, इसलिए सम्पूर्ण गाँधी वांडमय में चला गया l काम जितने किए सब मन के लिए और मन से किये l जिन कामों का स्वभाव थोडा-बहुत विपरीत था, उन्हें भी अपने सांचे में ढाला l इसे उस काम कराने वाले की खूबी ही माननी चाहिए कि वे मुझे बहुत हद तक मुक्त रखते थे l"

"शहरों के आसपास की प्रकृति और शहरों में बसे हुए लोग मेरे आकर्षण के केंद्र रहे हैं l उनके माध्यम से मैं अपनी कस्बाई और

ग्रामीण प्रकृति को जगाए रखता हूँ l"

"इसके अतिरिक्त जीविका के सिलसिले में इस प्रकार घूमना भी काफी हुआ, कवि सम्मेलनों में भी पुकार पर बहुत दूर-दूर गया किन्तु बड़े-से-बड़े शहर में रहकर भी शहर से असम्पृक्त ही रहा l शहर अर्थात शहर के जीवन से l"

भवानी दादा के मुक्त जीवन का यह खुला खुला पन ही उनकी काव्य धारा की शक्ति बन गई l अज्ञेय का भी यही कहना था l मैं सभी ओर से खुला हूँ – वन-सा अपने में बंद हूँ, शब्द में मेरी समाई नहीं होगी l मैं सन्नाटे का छंद हूँ l भवानी दादा भी सारी उम्र कविता लिख कर समझ गये थे कि शब्द ने उनकी समाई नहीं होगी l

एक बार मैंने 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के लिए उनसे एक कविता की मांग की l कई दिन हो गए, स्वीकार करने के बावजूद कविता नहीं आई l मैंने दोबारा फोन किया तो बोले, "शीला बहन, बस, एक शब्द पर अटक गया हूं l जैसे ही मिलेगा, कविता पूरी करके भेज दूंगा l"

भवानी दादा ठीक शब्द की तलाश में उसी तरह बेचैन रहते, जैसे किसी लापता बच्चे की तलाश में उसके माता-पिता रहते हैं l किंतु, ऐसा अवसर बहुत कम आता था l अन्यथा, सही शब्द तो उनकी कविता में क्रमबद्ध रूप से कतार-दर-कतार उतरते चले जाते थे l उनका कहना था :

शब्द टप-टप टपकते हैं फूल से
सही हो जाते हैं मेरी भूल से

उनके शब्दों की धार बहुत करारी थी, किन्तु उसके नीचे जाकर किसी शब्द पर खरोंच नहीं आती थी l हर शब्द एक तराशे हुए नग-सा अपनी जगह जड़ा हुआ होता था l उनके इसी भाषा कौशल से चकित होकर किसी समीक्षक ने एक बार लिखा था : 'यह आदमी कविता ऐसे लिखता है, जैसे रस्सी बुनता हो l'

मैंने भवानी दादा को फोन किया , "दादा, ऐसी सुन्दर कविता की समीक्षा में समीक्षक ने क्या घटिया तंज कसा है !" दादा बोले, "कोई बात नहीं, नहले पर दहला लगाना तो मैं भी जानता हूं शीला बहन "

कुछ समय बाद ही भवानी दादा का एक और नया संग्रह आया l इस संग्रह का नाम था – 'बुनी हुई रस्सी' l भवानी दादा के जाने-माने शिल्प में रस्सी जैसी लयबद्ध कविताएँ l इसी कृति 'बुनी हुई रस्सी'

को सन १९७२ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भवानी दादा की कविताएँ बहुत सरल हैं किन्तु एक मायने में वे बहुत कठिन भी हैं। सरल होते हुए भी वे यह अपेक्षा पाठकों से रखती हैं – कि पाठक उनके अन्दर के छिपे हुए गंभीर अर्थों को भी समझें।

उनके काव्य संयोजन की यही खूबी है जो उन्हें दूसरों से अलग रखती है। उनकी कविताओं की प्रत्येक पंक्ति बोलती है, प्रत्येक विराम बोलता है। उनकी कविताओं में बहुत प्रवाह रहता है। भाषा और भाव दोनों दृष्टि से समृद्ध हैं। इसीलिए उन्हें भाषा से ज्यादा बोली का कवि माना जाता है। उन्होंने कविता को बोलचाल की भाषा में लिखा – दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि बोलचाल की भाषा को कविता का आकार दिया। इसीलिए वे कहते हैं –

जिस तरह हम बोलते हैं, उस तरह तू लिख

और इसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख

चीज ऐसी दे कि जिसका स्वाद बढ़ जाए

बीज ऐसा बो कि जिसकी बेल बढ़ जाए।

फल लगे ऐसे कि सुख रस, सार और समय

प्राण संचारी कि शोभा-भर न जिसका अर्थ।

किसी ने सही कहा - 'उनकी बोली न तो सीधी है, न सादी तब भी अर्थ उनके भीतर कसे मोती की तरह चमकते हैं क्योंकि भवानी भाई कलाकार उतने नहीं जितने की कवि हैं। पाठक यहाँ बंधने की बजाय खुलता है। जो भवानी भाई को जानते हैं उन्हें पता है कि कविता उन्हें कितना मुस्तेद और व्यस्त रखती है, वे एक झरने की तरह बहते ही रहते हैं।'

आपातकाल में तो हर दिन तीन कविताएँ लिखने का उन्होंने अपना नियम बना लिया था। अक्सर मुझसे कहते थे, "इसको मैंने अनुष्ठान के रूप में लिया है – यह मेरी आत्मा का विरोध है आपातकाल के लिए।" बाद में, इनमे से कुछ कविताएँ 'त्रिकाल संध्या' नामक, संग्रह के रूप में प्रकाशित हुई।

एक बार हमारे घर पर करीब दो घंटे उन्होंने लगातार कविता पाठ किया। वह संध्या आज भी मुझे भुलाए नहीं भूलती। गांधीजी में उनकी आस्था उतनी ही प्रबल थी, जितनी ईश्वर में किन्तु, वे व्यथित भी बहुत

होते थे यह देखकर कि गाँधी के मूल्यों की ओर देखने की किसी को फुरसत नहीं है l हिन्दी की दुर्दशा से भी वे विचलित हो उठते थे l फिर भी उनके शब्दों में कहीं निराशा की झलक नहीं थी l वे उदासी के नहीं, पल-पल धडकती जिन्दगी के कवि थे - जीवन्त कवि थे l उत्साह और उर्जा के कवि थे l आम आदमी के कवि थे l

हृदय में पेसमेकर लगाए वे आयु के समूचे उतरार्द्ध में हैदराबाद, मद्रास, बम्बई और दिल्ली – जैसे महानगरों में रहे किन्तु, मानसिक रूप से वे यहाँ के प्रदुषण-भरे जीवन से सामंजस्य नहीं बिठा पाए थे l एक बार उन्होंने मुझसे कहा था, "शीला बहन, मेरा तन दिल्ली में रहता है किन्तु, मन सतपुड़ा के घने जंगलों, ऊंघते अनमने बियाबानों में घूमता रहता है l इसीलिए अपरिचय के विंध्याचल को समतल करते, नर्मदा की लहरों में डूबते, जब भी मौका मिलता है, मैं दिल्ली छोड़कर उन ग्राम्य अंचलों में पहुँच जाता हूं और वहां से प्राणवायु लेकर लौटता हूं।"

आदमी के जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं, कोई घटना नहीं, जिसके बारे में उन्होंने न लिखा हो l आज भी जब व्यक्तिगत दुखों के कारण कभी आँखें नम होती है और मन में शून्य-सा महसूस होता है, तब भवानी दादा के स्वर याद आते हैं :

दर्द जब घिरे बहाना करो

ना ना ना ना ना ना ना करो l

और मैं दर्द की चादर झटककर उठ खड़ी होती हूं, उनके ही शब्दों से प्रेरणा पाते हुए कि :

कब तक पड़े रहोगे ऐसे

रत्ती-भर दुख का नशा लिए l

और मैं चल पड़ती हूं दोबारा अपनी कर्मयात्रा पर l

शीला झुनझुनवाला

लघुकथा

वो नाश्ता

‘फिर से सूखी रोटी और आलू की सब्जी। पिछले तीन महीने से यही खाना खा-खाकर ऊब चुका हूं। मैं नहीं खाऊंगा’ -खाने की थाली को गुस्से में उलटते हुए पप्पू ने कहा।

‘अरे बेटा! खाने का अपमान नहीं करते हैं। सुबह में अपने घर से खाना खाकर ही बाहर निकलना चाहिए। कल तुम्हारे पसंद का खाना बना दूंगी। अभी जो बना है, खा लो’-श्यामा, पप्पू की मां, ने दुःखी मन से समझाते हुए कहा।

दिल्ली के बुराड़ी इलाका का ‘श्यामा निवास’। जनवरी महीने की कंपकंपाती ठंड। रविवार का दिन। सुबह आठ बजे हैं। लेकिन ‘श्यामा निवास’ का माहौल गर्म है। पप्पू नौवीं क्लास में पढ़ता है और चार भाई -बहनों में वह सबसे छोटा है। उसे तनिक भी भूख बर्दाश्त नहीं। भूख के मारे उसका क्रोध सातवें आसमान पर है।

जीवन दास, पप्पू के पिता, दिल्ली में बैटरी बनाने की प्राइवेट कंपनी में सुपरवाइजर के पद पर काम करते थे। घर के एकमात्र कमाऊ मेंबर हैं। किसी तरह गुजारा हो जा रहा था। किंतु कंपनी घाटे में चलने के कारण बंद हो गई। अब जीवन जी पिछले एक वर्ष से एक रेजिडेंशियल सोसायटी में गार्ड की नौकरी करते हैं। तब से घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है।

‘मां, मैं चाचा जी के यहां जा रहा हूं। वहीं नाश्ता कर लूंगा’ -पप्पू ने क्रोधित मुद्रा में साईकिल निकालते हुए कहा। दो किलोमीटर की दूरी पर रामनिवास दास जी का घर है। रिश्तेदारी में उसके चाचा लगते हैं। वे दिल्ली सरकार में बिजली विभाग में इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। वे पप्पू को बेटे जैसा मानते हैं। पप्पू को भी उनसे बड़ा लगाव है।

‘बेटा, मेरी मानो तो उनके यहां मत जाओ।हमारी माली हालत किसी से छिपी नहीं है। ग़रीबों का कोई रिश्तेदार नहीं होता है। उसे कोई नहीं पहचानता है’ -श्यामा जी ने समझाते हुए कहा। लेकिन पप्पू नहीं माना।

कुछ देर बाद।

‘प्रणाम चाचा जी। प्रणाम चाची जी’ -पप्पू ने आदर सहित कहा।

‘आओ बेटा। बहुत दिनों के बाद आए। हमेशा सोचता हूं तुम्हारे घर जाऊं। पर समय ही नहीं मिलता है। पापा-मम्मी का क्या हाल-चाल है? तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है? सुबह-सुबह आए हो। नाश्ता-पानी करके जाना’ -रामनिवास जी ने कहा।

नाश्ते का नाम सुनते ही पप्पू के मन में पूड़ी-सब्जी की थाली घूमने लगी। अक्सर चाचा जी के यहां उसे यही खाने को मिलता था।

‘संडे का दिन है न। सुबह लेट से उठना होता है। सारे काम में लेट हो ही जाता है। अभी तक हमारे यहां नाश्ते में कुछ नहीं पका है। आराम से होगा। लेकिन चलो, तुम्हें कुछ स्पेशल खिलाती हूं। रात की बची रोटी है। नमक, सरसों के तेल और प्याज के साथ खाने में तुमको खूब मज़ा आएगा। हमलोगों ने कई बार खाया है’ -वीणा, उसकी चाची ने थाली परोसते हुए कहा।

‘गरीबों के...रिश्तेदार.. नहीं..’ मां की बातें पप्पू के जेहन में घूमने लगी। कच्ची उम्र में वह सांसारिक जीवन के एक कटु अनुभव से रु-ब-रु हो रहा था। वह आश्चर्यचकित मुद्रा में नाश्ते की थाली और अपने पिता-समान चाचा को देखे जा रहा था। उसे अपने घर की सूखी रोटी और आलू की सब्जी की याद आ गई।

मृत्युंजय कुमार मनोज

निराला एस्टेट टेकजोन -4,ग्रेटर नोएडा (पश्चिम) उ.प.-201306

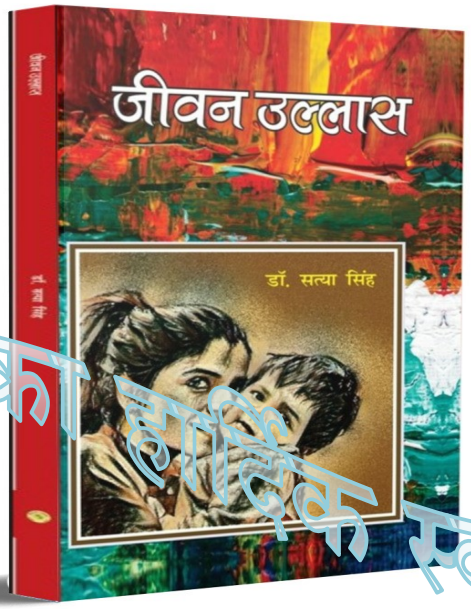

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता
जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

माँ का मर्म

लघु कथा - आकांक्षा यादव

”बधाई हो! घर में लक्ष्मी आई है!” कहते हुए नन्हीं सी बिटिया को दादी की गोद में देते हुए नर्स बोली।

”हुँह..... क्या खाक बधाई! पहली ही बहू के पहली संतान..... वो भी लड़की हुई और वो भी सिजेरियन।” कहते हुए उन्होंने मुँह फेर लिया और उस नन्हीं सी जान पर स्नेह की एक बूँद भी बरसाने की जरूरत नहीं समझी प्रीती की सासू माँ ने। जल्द ही अपनी गोद हल्की करते हुए बच्ची को बढ़ा दिया अपने बेटे की गोद में।

रवि को तो जैसे सारा जहां मिल गया अपने अंश को अपने सामने पाकर। पिछले नौ महीने कितनी कल्पनाओं के साथ एक-एक पल रोमांच के साथ बिताया था प्रीती और रवि ने। खुशी के आँसू के साथ दो बूँदें टपक पड़ी नन्हीं सी बिटिया पर।

कुछ दिनों के अंतराल पर अस्पताल से डिस्चार्ज होने के बाद जब घर जाने की तैयारी हुई तो प्रीती फूले न समा रही थी। पिछले नौ महीनों से जिस घड़ी का इंतजार वह कर रही थी, आज आ ही गई। अपनी गोद भरी हुई पाकर जब प्रीति ने घर में प्रवेश किया तो मारे खुशी के उसके आँसू बहने लगे। वह इस खुशी के पल को संभालने की कोशिश करने लगी।

हँसते-खेलते ग्यारह दिन कैसे बीत गये, पता ही नहीं चला। लेकिन सासू माँ का मुँह टेढ़ा ही बना रहा। प्रीति चाहती थी कि दादी का प्यार उस नन्हीं सी जान को मिले, लेकिन उसकी ऐसी किस्मत कहाँ ? जब बारहवें दिन बरही-रस्म की बात आयी तो सासू माँ को जैसे सब कुछ सुनाने का अवसर मिल गया और इतने दिन का गुबार उन्होंने एक पल में ही निकाल लिया।

”.....कैसी बरही, किसकी बरही, बिटिया ही तो जन्मी है। हमारे यहाँ बिटिया के जन्म पर कोई रस्म-रिवाज नहीं होता.... कौन सी खुशी है जो मैं ढोल बजाऊँ, सबको मिठाई खिलाऊँ.... कितनी बार कहा था जाँच करा लो, लेकिन नहीं माने तुम सब। लो अब भुगतो, मुझे नहीं मनाना कोई रस्मोरिवाज.....।”

सासू माँ की ऐसी बात सुनकर प्रीति का दिल भर आया। रूँधे हुए गले से बोली, ”सासू माँ! आज अगर यह बेटी मेरी गोद में नहीं होती तो कुछ दिन बाद आप ही मुझे बांझ कहती और हो सकता तो अपने बेटे को दूसरी शादी के लिए भी कहतीं जो शायद आपको दादी बना सके, लेकिन आज इसी लड़की की वजह से मैं माँ बन सकी हूँ। यह शब्द एक लड़की के जीवन में क्या मायने रखता हैं, यह आप भी अच्छी तरह जानती हैं। आप उस बांझ के या उस औरत के दर्द को नहीं समझ सकेंगी, जिसका बच्चा या बच्ची पैदा होते ही मर जाते हैं। ये तो ईश्वर की दया है सासू माँ, कि मुझे वह दिन नहीं देखना पड़ा। आपको तो खुश होना चाहिए कि आप दादी बन चुकी हैं, फिर चाहे वह एक लड़की की ही। आप तो खुद ही एक नारी हैं और लड़की के जन्म होने पर ऐसे बोल रही हैं। कम से कम आपके मुँह से ऐसे शब्द शोभा नहीं देते सासू माँ।” इतना कहते ही इतनी देर से रोके हुए आँसुओं को और नहीं रोक सकी प्रीती।

प्रीती की बातों ने सासू माँ को नयी दृष्टि दी और उन्हें अपनी बातों का मर्म समझ में आ गया था। उन्होंने तुरन्त ही बहू प्रीती की गोद से उस नन्हीं सी बच्ची को गोद में ले लिया और अपनी सम्पूर्ण ममता उस पर न्यौछावर कर उसको आलिंगन में भर लिया।

शायद उन्होंने इस सत्य को स्वीकार लिया कि लड़की भी तो ईश्वर की ही सृष्टि है। जहाँ पर नवरात्र के पर्व पर कुंवारी कन्याओं को खिलाने की लोग तमन्ना पालते हैं, जहाँ दुर्गा, लक्ष्मी, काली इत्यादि देवियों की पूजा होती है, वहाँ हम मनुष्य ये निर्धारण करने वाले कौन होते हैं कि हमें सिर्फ लड़का चाहिए, लड़की नहीं।

पोस्टमास्टर जनरल आवास, बंगला नं.-22. कैंटोनमेंट, शाही बाग, अहमदाबाद (गुजरात)-380004

मो.-09413666599 ई-मेल: akankshay1982@gmail.com

अपराधबोध

कहानी - -डॉ० रजनीकांत

अब तक मैं जीवन के पचहतर सावन देख चुका हूँ।प्रभु कृपा से मेरे तीन लड़के हैं।खुदा का शुक्र है कि कोई लड़की नहीं है। क्षमा करें ,आजकल के घोर कलियुग को देखते कह रहा हूँ !तीनों लडके खूब कमा- खा रहे हैं।किसी चीज़ की कमी नहीं है !मेरी धर्म पत्नी प्रभु कृपा से सकुशल है। काया के साथ कई रोग लगे हैं। किन्तु औषधियों के साथ जीवन यात्रा चली हुई है। हम दोनों पति पत्नी साथ के पार्क में सैर करने चले जाते हैं। पुराने दिनों का स्मरण करते हुए वर्तमान को सुखद बनाने का प्रयत्न करते रहते हैं।

दोनों लड़के मेरे पास इसी शहर में रहते हैं।अपने जीते जी मैंने दोनों को दो दो कमरे बाँट दिए हैं। बड़ा लड़का नीचे वाले भाग में रहता है। दूसरा मेरे साथ ऊपर वाले भाग में रहता हैं।तीसरा लड़का कंपनी ने विदेश में भेज रखा है। वह वहीँ सुखी है। मेरी धर्मपत्नी दो बार उसके पास जा आई है। उसके दो लड़के हैं। सभी बच्चों के चाव मल्हार पूरे किये हैं।कोई कमी नहीं रखी।

आयु के इस संधिस्थल पर मै जीवन से पूर्णतया संतुष्ट हूँ।मुझे जीवन से कोई गिला नहीं है। पर जब मैं अतीत के गर्भ में गोते लगाता हूँ।तो कांप उठता हूँ।मैं अपने परिवार में सबसे छोटा सदस्य था।माँ बाप का सबसे लाडला। छोटा होने के कारण मैं इसका लाभ लेने का प्रयत्न करता। पिताश्री मेरी जायज नाजायज़ मांगों को मानते रहते ।जब कालेज में था। पिताश्री से लड़झगड़कर पैसे ले लेता। मेरे लिए पैसे की की कोई कद्र नहीं थी। मेरे कई युवक मित्र बन गए थे। उनके साथ मेरी शाम की महफिलें जमती।इन महफ़िलों में खूब पैसे खर्च कर देता।पैसों की अगली किश्त के लिए मैं नए -नए बहाने खोज लेता।कई बार छोटी छोटी बात को लेकर मैं पिता जी से बहस पड़ता। उन्होंने मेरा नाम धुंधुकारी रख छोड़ा था।मैंने देखा वह मुझसे कई कई दिन बोलते नहीं थे।मैं समझ जाता था कि वे मुझसे नाराज़ चल रहे हैं। चुपके से अंदरुनी बास्केट से पैसे निकाल कर मेरे हाथ में रख देते।मैंने देखा कई बार संकेतों से मुझे समझा देते।बोलना न हो तो कॉपी पर पेंसिल से लिख देते।उन्होंने मुझे तंग नहीं होने दिया। मेरी जरूरतों को खूब समझते थे।

कई बार मैंने उनकी आँखों में आंसू भी देखे थे। किन्तु जवानी के नशे में वह मैं देख नहीं सका।उनकी आँखें मुझसे बहुत कुछ कहना चाहती थीं। किन्तु पिता पुत्र के मध्य कभी संवाद स्थापित नहीं हो सका। उन द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में अनमने मन से दे देता।वे इससे कितने आहत हुए होंगे। मैंने सोचने की कभी जेहमत नहीं उठाई।

मेरा अपने पिता से नाता केवल पैसे तक सीमित था। उनकी स्मरण शक्ति गज़ब की थी। उन्हें मेरा जन्मदिन याद रहता था। जन्मदिन के दिन एक उपहार मुझे अवश्य मिलता। अंतिम बार मुझे पिताश्री ने बढ़िया गोल्ड़न चेन वाली घड़ी दी थी। वह घड़ी आज तक मैंने संभाल कर रखी हुई है।इसी बीच इनका देहांत हो गया।

उनके जाने के उपरांत मुझे उनकी कही बातें याद आतीं। पर अब चिड़ियाँ खेत चुग गई थीं।

जैसे-तैसे मैंने स्नातक परीक्षा उतीर्ण कर ली। तब नौकरी के लिए इतना संघर्ष नहीं करना पड़ता था। मुझे बैंक में नौकरी मिल गई।सभी

प्रसन्न थे।मेरी माँ गांव में रहती थी। यदा कदा माँ पिताश्री के पास शहर भी आ जाती। अधिकांश समय गांव में रहती।उस समय जमाने बड़े सस्ते थे। लोगों में प्रेम और सहयोग की भावना देखने योग्य होती।पिताश्री माँ को शहर से मनी ऑर्डर कर देते।सारे गांव में पिताश्री शाह के नाम से प्रसिद्ध थे। माँ को लोग शाहनी कहते। गांव में लोग माँ से पैसे ब्याज पर उधार ले जाते।जुबान की कीमत होती। निर्धारित समय पर लोग पैसे ब्याज समेत दे जाते।मुझे पता था कि माँ के पास पिताश्री का काफी पैसा है।मैंने किसी ढंग से उसपर कुंडली मारकर बैठना चाहता था।मैंने माँ को अपनी चिकनी चुपड़ी बातों में ले लिया। मैंने माँ के पैसों को पोते पोतियों के नाम खाते खुलवा दिए। मुझे ज्ञात था कि माँ के पास स्वर्ण आभूषण और चांदी के गहने हैं। मैं उन्हें भी हथियाने के चक्कर में था। न जाने मुझे भौतिक वस्तुओं से बेहद लगाव था। मैं किसी भी ढंग से उन्हें अपने अधिकार में कर लेना चाहता था।न जाने क्यों मैं बेहद स्वार्थी बन गया था। मुझे अपनी धर्मपत्नी और तीनों बच्चों के अलावा कुछ भी नहीं सूझता था।मेरी दुनिया यहां तक सीमित थी। इसके बाहर मुझे देखना गवारा न था।मैं इनके लिए किसी से भी उलझ जाता। मेरी माँ अपनी संपत्ति को लेकर उलझन में रहती।मुझे पता था कि माँ ने पुरानी चांदी के गहने एक पीपे में संभालकर रखे हैं। कई बार बड़े भाई साहब के पास जाती दफा माँ साथ ले जाती। माँ कई बार मुझे सुना चुकी थी कि मेरा बड़का भोला है। गरीब है। उसकी तीन तीन बेटियां है। कैसे विवाह करेगा तीन तीन लड़कियों का? विवाह करते करते कर्जाई हो जायेगा। मैं तो सारा गहना उस भोले को सौंप दूंगी ! पर मुझे पता था कि माँ का मन चंचल है। स्थिर नहीं। बड़ी बहु से ऊंच -नीच हो गई।माँ उसे भी नहीं सुनाने से हटेगी। पीपा उठकर गांव लौट जाएगी। मैं माँ के स्वभाव को भली भांति जानता था ।

मेरी दो बहने हैं। मां किसी के साथ स्थिर भाव से नहीं रह सकती। आज किसी के साथ ठीक है तो कल किसी से ऊंच नीच हो गई। माँ दूसरे दिन बिन बोले ही चली आएगी।मैं उस दिन को नहीं भूल सकता। माँ गांव में बहुत बीमार हो गई थी।किसी ने मुझे तार द्वारा सूचित किया! दूसरे दिन मैं माँ को अपने पास ले आया।डाक्टर को दिखाया। उसने बताया कि माँ का शूगर का स्तर और रक्तचाप दोनों बढ़े हुए हैं। माँ को साँस लेने में भी तकलीफ हो रही थी। एक सप्ताह भर माँ अस्पताल में दाखिल रही। उसके बाद माँ को घर लिवा लाया।

माँ को स्टोर रूम में शिफ्ट कर दिया गया।बच्चे दादी के पास जाने से घबराते। हम भी दादी के पास जाकर कहीं बीमार न हो जाएँ।पता नहीं उन्हें किसने सिखा दिया था। माँ कई बार बेसुध हो जाती। खुद बड़बड़ाती रहती।माँ को लगता कि वह कहीं गांव में विचरण कर रही है।शूगर में पेशाब भी अधिक आता है।माँ को बार बार उठने में दिक्कत आती।वह खुद पर खीझती। एक बार माँ से चादर में सूसू हो गया। मैंने भावावेश में माँ को बहुत कुछ सुना दिया।बहुत कुछ कह दिया। मैंने देखा माँ के मुख पर कई हाव भाव आ जा रहे थे।एक दम माँ को जैसे करंट लगा था !वह बिस्तर से उठकर बैठ गई !फिर फर्श पर पांव रखा !शायद माँ अपनी चप्पल ढूंढ रही थी।माँ का चेहरा क्रोध से दमक रहा था ।माँ बोलती जा रही थी -सुन। मैं किसी की मोहताज नहीं हूँ। गांव में पूरी जागीर छोड़ रखी है तेरे बाप ने। उसने मुझे इतने पैसे छोड़ रखे हैं कि मैं तेरे जैसे दस आदमियों को धार सकती हूँ। पाल सकती हूँ। इस बीमारी ने मुझे असहाय बना दिया है। मैं टूट सकती हूँ।

झुक नहीं सकती। बिखर नहीं सकती। तभी मैं अपने दम पर गांव में रह रही हूँ। छोटी मोटी बीमारी मैं मानती नहीं हूँ। पर यह नामुराद बीमारी पता नहीं कहाँ से आ गई? तूने मुझे इतना कुछ सुना दिया। तू क्या भूल गया जब तू छोटा था। मैं गीले में सोती थी। और तुझे सूखे में सुलाती थी।तू तो छोटा कभी था ही नहीं। इतना बड़ा ऐसे ही हो गया !तेरी लाड़ी ने तुझे पाल पोस कर इतना बड़ा जो कर दिया। आज तू मुझे मेरे पालने का यह सिला बड़ी बड़ी बातें करके दे रहा है। शाबाश मेरे बच्चे। इसी दिन को देखने मैं जिन्दा हूँ आजा।तेरे बापू से पहले इस संसार से उठ गई होती तो अच्छा था !बोलते बोलते माँ बेहोश हो गई थी। मैंने बड़ी मुश्किल से माँ माँ को गांव जाने से रोका। मुझे ही पता है कि मैंने कैसे कैसे बच्चों का वास्ता देकर शहर में अपने साथ रहने के लिए माँ को मनाया।

इससे पहले जब मैंने दिवाली पर माँ को परिवार के साथ दिवाली पर बुलाया था। माँ बड़े चाव से शहर में आई। मैं मानता हूँ कि हर बात में मेरा अहं आड़े आ जाता है। शायद यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी गलती थी !सचमुच मुझे बड़ा अभिमान था कि मैं बड़ा अफसर हूँ।आजतक गांव में मेरी जैसे पोस्ट पर तैनाती किसी की नहीं हुई थी।मैं सभी को हिकारत की दृष्टि से देखता। मुझमे श्रेष्ठता का कीड़ा कहीं से कुलबुलाने लगता।मैं अपना आप खो बैठता सामने वाले को मैं कुछ भी नहीं समझता था।माँ गांव से कई तरह की पोटलियां लेकर आई थी।शक्कर ,गुड़,बेसन के लड्डू ,तिल ,मक्की का आटा ,!इन सबमें माँ का प्रेम छलक रहा था। पर मैंने माँ की लाई चीजों को वरीयता नहीं दी। उलटा माँ को नसीहत देने लगा!माँ। इन सब की क्या जरूरत थी? यहां पैसे से सब कुछ मिल जाता है।

उस दिन सचमुच मैंने अपनी माँ का दिल तोड़ दिया था !मुझे अपने पर ग्लानि होने लगी थी !मुझे झेंप सी होने लगी थी । माँ ने ऐसा उत्तर दिया कि मैं बगलें झाँकने लगा था -बेटा। मुझे पता है कि शहर में पैसों से हर चीज़ मिल जाती है !फिर पैसों से माँ भी मिल जाती होगी । यहीं शहर में ले ली होती । तो मुझे कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था।मैं बगलें झाँकने पर मजबूर हो गया था।बातों ही बातों में मैंने माँ से अनुरोध किया कि घर की जमीन बेच देते हैं। इतनी बड़ी खड्ड हंड कौन जाएगा ? कल को हमारे बच्चे कहाँ जायेंगे वहां ?उस जमीन को बेच देते हैं ! और उस पैसे से यहीं शहर में ट ले लेते हैं।आप भी यहीं रह लेना हमारे साथ।

-सुन मुन्नुआ !आज तो तूने बोल दिया सो बोल दिया। पर आगे से मत बोलना। जीते जी मैं तो घर की जमीन तुझे बेचने न दूंगी। मेरे बाद जो तेरी मर्ज़ी

होगी करना! पता है तेरे बापू अमृतसर से सिर पर चीजें उठा -उठाकर घर लाते थे ।अपने पेट को काट काटकर जैसे तैसे उन्होंने उसे घर बनाया। आज तक मैंने उस घर को सजा संवार कर रखा है।

यह शायद दिवाली के पिछले दिन की बात थी ।मैंने तो और ही सपने संजो रखे थे कि माँ को किसी तरह मनाकर यहीं प्लाट लेकर बड़ा सा मकान बना लेंगे । मेरे सारे सपने माँ ने एक ही बार ने धराशायी कर दिए थे।इसके बाद मेरी माँ के साथ कितने दिन कोई बात नहीं हुई।शायद माँ उस रात सोई नहीं थी। मैंने माँ को आगे बढ़कर बुलाने की भी चेष्टा नहीं की।मैं कितना कठोर बन गया था। मैंने पैसे को सब कुछ समझ

लिया था !भौतिकवाद के मुलम्मे ने मुझे असलियत तक नहीं पहुँचने दिया था ।दिवाली का त्योहार था।माँ का गुस्सा अभी भी सातवें आसमान पर था।मेरी वजह से बहु भी सासुमाँ से दूर -दूर थी।पूजा चल रही थी। अनायास माँ से छींका गया।बहु से न रहा गया -माँ जी। अवसर कुअवसर तो देख लिया करो।

-बेटा।यह किसी की वश में थोड़ा होता है।अब क्या हो सकता है ?माँ रुआंसी हो चली थी। सभी के चेहरों पर उदासी पसरी हुई थी। माँ का उत्साह पहले जैसा नहीं था। इसके बाद माँ दो तीन दिन हमारे पास रही।इसी बीच माँ का चश्मा टूट गया था। माँ ने मुझे दो बार इसे बनवाने के लिया कहा था। पर शायद क्यों मैंने ध्यान नहीं दिया।

एक सुबह माँ ने मुझे कह दिया कि मैं आज गांव वापिस लौट जाऊंगी !माँ के हाथ में वही टूटा हुआ चश्मा था।जैसे तैसे वह गांव पहुंच गई थी। इसके बाद माँ मेरे पास लौटकर शहर में जीवन भर नहीं आई। शायद उसने न आने की कसम डाल रखी थी।मैंने अपनी बहन को माध्यम बनाकर माँ से सिफारिश डलवाई। किन्तु माँ ने कतई मानने से इंकार कर दिया।माँ ने मुझे फिर कभी क्षमा नहीं किया।मृत्यु तक मुझसे नहीं बोली।माँ मेरे प्रति कठोर बन गई थी !शायद इसके लिए मैं ही जिम्मेदार था ! आज जब मैं सोचता हूँ तो खुद को निर्धन व्यक्ति पाता हूँ। एकाकी नितांत अकेला !क्योंकि अब मेरे पास धरती सम माँ नहीं और आकाश से बड़े पिता श्री का सिर पर साया भी नहीं है।जब मैं अतीत में झाँकने का प्रयत्न करता हूँ।

मुझे खौफ लगने लगता है। मैं घबरा जाता हूँ।भविष्य के गर्त में क्या है मैं नहीं जानता। पर यह भी भय लगता है कि कहीं मेरे बच्चे भी मेरे साथ वही न दुहरायें।सत्य कहूँ मुझे खुद से डर लगने लगा था । कहते हैं कि दूध का जला छाछ को भी फूँक मार कर पीता है।वैसे ही स्थिति मेरी है।दुनिया को दिखाने के लिए मैंने अपने ड्राइंग रूम में माता और पिताश्री की बड़ी सी फोटो बड़े से हार के साथ सजाकर रखी है!झूठ नहीं कहूँगा आदमी कितना बड़ा नाटककार है।कितना बड़ा ड्रामे बाज है ! दुनिया के सामने खुद को अपनों का सबसे बड़ा हितैषी सिद्ध करने प्रयत्न करता है।मगरमच्छ के आंसू बहाता है।हाँ मैं भी बहुत बड़ा नाटककार हूँ !लोकलाज के लिए मैंने घड़ियाली आंसू बहाये।माँ का आज्ञाकारी होने खूब प्रपंच किया।

माँ के कहे शब्द मेरे कानों में हर समय गूंजते रहते।मैं खुद को अपराधी समझता।रातों को उठकर बैठ जाता।कई बार सपने में माँ दिखाई दे जाती। मैं खुद बड़बड़ाने लगता। मेरा पूरा शरीर पसीने से सराबोर हो जाता।मुझे शांति की तलाश थी। इसके लिए अब मैं नियमित तौर पर मंदिर जाने लगा था। कितनी -कितनी देर मंदिर के बैंच पर बैठा रहता ।अतीत की स्मृतियाँ मेरा पीछा छोड़ने को तैयार नहीं थी। अब तक मैं सेवा निवृत हो चुका था।बच्चे सेटल हो चुके थे।अब मैं आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित हो रहा था। सत्संग में जाने लगा था। इससे मुझे शांति मिलती। मेरे मन मस्तिष्क में गाँव ही छाया रहता !और अब मैं नियमित रूप से गांव जाने लगा था।अलमारी में माँ द्वारा रखी चीजें करीने से अपनी जगह रखी हुई मिलती। ट्रंक में माँ द्वारा सहेजी गई चीजों को छूता।मुझे पता नहीं क्यों सुकून मिलता। माँ के ट्रंक खोलकर देखता। करीने से सभी चीज़ें सहेजी हुईं !मुझे लगता कि कहीं से माँ की दो आँखें मुझे ही घूर रही हैं !अभी मुझे बोल देगी -ओ छोरुआ !अभी भी तू बदला नहीं है !तेरा घमंड तुझे ले डूबेगा ! सचमुच मैं काँप काँप जाता हूँ ! मैंने पाया कि मकान का सारा बरामदा पूरी तरह से उखड़ चुका है ।कहीं से एक मिस्त्री ढूंढ कर लाया।दो मजदूर कही से पकड़े।दीवारों पर नमी से दीमक लगने लगी थी। प्लास्तर कई जगह से उखड़ रहा था।छत पर बांस की कड़ियाँ पुरानी होने से कमजोर पड़ गई थीं।स्लेटों के भार से कड़ियाँ नीचे आने का खतरा और ज्यादा बढ़ गया था।नए बांसों का प्रबंध किया ।सारा काम नये सिरे से करवाया !न जाने क्यों मुझे मुझे आत्मिक शांति का अहसास हो रहा था !मुझे खुद इसका पता नहीं था ! कभी हमारा बेहड़ा भरा पूरा होता था।बच्चों की किलकारियां पूरे बेहड़े में गूंजती। खूब हो हल्ला मचता।समय के साथ पुरानी पीढ़ी मर खप गई। नई पीढ़ी शहर में पलायन कर गई। लोगों के पुराने मकान या गिर चुके थे अथवा गिरने की कगार पर थे। नई पीढ़ी को इनकी सुध लेने की चिंता कतई नहीं थी।कई मकान खंडहर में परिवर्तित हो चुके थे।या कुछ ढहने को थे।मुझे पता चला कि पहले पहल देसू की पत्नी अकेली यहां रहती थी। एक भैंस भी पाल रखी थी। किन्तु जब का सुना है कि समीप के गांव में एक बाघ ने आतंक मचा रखा है। वह बेहड़े से पलायन कर गई है।मैंने मजदूरों को यहीं सुला लिया। मिलकर खाना तैयार कर लेते। पहले एक को आवाज़ दो तीन भागे आते थे !.किन्तु अब मजदूर बड़ी मुश्किल और भाग्य से मिलते हैं। उनकी हर मांग को मानना पड़ता है ।पारले बेहड़े के कई परिचित मिलते मुझसे पूछते -आपका गांव में बसने का इरादा है क्या ? -हाँ ,सोच तो रहा हूँ। वे मुझे घूरकर देखते ! जैसे मैंने कोई उन्हें अपशब्द कह दिए हों। जब सभी लोग पलायन कर के जा चुके हों। मेरा घर की मरम्मत करवाना शायद उन्हें अटपटा लगा हो।

ऐसा नहीं ,कुछ लोग मेरे इस कार्य की प्रशंसा भी कर रहे थे। चलो ,गांव में कोई तो है जो अपने पुरखों की जमीन जायदाद की देखभाल कर रहा है।मैंने बंजर पड़ी जमीन पर खैर के पौधे लगा दिए। मुझे किसी ने बताया खैर फुटों के हिसाब से बिकता है। खाली पड़ी जमीन पर यह सोचकर पौधे रोप दिए कि कम से कम अगली पीढ़ी गर्व से कहा करेगी -यह देखो, हमारे दादा ने खैर के पौधे लगाये थे। पर शायद उन्हें बताने वाला कोई नहीं होगा कि सनकी बूढ़ा अपराध बोध से ग्रस्त था।

गाँव -भन्जाल ,तहसील -घनारी,जिला -ऊना हिप्र०177213

94183 44159

केशव शरण

तालाब

सूखा हुआ तालाब
कोई अफ़सोस नहीं था
सूखी घास और झाड़ियाँ
कोई दुख की चीज़ नहीं थीं
दुख की चीज़ थी चरम गर्मी

ख़ुशी की बात है कि
घास और झाड़ियाँ
हरिया चली हैं
अफ़सोस की चीज़ है
तालाब
जो जस का तस रहा
सावन इतना कम बरस रहा!

बादल से

मेहरबानी की
बरस रहे हो
धरती और पेड़-पौधों की
प्यास बुझा रहे हो
और हमें भी कर
सरस रहे हो

बस निवेदन है कि
उड़ेल मत दो सारा पानी
जल्दी-जल्दी

धीरे-धीरे
बरसो
एक घंटे की जगह
एक दिन
दो दिन
तीन दिन
ताकि माहौल बना रहे रूमानी
और पैदा न हो
कोई परेशानी

यह भी आनंददायक

सारे सूखे झरने
इस समय
अपनी ऊँचाइयों से पानी गिराते
बह रहे होंगे,
किसी चट्टान की ओट में बैठकर
बारिश से महफ़ूज़
उन्हें देखने का
मज़ा ही कुछ और है

पर यह भी
आनंददायक ही है देखना
ताड़ के ऊँचे बदन से
पानी का
झरने की तरह
नीचे सर-सर सरकना

यह दृश्य, यह पल

छायादार शिखर से
तने के सहारे
उतर रही है
एक नदी
सूक्ष्म-सी
पावसी
और कुछ दूर चलकर
पोखर रूपी समुन्दर में
समा रही है

अद्भुत है
सुन्दर
यह दृश्य
यह पल!

बरसात का सबसे सुन्दर समय

महीन झींसी की
रूमानी लय
और सुरमई घटा
रोमांस का मौसम बनाती हैं
मौसम को
रोमांस की जगह
जगह को
यह बरसात का
सबसे सुन्दर समय

दृश्यता कम हुई है
लेकिन सुन्दरता बढ़ गई है
दृश्यों की
दूर की कोयलें
पास में गाती हैं

हिंदी राष्ट्रभाषा और उसके मार्ग की चुनौतियाँ

आज से 7 दशक पूर्व 14 सितंबर 1949 को हिंदी भाषा को संविधान की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया ... उसी दिन की स्मृति में पूरे देश में हिंदी दिवस और हिंदी पखवारा मनाया जाता है . जिसमें प्रत्येक वर्ष हिंदी के उत्थान के विषय में बड़ी बड़ी कार्यशाला और भाषण , प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है. परंतु फिर सब ठंडे बस्ते के अंदर रख कर बंद कर दिया जाता है .

राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है

हिंदी ने हमें गूँगेपन से बचाया है... ऐसा महात्मा गाँधी का कहना था .

इस हिंदी भाषा की अस्मिता ने राष्ट्रीय एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है . लोगों के कौशल , उनकी भावनाओं और ज्ञान को प्रगट करने बहुत ही सहायक सिद्ध हुई है . देश के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा ने अमूल्य योगदान किया है .जय हिंद और वंदेमातरम् का नारा आज भी देश भक्ति की भावना जनसमूह में जगाने में कामयाब हो जाता है .

हिंदी भाषा को देश के लगभग तीन चौथाई लोग बोलते और समझते हैं . हिंदी को 12 राज्यों में प्रथम भाषा और 11 राज्यों में द्वितीय भाषा का दर्जा प्राप्त है . हिंदी भाषा की विशालता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि हिंदी 18 बोलियों का सम्मिलित समूह है और हमारी हिंदी भाषा स्थानीय स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक अपनी पहुँच बना रही है .

शिक्षाविद् , संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग करते हैं , इस वजह से आम आदमी हिंदी भाषा से अपने को अलग थलग सा महसूस करता है ... हमारे हिंदीविद्वानों और हिंदी विभागों और साथ में सरकार को भी इस समस्या के निवारण के लिये कदम उठाने की आवश्यकता है .

भूमंडलीकरण ने हिंदी के बाजार को विकसित किया है ... हिंगलिश शब्द हिंदी और इंग्लिश के मिश्रण से उत्पन्न हुआ है जो बाजारवाद की देन है . दुनिया के कई देशों में हिंदी व्यापार की भाषा बन गई है . हिंदी का बाजार लगभग 33 देशों में फैला हुआ है . आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इंग्लिश में यह ताकत अभी भी नहीं है . हिंदी फिल्मों का बाजार दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है , इससे करोड़ों रुपये की आमदनी भी हो रही है .

वैश्विक स्तर पर वही भाषा टिक पायेगी जिसका शब्दभंडार या शब्द कोष बड़ा हो , उस भाषा में औदार्य भी होना आवश्यक है ताकि वह अपना शब्द भंडार निरंतर बढाता रहे , इस परिपेक्ष्य में हिंदी का सौभाग्य रहा कि भारत में तुर्क, मंगोल , अफगान , मुगल , फ्रांसीसी , पुर्तगीज ,और विशेष कर अंग्रेजों का शासन रहा , उन लोगों ने अपनी भाषा में अपना दरबार चलाया और देश पर शासन किया . इसके परिणामस्वरूप हिंदी भाषा शासकीय भाषा से प्रभावित भी हुई और उसका शब्द भंडार जो संस्कृत भाषा के शब्दों से पहले ही काफी समृद्ध था, वह इन सबके प्रभाव से और भी संपन्न और समृद्ध होती गई .

हिंदी भाषा की चुनौतियाँ ..... इस समय हिंदी भाषा की सबसे बड़ी चुनौती मीडिया से उत्पन्न हिंगलिश भाषा से मिल रही है . मीडिया अपने लाभ को ध्यान में रख कर हिंगलिश का प्रचार और प्रसार कर रहा है . हिंगलिश के कारण हिंदी के लिये अपनी शुद्धता बनाये रखना मुश्किल होता जा रहा है .

वैश्वीकरण के दौर में अंग्रेजी भाषा को ज्यादा बल मिल रहा है . फिल्मों में हिंदी के साथ इंग्लिश के प्रयोग के कारण अशुद्धता बढती जा रही है .

कुछ विषयों की पुस्तकों का हिंदी भाषा में उपलब्ध न होना .....यह एक बड़ी समस्या है... मशीनी अनुवाद क्लिष्ट होता है और वह पर्याप्त नहीं है कि वह पाठकों की माँग को पूरा कर सके . एक महत्वपूर्ण समस्या है कि शोध और अनुसंधान के लिये हिंदी में शोध अध्ययन सामग्री उपलब्ध नहीं है , यही कारण है कि शोधार्थी को इंगलिश में ही रिसर्च का कार्य करना पड़ता है .

विज्ञापन बाजार हिंदी के लिये दिन ब दिन नई चुनौतियाँ खड़ी कर रहा है , जिसके तहत एक वर्ग विशेष को लुभाने के लिये अंग्रेजी में विज्ञापन , उत्पाद का नाम अँग्रेजी में प्रचारित करता रहता है .

हिंदी भाषा की चुनौतियों से निपटने के लिये , उसे बोलचाल और व्यवहार की भाषा बनाई जाये . अभिव्यक्ति का माध्यम सुदृढ किया जाये . सर्वप्रथम हिंदी भाषा को रोजगार की भाषा बनाई जाये . हिंदी भाषाके माध्यम से युवक युवतियों को रोजगार परक कौशल प्रशिक्षण दिया जाये .

इसे विज्ञान की भाषा बनाने का प्रयास किया जाये .... क्लिष्ट शब्दों की जगह सरल शब्दों का प्रयोग किये जाने पर बल दिया जाये .

विभिन्न राष्ट्रों के विश्वविद्यालयों के साथ अनुबंध किया जाये , जिससे विदेशी विश्व विद्यालयों में हिंदी विभाग की स्थापना हो सके .

हिंदी भाषा पर निर्भरता कम करके भी हिंदी का विकास किया जा सकता है . जब जापान और चीन आदि राष्ट्र बिना अंग्रेजी के

आत्मनिर्भर हो गये तो हम क्यों नहीं हो सकते . हिंदी भाषा के प्रति लोगों के संकुचित और संकीर्ण नजरिये को बदलने की आवश्यकता है. हिंदी के प्रचार प्रसार के लिये प्रांतीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसे सोशल मीडिया , प्रिंट मीडिया ,टी.वी. सिनेमा, हिंदी में शासकीय और गैर शासकीय कार्यों का संपादन अनिवार्य रूप से हिंदी में किया जाये . हिंदी भाषा को सरल और समृद्ध बनाने के लिये अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके हिंदी में अनुवाद को बढावा दिया जाये . क्षेत्रीय भाषाओं की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद के साथ साथ विदेशी भाषाओं की रचनाओं का भी हिंदी में अनुवाद को प्राथमिकता दी जाये .

अच्छी बात यह है कि इंटरनेट से हिंदी को नई ताकत मिली है . भारतीय युवाओं के स्मार्ट फोन में औसतन 32 एप्लिकेशन होते हैं ,जिनमें से 8 या 9 हिंदी के हैं.

इंटरनेट की दुनिया में हिंदी को बढाने में UNICODE ने अहम् भूमिका अदा की है . ये तकनीक ऐसी है कि हर अक्षर को एक विशेष नंबर प्रदान करता है .... इससे इंटरनेट पर हिंदी में काम करना आसान हो जाता है .

इस समय इंटरनेट पर हिंदी के 15 से ज्यादा सर्च इंजन मौजूद हैं ... इंटरनेट पर हिंदी के बढते कदम से भविष्य के प्रति आशा की झलक दिखाई पड़ती है .

हिंदी को राजभाषा घोषित हुए 75 वर्ष पूरे होने वाले हैं , यह जनसंपर्क की भाषा तो बन चुकी है परंतु राजनैतिक कारणों से राष्ट्र भाषा ऩहीं बन पाई है . आज के आई टी युग में हमें हिंदी के सिलेबस को आई टी आधारित बनाने की जरूरत है . हिंदी सॉफ्टवेयर के विकास पर काम हो ...हिंदी के विकास में लगे सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों को एक मंच पर आकर वर्ष में कम से कम एक बार हिंदी भाषा की मुश्किलों और चुनौतियों पर चर्चा करनी चाहिये और उनके निराकरण के उपाय पर कारगर रूप से चर्चा करके कार्यान्वित करना होगा . बेहतर हिंदी शिक्षकों को सम्मानित करना चाहिये .

यदि भारत वर्ष को एक विकसित अर्थव्यवस्था बनाना है तो उसे हिंदी को कार्यपद्धति, शिक्षा , ज्ञान , कौशल , व्यापार , मीडिया , और बाजार की भाषा बनाना ही होगा . ऐसा किये बिना यह देश न तो संपन्न बन सकता है और न ही समतामूलक , न ही महाशक्ति और न ही विकसित अर्थ व्यवस्था ...हिंदी को राजभाषा से राष्ट्र भाषा बनाने से पहले उसे जनभाषा बनाना होगा .

अंत में हम कह सकते हैं कि 21 सदी में हिंदी की हालात को देखते हुए कुछ जिम्मेदारियाँ हमारी भी बनती है. क्योंकि हिंदी भाषा के विकास के लिये दूसरों की प्रतीक्षा करने के बजाय , आप जो भी कर सकते हैं, अकेले करें या समूह के आकार में करें . इन जिम्मेदारियों को पूरा करना हमारा पहला कर्तव्य होना चाहिये . इसी अँधेरे में सूरज निकलेगा और हिंदी को वास्तविक जगह मिलेगी .

पद्मा अग्रवाल. Mo...9359993947

उम्मीद

उम्मीद थी तू नजर आएगी
मुझे लगा तू आई मगर
अफसोस,
माना कि मैं नाकाम रहा
तेरी आहट से
कम से कम तूने इशारा
तो किया होता l
एक ख्वाब था कि
अपनी मुस्कान से
मेरे घावों को मरहम देगी
अपने अंदाज़ से
दर्दे दिल को सुकून देगी
तू महक बिखेर के
चली गई
कम से कम मुझसे
खुशबु को तो न
जुदा किया होता l
सोच बचकानी थी कि
अपनी आंखों के किनारे
से मुझे देखे,
मैंने कोशिश की तो
सामने पर्दा था
माना कि पर्दे को
हवा न हिला सकीं
पर्दे का क्या कसूर था
चाहत होती ग़र तुझे
तूने पर्दे को खिसका
तो दिया होता l
मन से जिसे चाहा वो
सब दिली खयाल थे,
नाकामी न मिलती
दिमाग जो लगाया
होता l

निर्मला कुमारी
1A/8 यमुनानगर नैनी, प्रयागराज

मध्यकालीन

हिंदी कविता में राष्ट्रीयता

डॉ.ओमप्रकाश प्रजापति (सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग)

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला

मध्यकालीन भक्ति साहित्य का मनुष्य के साथ शाश्वत संबंध रहा है। साहित्य मनुष्य की अनुभूति का एक समृद्ध कोश एवं ग्रंथ है जिससे मनुष्य सात्विक विचारों को ग्रहण कर अपने जीवन को सरस बनाकर व्यतीत करता है और वही दूसरी तरफ मनुष्य की अनुभूति को संग्रहित कर उसकी विशिष्टता को समाज के सदृश लाता है। कोई भी मनुष्य कितना भी बड़ा विद्वान क्यों न हो , वह तब तक निरर्थक है जब तक साहित्य उसकी अनुभूति को संग्रहित कर अभिव्यक्त नहीं करेगा। चूंकि मनुष्य और साहित्य एक - दूसरे के पूरक हैं और एक के अभाव में दूसरा अस्तित्वहीन है। सच्च कहें तो जैसे मनुष्य के शरीर में आत्मा का वास है वैसे ही साहित्य रूपी ग्रंथ के शरीर में मनुष्य रूपी आत्मा का वास है।

भारतीय वांग्मय में राष्ट्र शब्द का प्रयोग वैदिक काल से ही होता आया है। यजुर्वेद में राष्ट्र में देहि और अथर्ववेद में (त्वा राष्ट्र भृत्याय) में राष्ट्र शब्द समाज के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मनुष्य की सहज सामुदायिक भावना ने समूह को जन्म दिया जो कालांतर में राष्ट्र के रूप में विकसित हुआ। राष्ट्र एक समुच्चय है और राष्ट्रीयता एक विशिष्ट भावना है " 1 जिस जन समुदाय में एकता की एक विशिष्ट लहर हो उसे राष्ट्र कहते हैं। आर्यों में एकता का बाह्य रूप ही नहीं बल्कि आंतरिक रूप भी देखने को मिलता है। परस्पर सहयोग तथा संस्कारित सहानुभूति की भावना से ही राष्ट्रीय भावना का विकास होता है। साहित्य सामुदायिक विकास में सहायक होता है और सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चेतना का ही एक महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय मनीषियों का चिंतन मनन सूक्ष्म और विचार उद्धत रहा है उन्होंने " वसुधैव कुटुंबकम् ' मंत्र से संपूर्ण ब्रह्मांड को एकजुट करने का प्रयास किया। " संपूर्ण विश्व एक परिवार है " सिद्धांत को लागू करना एक असाधारण व कठिन कार्य था क्योंकि इससे पहले समाज में व्याप्त जातियों , धर्मों व संप्रदायों से ऊपर उठकर नूतन दृष्टिकोण पर कार्य करना था। चुनौतियां अधिक थी फिर भी भारतीय मनीषियों ने भरपूर प्रयास कर यह कार्य किया जो कि एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। यही कारण है कि आज विश्व भारतीय संस्कृति का अनुकरण कर रहा है। हिंदी साहित्य पर यदि ध्यान आकर्षित किया जाए तो आदिकाल से इसका वैसे प्रारंभ माना जाता है जो कि एक हजार ईस्वी के आसपास का समय है लेकिन इससे पूर्व हजारों वर्षों से भारत में साहित्य लिखा जा रहा है। वेद , उपनिषद , रामायण व महाभारत जैसे असंख्य ग्रंथ है । लेकिन सुविधा की दृष्टि से विद्वानों ने हिंदी साहित्य का सूत्रपात आदिकाल से ही स्वीकार किया है क्योंकि इसमें हिंदी किसी न किसी रूप में हमें देखने को मिलती हैं। हिंदी साहित्येतिहास के विकासात्मक

वर्गीकरण में द्वितीय चरण को मध्यकाल की संज्ञा दी गई है तथा इसे पुनः दो भागों में विभाजित कर पूर्व मध्यकाल एवं उत्तर मध्यकाल नाम दिए गए हैं। पूर्व मध्यकाल को भक्ति काल कहा गया और उत्तर मध्यकाल को रीति काल नाम दिया गया है। भक्ति काल में धार्मिक दृष्टिकोण की प्रबलता ज्यादा दिखाई देती है लेकिन उसे राष्ट्र शून्य भी नहीं कहा जा सकता है। यह समय विदेशी और विजातीय मुस्लिम आक्रांताओं का रहा है। संतों की सजग चेतना के परिणामस्वरूप प्रबुद्ध लोगों का ध्यान आत्मनिरीक्षण और परिस्थिति परीक्षण की ओर आकृष्ट हुआ और तदनुसार आत्मरक्षार्थ उपाय करना आवश्यक प्रतीत होने लगा। हिंदू जनता मुस्लिम आक्रमणों से भयभीत होने की अपेक्षा अधिक सजग और सचेत हो गयी। काशी और मथुरा जैसे धार्मिक स्थलों में बड़े बड़े मंदिरों को ध्वस्त किए जाने पर छोटे छोटे-छोटे मंदिरों की बाढ़ सी आ गई तथा घर - घर में देवी देवताओं की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हो गई। यह अपने ढंग की एक सामूहिक जागृति ही थी। इस प्रकार सामूहिक चिंतन और व्यवहार का एक सुयोग मिला। आपसी भेदभाव को कम करने के लिए सुगम मार्ग ढूंढे जाने लगे और परस्पर टकराव धीरे-धीरे धीरे समाप्त होने लगे। लोगों में व्यक्तिगत स्वार्थों के स्थान पर लोक चेतना का भाव जागृत हुआ। जिस दृष्टिकोण की प्रबलता है वो परोक्षरूप में ही है। यह समय विभिन्न धार्मिक आंदोलनों का ही माना जाता है। राजनीतिक संघर्षों में इनकी कोई रूचि नहीं थी फिर भी इस काल में संतों ने राष्ट्रीय भावों को कुछ वाणी देने की कोशिश अपनी भक्ति पूर्ण रचनाओं में की है। इनमें रैदास ,कबीर , गुरू नानक , दादूदयाल , मलूकदास व पलटुसाहब इत्यादि प्रमुख हैं। इन्होंने धर्म जाति , वर्ग वैमनस्य से ऊपर उठकर भारतीयों में राष्ट्र प्रेम जागृत किया है। भक्ति काल के मूर्धन्य संत कबीर दास का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक बुराईयों से ग्रस्त था। छुआछूत , अंधविश्वास , रूढ़िवादिता का बोलबाला था और हिंदू - मुस्लिम परस्पर दंगा फसाद में उलझे हुए थे। धार्मिक पाखंड भी चरम सीमा पर था और धर्म के ठेकेदार अपने स्वार्थ की रोटियां धार्मिक कट्टरता एवं उन्माद के चूल्हे पर सेंक रहे थे। कबीर ने इसका खुलकर विरोध किया और सभी क्षेत्रों में फैली हुई सामाजिक बुराईयों को दूर करने का भरपूर प्रयास किया। उन्होंने अपनी बात निर्भयता से कही तथा हिंदू मुस्लिम को डटकर फटकार लगाई। हिंदू और मुसलमान जो अपने - अपने धर्म को श्रेष्ठ समझकर एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करने में लगे थे और जिससे कि सांप्रदायिकता उत्पन्न हो रही थी इस वैमनस्य को दूर करने के लिए संत कबीर ने निर्गुण और निराकार ब्रह्म की उपासना पर बल दिया तथा इसके माध्यम से ही हिंदू - मुस्लिम पारस्परिक एकता का प्रतिपादन किया। वस्तुत: कबीर सच्चे समाज सुधारक व राष्ट्र भक्त पहले थे और भक्त बाद में। उनके समय में लोग परस्पर आपस में धर्म व जाति के नाम पर मर कट रहे थे , ईश्वर को राम रहीम , अल्लाह में बांट रहे थे तो ऐसे समय में यह एक सुरक्षा कवच के रूप में दिखाई देते हैं और इस यथार्थ को प्रकट करने के लिए जमकर सभी मजहबों के अनुयायियों , इन धर्म के ठेकेदारों को खरी खोटी सुनाई । संत कबीर को यदि उस समय का महात्मा गांधी कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। काफी हद तक राष्ट्रपिता गांधी जी भी कबीरदास के यथार्थ दृष्टिकोण से प्रभावित थे। गांधी जी को कबीरदास का अवतार भी कह सकते हैं जिस तरह गांधी जी को चालीस कोटि भारतीय जनता के हृदय का सम्राट कहा जाता है उसी तरह कबीरदास जी भी है इन्होंने भी अपने समय की दलित और पीड़ित जनता के हृदय के हृदय को आवाज दी है। वैसे ही गांधी जी ने भी जिस प्रकार से हिंदू - मुस्लिम एकता का समर्थन किया और सभी

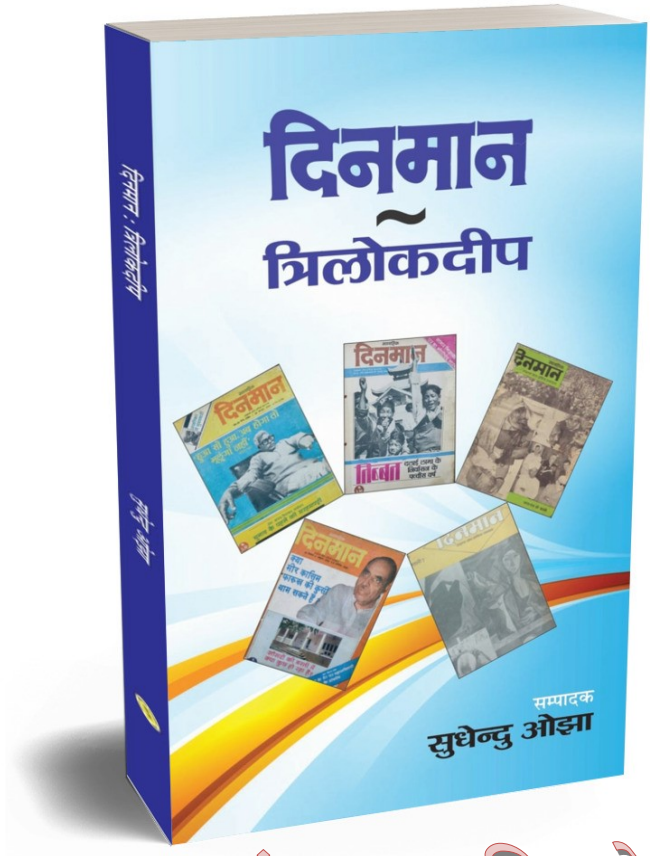

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

को मिलजुलकर रहने की सलाह दी। इसे सभी समुदायों के लोग एक-दूसरे के साथ मिलजुल कर रहने लगे । इस एकता का परिणाम यह हुआ कि सभी मजहबों ने परस्पर मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ जंग लड़ी और कामयाब भी हुए। अखंड भारत की एकता रूपी हथियार से लैस होकर ही हमें एक लंबे संघर्ष के बाद स्वाधीनता प्राप्ति हुई।

कबीर दास ने जाति धर्म को राष्ट्र एकता में बाधक माना है। धर्म विशेष पर इनकी कुछ पंक्तियां हैं " हिंदू कहे मोहि राम पियारो , तुर्क कहे रहिमाना , कबीरा लड़ि - लड़ि दो मुवै यह मर्म काहु न जाना। " इन्होंने इन दोनों मजहबों को काफी हद तक एकजूट करने का हरसंभव प्रयास किया और इसमें ये सफल भी रहे हैं। बाह्य आडंबरों , रूढ़ियों इत्यादि के नाम पर उस समय प्रभावशाली लोगों द्वारा समाज को जाति , धर्म इत्यादि कर खंडित किया जा रहा था तो कबीर ने ऐसा करने वालों को बख्शा नहीं। चाहे वह बादशाह हो या कोई और ।" **कबीर खड़ा बाजार में लिए कुल्हाड़ा हाथ , अब घर जारो तासु के जो चले हमारे साथ। " 2** जाति , धर्म , हिंसा , बलि इत्यादि का समर्थन करने वालों पर सीधे निर्भय होकर प्रहार किया है -- जैसे **ऊंचे कुल का जनमिया करनी ऊंच न होई , सुबरन कलस सुरा भरा साधू निंदत सोय ।। "** हिंसा करने वालों पर चाहे हिन्दू हो या मुसलमान जैसे **बकरी पाति खात है ताकि काड़ी खाल , जो नर बाकरी खात है तिनको कौन हवाल ।3 "** ये उस समय ऐसी बुराईयां थी जिसने हमारे समाज को खंडित कर दिया था और कबीर ने सभी को एकजुट करने के लिए इन बुराईयों की जमकर निंदा की है क्योंकि ये कुरीतियां ही देश की एकता व अखंडता को बांधा पहुंचाती है।

इसी तरह ही अन्य संतों ने भी राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है और इनकी यह एकता सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की कोटि में आती है , संतों में दादू दयाल , रैदास , नामदेव , गुरू नानक देव , सुंदर दास एवं नामदेव इत्यादि के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता है। इन महान विभूतियों ने पारस्परिक ईर्ष्या , द्वेष , अराजकता , वर्ण व्यवस्था को त्याग कर जातिगत भेदभाव मिटाने का संदेश दिया। दादू को उनकी दयालुता के कारण दादू दयाल भी कहा जाता है। जन्मभूमि गुजरात में होने के बावजूद कर्मभूमि राजस्थान को बनाया है। दादू दयाल ने अपने ब्रह्म संप्रदाय के आधार पर लोगों को एकजुट करने का यथासंभव प्रयास किया। ये चाहते थे कि इंसान (तू - तू),(मैं और मेरा(से ऊपर उठे और परस्पर सद्भावना के साथ जीवन यापन करे। जैसे इनकी पंक्तियां हैं ------**दादू दोनों भाई हाथ पग , दोनों भाई कान , दोनों भाई नैन है , हिंदू - मुसलमान । 4 "** रैदास रामानंद के शिष्य हुए और मीराबाई के गुरु हैं इन्होंने हिंदू - मुस्लिम एकता पर बल दिया और धर्म के नाम पर परस्पर वैमनस्य उत्पन्न करने वालों की निंदा की। इनके समय में मुस्लिम शासक राजा कर रहे थे और हिंदू एक पराजित जाति थी। दोनों मजहब एक- दूसरे से नफ़रत करते थे। एक तरफ मुल्ले अपने मजहब को श्रेष्ठ समझकर सभी को इस्लाम स्वीकार करने का दबाव डाल रहे थे। इसी परस्पर वैमनस्य व खींचतान से समाज निरंतर पतनोन्मुखी था। इस खिंचतान को जड़ से समाप्त करने के लिए रैदास ने कबीर की तरह दोनों मजहबों के कुकर्मों की खुलकर निंदा की। धर्म के नाम पर लोगों को खंडित करने वालों और रुढ़िवादी , अंधविश्वास , राग द्वेष व नफरत की ज्वाला प्रज्वलित करने वालों को खुलकर फटकार लगाई है और उन्हें चुनौती तक दे डाली। जैसे हिंदुओं में तीर्थाटन , गंगा स्नान व चार धामों का विशेष महत्व है , ये एक रूढ़ि है और कुछ लोग अल्लाह के नाम पर व अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु लोगों

को भ्रमित कर समाज को खंडित करते हैं , वह चाहे हिंदू हो या मुसलमान सभी ऐसे करते हैं तो इस तरह की अवधारणा का इन्होंने खंडन किया है। मन व आचरण शुद्धि पर बल दिया है। मन साफ हो , किसी के प्रति नफ़रत न हो , छल कपट न हो तो समझ लेना वही सार्थक जीवन है। जैसे इन्होंने कहा है ' **मन चंगा तो कठौती में गंगा** । ' इन्होंने एक आदर्श समाज की परिकल्पना की थी और इनकी इस तरह की विचारधारा से बाबा साहेब आंबेडकर जी और राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी भी बहुत प्रभावित हुए। गांधी जी ने जो स्वदेशी अपनाओ पर बल दिया और श्रम की महत्ता को स्वीकार करते हुए भारतीय जनता को जागरूक किया , ये सब संत रविदास)रैदास) के विचारों का ही प्रभाव है चूंकि गांधी जी ने रैदास के श्रम सिद्धांत को गहराई से समझा है । रैदास को संत कहकर कुछ आलोचकों ने उनके क्रांतिकारी विचारों को कुचलने की कोशिश की है जो उनके साथ एक बड़ा अन्याय हुआ है। रविदास (रैदास) दूरदर्शी सोच रखने वाले व्यक्ति थे । क्रांतिकारी वैचारिक अवधारणा , राष्ट्रीय सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना तथा युगबोध की सार्थक अभिव्यक्ति के कारण उनका वैचारिक दृष्टिकोण आज छः सौ वर्षों के पश्चात भी प्रासंगिक हैं। वैसे ही महाराष्ट्र के संत नामदेव भी इसी संत परंपरा में आते हैं। संत नामदेव के हृदय में भी राष्ट्र प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था और इन्होंने भी अपनी वाणी से लोगों को एकजुट करने का काम किया । हिंदू और मुसलमान दोनों के पाखंडों का पर्दाफाश करते हुए ये नजर आते हैं जैसे इनकी सुप्रसिद्ध पंक्तियां भी हैं " **हिंदू पूजै देहरा , मुसलमान मसीद , नाम सेविया जहँ देहरा न मसीद " 5**

प्रेम मार्गी सूफी संतों का भी राष्ट्र प्रेम गजब का रहा है । सूफियों ने मुसलमान होते हुए भी भारतीय संस्कृति को अपनाया व उसका यशोगान किया है जो कि स्वयं में एक असाधारण बात है। सूफी काव्य जगत के जीवंत दस्तावेज़ मलिक मुहम्मद जायसी जी इनमें प्रमुख है जो पद्मावत में हिंदू त्योहारों जैसे होली , दीपावली , बैशाखी , एवं अन्य सभी भारतीय पर्वों का वर्णन करते हुए भारतीय संस्कृति का यशोगान करते दिखाई पड़ते हैं। इतना ही नहीं बल्कि हिंदुओं की पौराणिक कथाओं के संदर्भ देते हुए शिव , राम , कृष्ण , अर्जुन , ब्रह्म व रावण की भी चर्चा करते हैं। भारतीय संस्कृति का मूल भाव परस्पर एकरूपता ही है , यही संदेश भारतीय संस्कृति देती है जिसका जायसी ने अपने काव्य जगत में वर्णन किया है।" सूफियों ने तसव्वुफ की उदयभूमि में भी सभी धर्मों से ऊपर उठकर सादे जीवन और निश्छल ईश्वरीय प्रेम पर जोर दिया है । सच्च पूछिए तो भक्ति साहित्य के लोकप्रिय श्रेष्ठ कवि चार ही है इनमें कबीर , जायसी , सूर और तुलसी दास जी ही प्रमुख है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने जायसी के विषय में कहा है कि ये बड़े भावुक भगवद्भक्त थे और अपने समय में बड़े ही सिद्ध और उच्च कोटि के फकीर माने जाते हैं 6। इन्होंने पद्मावत महाकाव्य लिखकर जो स्थान पाया है , वह स्थान अन्यत्र को मिलना असम्भव है। " पद्मावत जायसी का ही नहीं बल्कि समूची हिंदी काव्य परंपरा का एक दुर्लभ रत्न है। मुस्लिम होते हुए भी ठेठ अवधी भाषा में इसकी रचना की जो कि इनके सात्विक चिंतन की ही उपज है। पद्मावत महाकाव्य में जो भारतीय संस्कृति का चित्रण इन्होंने किया है यह इनके राष्ट्र प्रेम व चेतना का ही परिणाम है। साहस , त्याग , शौर्य और पराक्रम , संवेदनशीलता , अहिंसा व स्त्री सम्मान इत्यादि भारतीय जीवन दर्शन ही तो है । सूफियों ने तो अपनी रचनाओं के नाम ही स्त्रियों के नाम पर ही रखे हैं और इन्हें ईश्वर या अल्लाह तक कह डाला । सूफियों या प्रेमाख्यान कवियों का मजहब , जाति , संप्रदाय से ऊपर उठकर संपूर्ण मनुष्यता

के बारे में चिंतन करना एक राष्ट्रीय चेतना ही तो है क्योंकि जब मनुष्य परस्पर वैमनस्य , जाति - धर्म , संप्रदाय इत्यादि से ऊपर उठ जाता है तो राष्ट्र प्रेम का आविर्भाव होता है। इन सभी सामाजिक व धार्मिक कुरीतियों में पड़े रहते हुए राष्ट्र प्रेम नहीं उपज सकता अतः इस गहरे मैले कुंए से बाहर निकलकर ही यह संभव है। अतः सूफी कवियों की जीवन दृष्टि इन सबसे ऊपर उठकर संपूर्ण प्रकृति के हितार्थ चिंतन मनन करने की है जोकि वसुधैव कुटुंबकम् सदृश ही तो है ।

उसी प्रकार भक्तिकाल की सगुणधारा के कृष्ण भक्त कवि सूरदास जी है । वे वल्लभाचार्य जी के शिष्य थे तथा अष्टछाप के कवियों में सर्वश्रेष्ठ है। वल्लभाचार्य जी के पुष्टि मार्ग में दीक्षित होने से पूर्व सूर एक संत थे। जनवादी कवि होने के नाते सूर ने जनता का यथार्थ प्रतिनिधित्व करते हुए नायक श्री कृष्ण को जन नायक के रूप में प्रस्तुत किया। ब्रज प्रदेश , मथूरा व वृंदावन के लोगों को अपनी धरती से अपार प्रेम है और श्रीकृष्ण वहां के आराध्य देव व राजा है। अपने भक्तों की रक्षा के लिए हर वक्त उनके साथ रहते हैं। दुष्ट कंस एवं दुसरे शत्रुओं का संहार करने वाले श्रीकृष्ण है । सूर ने अपनी भक्ति के माध्यम से परोक्ष रूप से लोक कल्याण पर बल दिया । जातिगत दुष्प्रचार करने वाले व इस तरह परस्पर वैमनस्य भाव उत्पन्न करने वालों से बचने की सलाह दी है। वल्लभाचार्य जी स्वयं जाति धर्म के सख्त खिलाफ थे और इन्होंने अष्टछाप के कवि कृष्णदास जो कि कुनबी शुद्र जाति से संबंधित थे को श्रीनाथ मंदिर में अधिकारी पद पर नियुक्त किया था।

भक्ति काल में राष्ट्रीय चेतना को बल देने वाला सगुण भक्त कवियों में रामभक्ति शाखा के प्रवर्तक व लोकमंगल , लोकमानस , लोकरक्षक , लोकसंग्रह एवं समन्वय के संरक्षक तुलसीदास जी है। इन्होंने अपने काव्य में मध्यकालीन समाज की दूर्दशा का वर्णन करते हुए तत्कालीन समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का भरपूर प्रयास किया। अपने काव्य में इन्होंने समस्त मानव जाति की एकरूपता पर बल दिया। तुलसी दास जी ने अपने काव्य में विविध प्रसंगों में राष्ट्रीय भावना को व्यक्त किया है। राम का अपनी जन्मभूमि के प्रति अनन्य अनुराग आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। गोस्वामी तुलसीदास जी हिंदी के उन महान कवियों में अग्रगण्य है जिनकी कविता का मूल प्रयोजन " बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय " होता है। वे कविता का उद्देश्य लोकमंगल का विधान करना मानते हैं। तुलसी ने अपने चरितनायक राम को एक आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत करते हुए लोकशिक्षा का विधान किया है। उनका संपूर्ण काव्य ही समन्वय की विराट चेष्टा है इसलिए तो हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा भी है कि लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। तुलसी दास महात्मा बुद्ध के पश्चात भारत के सबसे बड़े लोकनायक थे। गोस्वामी तुलसीदास जी भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। उनकी दृष्टि अत्यंत विस्तृत एवं

हिंदी का उद्धार करूँगी

बाधाएँ कितनी भी आएँ,
सबको ही मैं पार करूँगी।
हिंदी में ही कार्य करूँगी,
हिंदी का उद्धार करूँगी।।

हिंदी बन जाए राष्ट्र भाषा,
सबकी है यही अभिलाषा।
जन-जन के इस सपने को,
मिलकर साकार करूँगी।
हिंदी में ही कार्य करूँगी,
हिंदी का उद्धार करूँगी।।

मूल छवि दिखे आईने में,
सीधा दस्तक दे जो सीने में।
बनाकर कलम को तलवारें,
ऐसे शब्दों से मैं वार करूँगी।
हिंदी में ही कार्य करूँगी,
हिंदी का उद्धार करूँगी।।

हिंदी ने मान-सम्मान दिलाया,
निज अस्तित्व का भान कराया।
जीवनपर्यंत साहित्यसाधना कर,
हिंदी का प्रचार-प्रसार करूँगी।
हिंदी में ही कार्य करूँगी,
हिंदी का उद्धार करूँगी।।

हिंदी की हूँ एक अनुयायी,
निस्वार्थ सेवा करने आयी।
कर्मों का जो भी फल मिलेगा,
उसको सहर्ष स्वीकार करूँगी।
हिंदी में ही कार्य करूँगी,
हिंदी का उद्धार करूँगी।।

सोनल मंजू श्री ओमर

राजकोट, गुजरात

व्यापक थी। इनके काव्य में लोकमंगल का जो भाव विद्यमान है वह उनकी सामाजिक , सांस्कृतिक दृष्टि से उद्भूत है। इन्होंने माना है कि जिस समाज में महापुरुषों , स्वामी की सेवा में मर मिटने वाले सच्चे साधकों , प्रजा का पुत्रवत पालन करने वाले शासकों के प्रति श्रद्धा और प्रेम का भाव समाप्त हो जाएगा उस समाज का कल्याण कदापि नहीं हो सकता। तुलसी दास जी आदर्श समाज की परिकल्पना करते हैं। जैसे राजा दशरथ जी का आदर्श राज्य है। इनके राज्य में सभी सुखी है। राम आदर्श पुत्र , आदर्श पति , मित्र , भक्त के रूप में है वैसे ही सीता मां एक आदर्श पुत्री , पतिव्रता व बहु है। समाज को खंडित करने वाले लोगों पर इन्होंने भी तीखा प्रहार किया है जैसे कुछ पंक्तियां भी है जो कवितावली से ली गई है। **धूत कहो , अवधूत कहौ , रजपूत कहो जुलहा कहौ कोऊ। काहू की बेटी सौं बेटा न ब्याहब काहू की जाति बिगार न सोऊ। "** 7 तुलसी दास जी ने जिस युग में काव्य रचना की वह मुगलों का शासनकाल था। । कवितावली की पंक्तियों के माध्यम से इन्होंने तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण किया है जैसे " **खेती न किसान को , भिखारी को न भीख भलि , बनिक को बनिज , न चाकर को चाकरी , जीविका विहीन लोग सिद्यमान सोच बस , कहें एक एकन सौं कहां जाइ का करी।। "** 8 रामचरितमानस के उतरकांड में भी तुलसी दास जी ने तत्कालीन स्थिति का मार्मिक चित्रण किया। जैसे ब्राह्मण वेद बेच रहे हैं , हर तरफ अधर्म का बोलबाला है , और राजा प्रजा का शोषण कर रहा है , वेदों की बात कोई नहीं मानते। जैसे **द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन , कोउ नहिं मान निगम अनुसासन "** लोगों का आपस में परस्पर वैमनस्य , धर्म के नाम पर आम जनता को भ्रमित करने का काम पंडित कर रहे थे। हिंदू धर्म ही अनेकों संप्रदायों में विभाजित हो गया था। शैव , वैष्णव , शाक्तों इत्यादि का आपस में संघर्ष चल रहा था और वैसे ही इस्लाम धर्म में भी हो रहा था। इस परस्पर वैमनस्य को समाप्त करने के लिए तुलसी दास जी ने प्रयास किया और कुछ हद तक एकजूट करने में वो सफल भी हुए हैं। उन्होंने शैव - वैष्णवों , शाक्तों की आपसी तू - तू , मैं - मैं का अंत करने के लिए राम के मुख से कहलवाया है -- **शिव द्रोही मम दास कहावा , हो नर मोहि सपनेहु नही पावा। "** 9 जिससे की शैव -वैष्णव-शाक्त इत्यादि पुनः चिंतन मनन करने पर विवश हुए। तुलसी दास जी ने काव्य में समन्वय सिद्धांत देकर भारतीय समाज को आश्चर्यचकित कर दिया और एक तरह से नूतन जीवन दृष्टि संसार को दी। परंपरागत रूढ़ियों से ऊपर उठकर स्वजन हिताय की बात की। उदाहरणार्थ कोई उच्च और निम्न नहीं है। व्यक्ति कर्मों से ही सब कुछ बनता है जैसे भगवान राम नीच शबरी के घर जाकर उसके जूठे बैर खाते हैं चूंकि यह नीच शबरी के सात्विक कर्मों और सच्ची भक्ति का ही फल है। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें लोकनायक यूं ही नहीं कहा है बल्कि इनके कर्म ही इस तरह के थे। हिंदू - मुस्लिम , शैव- वैष्णव , राजा - प्रजा , पिता - पुत्र , पति-पत्नी , लोक और शास्त्र का , गार्हस्थ्य और वैराग्य का , भक्ति और ज्ञान का , पांडित्य और अपांडित्य का , भाषा और संस्कृति का , निर्गुण और सगुण भक्ति का , ब्रज और अवधि का समन्वय। रामचरितमानस शुरू से लेकर आखिर तक समन्वय का ही काव्य है और इन्होंने रामचरितमानस की कथा को इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि उस समय के हिंदू जो शैव , वैष्णव और शाक्त संप्रदायों में बंटे हुए थे , एक हो गए। इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से यही संदेश समाज को दिया कि लोग परस्पर प्रेम से जीवन यापन करे , कर्तव्यनिष्ठ बने , दुखी इंसान की आंखों के आंसू पोंछे। दूसरी तरफ जो असुरी शक्तियां हैं उनके विनाश के लिए प्रभु समयानुसार धरा पर अवतरित होते हैं जैसे इन्होंने कहा भी है ---- " **जब जब होइ धर्म की हानि , बढ़हि असुर अधम्म अभिमानी , तब -तब धरि प्रभु विविध सरीरा , हरहिं कृपा निधी सज्जन पीरा।"** 10

गोस्वामी तुलसीदास जी की राष्ट्र चेतना उच्च कोटि की है। संपूर्ण समाज को एकजुट करने का इन्होंने जो प्रण किया था उसमें वे अपनी समन्वयवादी अवधारणा से सफल भी रहे हैं यही कारण है कि आज सैंकड़ों वर्ष गुजर जाने पर भी ये प्रासंगिक है और इनका आदर्श समाज और रामराज्य आज के समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। आज भारतीय लोग तुलसीदास के आदर्श समाज के लिए तरसते हैं और हमारी व्यवस्थाएं भी राम राज्य की दुहाई देती है , ये तुलसीदास की ही देन है जिन्होंने संपूर्ण समाज को एक राष्ट्र बनाते हुए एकता के सूत्र में पिरोने का असाधारण काम किया।

वैसे ही मध्यकाल में यदि हम बात करें सिक्ख धर्म गुरुओं की तो इनमें सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरू नानक देव जी हैं जो एक सच्चे देशभक्त थे और पहले ऐसे संत है जिन्होंने विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध आवाज उठाई --- " **खुरसान खमसान कीआ हिंदुस्तान डराइया , आपै दोस न देई करता जपु करि मुगल चढ़ाइया, एती मार पई कुर लाणै तै की दरदू न आइया"11** भले ही भगवान को विदेशी आक्रांताओं द्वारा किए गए अत्याचारों का दर्द महसूस हुआ या नहीं , कोई नहीं जानता है , परंतु नानक को अवश्य हुआ है। सिक्खों के पांचवें गुरु अर्जुन देव को राष्ट्र प्रेम के चलते जहांगीर की अमानुषिक यातनाओं का शिकार होना पड़ा और इसी कारण वो दिव्य लोक चले गए। गुरू तेग बहादुर अत्यंत वीर और साहसी थे। हिंदू धर्म एवं राष्ट्रीयता के हितार्थ शत्रु औरंगजेब ने इनकी हत्या करवा दी थी। गुरू गोविंद सिंह ने मुगलों के खिलाफ सैनिक का बाना धारण कर लिया और अनेकों युद्ध लड़े । भारतीयता के हितार्थ ही उन्हें अपने चारों पुत्रों की बलि देनी पड़ी।

"भक्ति काल का जो समय है यह अपने पूर्ववर्ती और परवर्ती साहित्य से निश्चित रूप से उत्कृष्ट है । यह व्यष्टि और समष्टि का एक जीवंत

दस्तावेज है । 12 मध्यकाल का भक्ति साहित्य समूचे भारतीय इतिहास में अपने ढंग का अकेला साहित्य है। इसी का नाम भक्ति है और इसमें भक्ति को माध्यम बनाकर संपूर्ण राष्ट्रीय चेतना की बात हर एक संत ने की है और एकता स्थापित करने के लिए अपने अपने समय में बहुमूल्य योगदान दिया और सफल भी हुए। इसलिए तो इस समय को हिंदी साहित्य जगत का स्वर्ण युग भी कहा जाता है।

निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि मध्यकालीन साहित्य भारतीय धर्म और संस्कृति का स्वर्ण युग रहा है। भारतीय दर्शन , राष्ट्रीय चेतना , संस्कृति , सभ्यता , आचार - विचार सभी कुछ मध्यकालीन साहित्य में देखने को मिलता है। यदि हमें मध्यकालीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करना हो तो हमें इस युग के काव्य का अध्ययन करना पड़ेगा । इस युग के संतों रूपी कवियों ने जो भी लिखा है वह अपनी आत्मा की प्रेरणा से व राष्ट्र चेतना के प्रयोजन से लिखा है। भक्ति इनका प्रत्यक्ष रुप रहा है लेकिन उस भक्ति के माध्यम से ये संपूर्ण समाज को एकजुट करने के लिए प्रयासरत रहे और सफल भी हुए। इस युग का साहित्य हृदय के अंतःकरण से प्रवाहित हुआ है और सीधे दिल पर ही प्रभाव डालता है। स्वांत: सुखाय , जनहित और राष्ट्र हित ही मध्यकालीन काव्य का प्रयोजन रहा है।

संदर्भ -- ग्रंथ

1. उपाध्याय अयोध्या सिंह हरिऔध , कबीर वचनावली , द्वीतिय संस्करण , पृष्ठ सं 100

2. बाबू श्यामसुंदर दास , कबीर ग्रंथावली , 14वां संस्करण , पृष्ठ सं 48

3. रैदास की वाणी , इलाहाबाद , द्वीतिय संस्करण

4. नामदेव गाथा , प्रकाशक - संचालक , शासकीय मुद्रण व लेखन सामग्री

5. डॉ के. के. शर्मा , हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय भावना , पृष्ठ सं 46

6. डॉ बच्चन सिंह , हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास , पृष्ठ सं 94

7. वही , पृष्ठ सं 129

8. वही 140,141

9. आचार्य रामचंद्र शुक्ल , हिंदी साहित्य का इतिहास , पृष्ठ सं 95 ,96

10 तिवारी अशोक , भक्ति काव्य , पृष्ठ सं 18

11. वही पृष्ठ सं 21

12. वही , पृष्ठ सं 28

कुछ समय पहले की बात है

कुछ समय पहले की बात है

लोग एक दूसरे से ईर्ष्या भी जरा सलीके से ही रखा करते थे

दालान पर बैठके होती थी, तमाम तरह की बातें चाय के कप में घुलती सी..

हास - परिहास के रंग में सराबोर महफिलें

पेट्रोमैक्स की रौशनी में कीर्तन का रंग

हारमोनियम, ढोलक से निकलती सुर - लहरियां

चदरिया झीनी रे झीनी अष्ट कमल का चरखा बनाया, पांच तत्व की पूनी चदरिया झीनी रे झीनी"

कुछ समय पहले की बात है

राह चलते भी दुआ - सलाम हो जाती थी

समय की कमी का रोना कोई रोता नही था

आबो - हवा ही कुछ ऐसी थी, की सब काम आसान हो जाता था!

हर कोई बस इंसान हुआ जाता था!

कुछ समय पहले की बात है!

आरती ठाकुर

अन्तर्द्वन्द्वों का अधूरा कथानक: मनगिरिया

समीक्षा

डॉ. राम गरीब पाण्डेय 'विकल'

मानवीय संचेतना जब संवेदना के क्षेत्र में प्रवेश करती है, तब वह भावों के भँवर में कब तक हिचकोले खायेगी और कब किस तट का स्पर्श करेगी, इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। यह मनुष्य की भाव दशा है, जहाँ बुद्धि पक्ष का हस्तक्षेप नहीं हो पाता। साहित्य के सृजन का मार्ग इसी भाव दशा से निकलता है। 'कविता क्या है' नामक निबन्ध में आचार्य शुक्ल लिखते हैं- ''जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।'' साहित्य की चाहे कोई विधा हो, उसके सृजन के पूर्व रचनाकार का उसकी भावदशा से तादात्म्य होना आवश्यक होता है। लघु कलेवर की कविताओं में जहाँ छोटे-छोटे भाव-चित्र सामने होते हैं, वहीं दीर्घ कलेवर की कविता या कथा-साहित्य आदि के सृजन के समय रचनाकार के सम्मुख समूचे कथा-प्रसंग का एक भाव-चित्र या चल चित्र सम्मुख होता है। ऐसा, भाव दशा से तादात्म्य होने पर ही सम्भव हो पाता है।

डॉ. राम गरीब पाण्डेय 'विकल'

रामानुज 'अनुज' रीवा (म.प्र.) के एक ऐसे ही

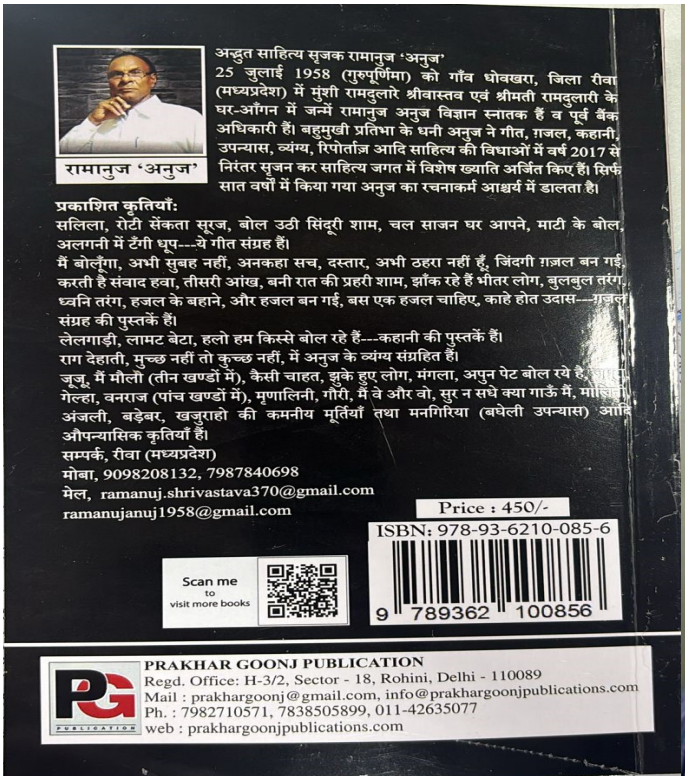

सर्जक हैं, जो प्रायः हर पल किसी न किसी भाव दशा के सहयात्री होते हैं। यही कारण है, कि उनकी लेखनी से साहित्य की विविध विधाओं में प्रचुर परिमाण में सृजन हो चुका है और हो रहा है। पद्य साहित्य में उन्होंने गीत, ग़ज़ल, विविध छन्द आदि की रचना की है, तो गद्य साहित्य में उनकी कहानियाँ और उपन्यास भी उनके सृजन के खाते में दर्ज हैं। रीवा, 'बघेली बोली' का अंचल है तो बघेली बोली का केन्द्र बिन्दु भी है और अनुज जी ने अपनी साहित्यिक यात्रा में, अपनी बोली को कभी विस्मृत नहीं किया है।

बघेली बोली में काव्य रचना के सूत्र पन्द्रहवीं शताब्दी से मिलने लगते हैं, किन्तु कथा-साहित्य की शुरूआत बीसवीं शताब्दी में हो पायी है। कथा-साहित्य में बघेली कहानियों का लेखन विरल ही सही, किन्तु अनवरत हुआ है। कथा-साहित्य की विधा उपन्यास का शुभारम्भ बघेली में डॉ. अभयराज त्रिपाठी के उपन्यास 'कुटी केर महराज' (सन् 2004) से होती है। हालांकि कतिपय निन्दारसानुरागियों को 'कुटी केर महराज' को उपन्यास मानने में असुविधा होती है, इसके बावजूद यह बघेली का पहला उपन्यास है। ऐसा कहने और मानने में संकोच का कोई कारण नहीं दिखता।

'कुटी केर महराज' से प्रारम्भ बघेली उपन्यास की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए रामानुज 'अनुज' का बघेली उपन्यास 'मनगिरिया' सन् 2024 में प्रकाश में आया है। इसे बघेली कथा-साहित्य की परम्परा में एक मजबूत कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। मनगिरिया इस उपन्यास की नायिका है, जिसके इर्द-गिर्द यह उपन्यास गति करता है। मनगिरिया के कथानक को उभारने हेतु जिन प्रासंगिक कथाओं की आवश्यकता हुई है, अनुज जी ने उसे समुचित रूप से उपन्यास में संयोजित किया है।

'मनगिरिया' उपन्यास में अनुज जी ने जिन अन्तर्द्वन्द्वों का समावेश किया है, वह उपन्यास में एक अलग और मौलिक आस्वाद की सृष्टि करते हैं। उपन्यास की पृष्ठभूमि बघेली अंचल है और बघेली अंचल अभी भी ग्राम्य संस्कृति से सम्पन्न है। यहाँ के रीति-रिवाज, सामाजिक संरचना, परम्पराएँ, हवा, पानी, मिट्टी के अपने रंग हैं, तो जिन्दगी की जटिलताओं को उजागर करती अंचल की अपनी समस्याएँ भी हैं। उपन्यास की नायिक मनगिरिया भी, इसी बघेली अंचल में सतना जिले के कोठारकला गाँव की रहने वाली है। धारकूँड़ी के समीपी इस गाँव की अपनी विशेषताएँ भी हैं। एक ओर यह घनघोर जंगल से सटा है, तो दस्यु गतिविधियों से भी प्रभावित है।

बघेली अंचल की सामाजिक परम्पराएँ, जाति प्रथा, धन और जन से सम्पन्नों का दबदबा कोठारकला गाँव में भी व्याप्त हैं। इसी गाँव के कहार की बेटी मनगिरिया के जीवन का पहला अन्तर्द्वन्द्व इसी गाँव से शुरू होता है। दस्युओं को संरक्षण देने वाले दबंग फौजी की हवेली में जश्न के दौरान, बेगारी करने उसकी माँ के साथ ही मनगिरिया भी जाती है और वहीं शराब के नशे में धुत्त फौजी का संरक्षण प्राप्त सुखेन के द्वारा बलात्कार की शिकार हो जाती है। गाँव में बात फैलते देर नहीं लगती,

किन्तु फौजी के दबाव के कारण पुलिस तक मामला नहीं पहुँच पाता। अन्ततः चार महीने का गर्भ लेकर मनगिरिया घर और गाँव छोड़कर, गंगा मैया की गोद में अपनी जीवन लीला समाप्त करने का निश्चय कर घर से बहुत दूर प्रयागराज पहुँच जाती है।

हमारी सनातन मान्यता है, कि जीवन देने और लेने का अधिकार केवल ईश्वर को है। उसकी इच्छा के बगैर हम चाहकर भी कुछ नहीं कर सकते। मनगिरिया के साथ भी यही होता है। अपने जीवन को समाप्त करने का संकल्प मन में लिए वह भीषण ठण्ठ के मौसम में, बारिश में भीगती हुई जब माघ मेला क्षेत्र में भटक रही होती है, तभी उसकी मुलाकात करनदास से होती है और हठपूर्वक सारा हाल जानने के बाद वह मनगिरिया को अपने गुरु महन्त गोकुलदास की कुटी में ले आते हैं। यहाँ से मनगिरिया के जीवन में एक नया मोड़ आता है। महन्त गोकुलदास उसे अपनी बेटी के रूप में अपने आश्रम (हरिद्वार) में स्थान देते हैं और समय आने पर वह एक स्वस्थ, सुन्दर कन्या को जन्म देती है।

महन्त गोकुलदास के आश्रम में रहने वाला उनका प्रिय शिष्य करनदास भी मनगिरिया के गाँव कोठारकला का ही रहने वाला है, जो कुछ समय पहले गृहस्थ आश्रम छोड़कर गोकुलदास के साथ रहने लगा है। एक ही गाँव के होने के कारण मनगिरिया और करनदास एक दूसरे का विशेष ध्यान रखते हैं, तो दूसरी ओर दोनों ही वय जनित आकर्षण से भी आबद्ध होते हैं। मनगिरिया के द्वारा कई बार विवाह प्रस्ताव रखने के प्रसंग उपन्यास में आयुगत स्वाभाविकता और परस्पर विश्वास को पुष्ट करते हैं। जहाँ मनगिरिया अपने भावों को स्पष्टतः व्यक्त करती है, वहीं करनदास मन के भावों को दबाकर कन्नी काट जाते हैं। उपन्यास का यह चित्र उल्लेखनीय है-

''मनगिरिया क बिना बंडी म फेरि देखि के उँ कमरा से जाय लागें। मनगिरिया पकड़ि के अपने मुँहें तरफ फेरि के कहिस- महराज! हमार जीबन बचाय के अब रोजि-रोजि न मारा। एँ से नीक त एक दरकिन मरब रहा।

- तुम का चाहती हो?

- मोंहीं पतनी के रूप म मंजूर करा महराज। हम तोंहरे नाव से माँगि भरै चाहित हएन।

- ई कइसे होइ सकत है? कसमसाय के करनदास कहिन।

- का नहीं होइ सकै। महन्त जी के सेबा औ भगमान के पूजा, बिआह के बादौ कीन जाय सकति है।''

महन्त गोकुलदास को इन दोनों के हृदय में अंकुरित प्रेम का आभास हो जाता है और वह हरिद्वार के अपने आश्रम से पूरे विधि-विधान से दोनों का विवाह सम्पन्न करवाते हैं। प्रयागराज के माघ मेला प्रवास के

हिमालय पर्वत

युगों से खड़ा श्रेष्ठ नगराज अविचल,
विशाल, स्थिर, अडिग, और अचल,
धरती माँ का गौरव गर्व धाम,
भारत देश का अखंड अभिमान,
हिमपति पर्वत श्रंखला है सजग प्रहरी,
बर्फ़ पर खेलती सूर्य की किरणें सुनहरी,
हिमालय की गोद है सभ्यता की साक्षी,
हर-हर महादेव कैलाश पर्वत के वासी,
पावन गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र और कोसी,
बारहमासी नदियों का अविरल बहाव,
चीड़, देवदार शंकुधारी वन का है पड़ाव,
घने जंगल है हिमालय की विरासत,
पशु पक्षियों की है साझा रियासत,
प्रकृति की संपन्नता बखानती घाटियाँ,
केसर की महक से संवरती क्यारियाँ,
अपार प्राकृतिक सम्पदा का आलय।
प्रेम एवं शांति का संदेशवाहक हिमालय|
विश्व शांति के श्वेतपत्र सा हिमालय|

स्मिता श्रीवास्तव

दौरान ही करनदास को मनगिरिया के दुखद अतीत का ज्ञान होता है, तो सुखेन की चर्चा आते ही मनगिरिया के आन्तरिक क्रोध का विस्फोट स्वाभाविक मनोदशा का परिचय देता है।

करनदास भी कोठारकला गाँव का ही ब्राह्मण युवक है, जो गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने के पहले ही महन्त गोकुलदास के आश्रम में प्रवेश कर जाता है। प्रतिवर्ष माघ महीने में अपने गुरु महन्त गोकुलदास के साथ प्रयागराज आता है। मेला क्षेत्र में अपने ही गाँव की लड़की मनगिरिया को संकटग्रस्त पाकर, वह गुरु द्वारा प्राप्त संस्कारों और शिक्षा के अनुरूप उसकी रक्षा करता है। उसे महन्त गोकुलदास के स्थान पर ले आता है। मनगिरिया की बेटी के जन्म के बाद, वह उसकी बेटी से प्रेम करते-करते मनगिरिया की ओर भी आकर्षित होता है। युवावस्था में ऐसा आकर्षण स्वाभाविक भी है, किन्तु अपने गुरु महन्त गोकुलदास के भय और अपने साधुवेश का ध्यान आते ही वह कभी अपने प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं कर पाता। ये अलग बात है कि महन्त गोकुलदास को इस बात का आभास हो जाता है। करनदास की यह मनोदशा और अन्तर्द्वन्द्व दोनों के विवाह पर्यन्त चलता रहता है।

मनगिरिया के साथ सुखेन द्वारा कारित दुष्कृत्य की जानकारी होने के बाद, करनदास के सम्मुख सुखेन के आने पर उसके सामने धर्मसंकट उपस्थित हो जाता है। एक ओर अपने गाँव के परिचित युवक सुखेन की सहायता करना वह अपना धर्म मानता है, तो दूसरी ओर मनगिरिया के सम्मुख सुखेन का नाम लेकर उसे और दुखी नहीं करना चाहता। वह जानता है, कि सुखेन के सामने आते ही मनगिरिया के भीतर से क्रोध का लावा फट पड़ेगा। प्रयागराज से हरिद्वार लौटने की तैयारी होने के समय ही महन्त गोकुलदास द्वारा उसे घायल सुखेन की देखरेख हेतु अस्पताल जाने की आज्ञा, करनदास को भीतर ही भीतर आहत करती है। वह मनगिरिया से दूर रहने की कल्पना मात्र से आहत होता है, किन्तु गुरु के आदेश की अवज्ञा भी नहीं कर सकता। महन्त गोकुलदास के द्वारा मनगिरिया से उसके विवाह की अनुमति मिलने पर, यदि करनदास की मनोदशाओं का संकेत भी किया जाता, तो सम्भवतः कथानक का विकास अधिक रोचक और प्रभावी हो पाता।

उपन्यास की नायिका मनगिरिया से दुष्कृत्य का अपराधी सुखेन, उसी कोठारकला गाँव के ठाकुर घराने का युवक है। सुखेन की दिनचर्या और गतिविधियाँ परोक्ष रूप से इस बात की ओर संकेत करती हैं, कि शिक्षा और रोजगार के अभाव में किस तरह नयी पीढ़ी के युवक गलत परिवेश की ओर उन्मुख होते हैं। मनगिरिया के साथ घटी घटना के बाद किसी कारणवश फौजी भी सुखेन के प्रति उपेक्षा का रुख अपनाता है। उधर घर में भाई-भौजाई के द्वारा उपेक्षा से त्रस्त होकर वह घर छोड़कर प्रयागराज पहुँच जाता है, जहाँ साधुवेश में उसके ही गाँव के युवक करनदास से उसकी भेंट होती है।

परदेश में अपने गाँव-इलाके का कोई अपरिचित भी मिल जाय, तो उम्मीद की किरन तेज हो जाती है, फिर करनदास तो परिचित ही है। रहने का कोई ठौर-ठिकाना न होने के कारण वह करनदास के साथ होना चाहता है, किन्तु करनदास मनगिरिया के कारण स्पष्ट रूप से उसे महन्त जी के स्थान पर आने की अनुमति या न्यौता नहीं दे पाता। इसी सुखेन के अस्पताल में भर्ती होने पर गुरु के आदेश पर करनदास को सुखेन की देखरेख के लिए अकेले प्रयागराज में रुकना पड़ता है। सुखेन के अस्पताल पहुँचने के कारण के पीछे उपन्यासकार ने चाकू के वार से घायल होने का जो उल्लेख किया है, वह कहीं न कहीं असंगति का संकेत करता है। सुखेन यहाँ प्रयागराज में अपरिचित स्थान पर होता है, जहाँ उसका कोई परिचित नहीं है। ऐसी दशा में किसी से दोस्ती या बैर का क्या कारण हो सकता है? वह भी इतनी दूर तक, कि उसे कोई चाकू मार दे। यदि इस चाकूबाजी की घटना का कोई ओर-छोर हो पाता, तो यह सवाल स्वयमेव हल हो जाता।

करनदास और सुखेन के बीच की बातचीत से सुखेन का जो पश्चाताप ध्वनित होता है, वह इस बात की ओर संकेत करता है, कि वह नशे की हालत में किये कुकृत्य पर लज्जित है। घर से तिरस्कृत और अपमानित सुखेन वहीं प्रयागराज में ही किसी होटल में नौकरी करते हुए अपनी ईमानदारी और मेहनत के बल पर अच्छी स्थिति में पहुँच जाता है। उसी होटल में काम करने वाली लड़की से विवाह कर वह अपनी गृहस्थी की शुरूआत भी करता है। मनगिरिया और करनदास के विवाह के पहले, मनगिरिया की बेटी के गंगा में बहने पर अपने प्राणों की चिन्ता किये बिना, सुखेन द्वारा उसे बचाना उसकी सहृदयता की ओर संकेत करता है। सुखेन का अपनी पत्नी के साथ हरिद्वार में मनगिरिया और करनदास के विवाह में सम्मिलित होने के लिए प्राइवेट नौकरी से एक साथ गायब होना, पुनः एक प्रश्न खड़ा करता है। इतना ही नहीं, विवाह समारोह के बाद दोनों देहरादून के लिए भी प्रस्थान करते हैं।

करनदास एक ब्राह्मण युवक है और मनगिरिया उसी के गाँव की कहार जाति की बेटी। ऐसी दशा में जब महन्त गोकुलदास, करनदास के घर जाकर उसके माता-पिता के सामने उसके और मनगिरिया के विवाह की सूचना देते हैं, तब पिता रामदरश मिश्र तो अवाक रह जाते हैं, किन्तु करनदास की माँ अपना आक्रोश सम्हाल नहीं पाती। एक ब्राह्मण के पुत्र का विवाह कहार की बेटी से कैसे हो सकता है? रामदरश मिश्र अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित पुरोहित हैं। उन्हें भी इस बात की चिन्ता है कि- लोग क्या कहेंगे? इसके बावजूद वह दोनों हरिद्वार पहुँचते हैं और विवाह समारोह में शामिल होकर वर-वधू को न केवल आशीर्वाद देते हैं, अपितु करनदास की माँ मनगिरिया से ससम्मान वधूप्रवेश कराने का वादा भी करती है।

रामनुज 'अनुज' के इस बघेली उपन्यास के कथानक की जड़ें

कोठारकला गाँव में हैं, तो इसका विकास प्रयागराज और हरिद्वार में होता है। इसके अलावा प्रसंगवश कुछ अन्य स्थानों का उल्लेख कथावस्तु के विकास के लिए स्वाभाविक रूप से किया गया है। उपन्यास की कथावस्तु के विकास में, अनुज जी की सतर्कता हर जगह दिखती है। इसके बावजूद जो कुछ चूक के रूप में चिन्हित होता है, उसके बारे में शारदा प्रसाद मालवीय का यह मुक्तक ध्यान में रखने योग्य है-

कीच तल में ताल हो या हो कुआँ। दोष से कोई नहीं वंचित हुआ।
रोष घर के दीपकों पर क्यों करें; आरती के दीप में भी है धुआँ।

जो रास्तों पर चलने का साहस दिखायेगा, उस पर धूल भी पड़ेगी। यह धूल इस उपन्यास में भी दिखायी पड़ती है। बघेली बोली में लिखे गये इस उपन्यास में, रीवा अंचल की बघेली शब्दावली और लहजे का प्रयोग तो स्वाभाविक है, किन्तु जहाँ कोठारकला में वर्णित संवादों की बात आयेगी, वहाँ उस अंचल की 'गहोरा बघेली' का रूप प्रभावी होना चाहिए था, जो कहीं नहीं दिखता। इसी प्रकार अन्य स्थानों के संवादों के साथ उस अंचल-क्षेत्र की बोली का ध्यान रखना अधिक प्रभावी कहा जाएगा। बघेली बोली में लिखे गये इस उपन्यास में, कई बार बघेली बोली के साथ न्याय न हो पाना भी निराश करता है। कई बार बघेली के बीच हिन्दी शब्दावली का प्रयोग खटकता है। यह इस ओर भी संकेत करता है, कि बघेली अंचल में रहने वाले भी बघेली के व्यापक स्वरूप से पूर्णतया परिचित नहीं हैं।

देशकाल, वातावरण के मामले में अनुज जी ने उपन्यास में पर्याप्त सतर्कत वरती है, जो सराहनीय है। उपन्यास 'मनगिरिया' को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। अतएव उपन्यास के समापन में मनगिरिया को एक निश्चित दशा तक पहुँचाने की आवश्यकता थी, किन्तु समापन तक पहुँचने पर ऐसा कोई संकेत आभासित नहीं होता। इसलिए यह कहा जा सकता है, कि रामानुज 'अनुज' का यह बघेली उपन्यास 'मनगिरिया', अन्तर्द्वन्द्वों का अधूरा कथानक है। इसके बावजूद उनकी लगन और उनके श्रम हेतु वह बधाई के पात्र हैं।

-000-

सीधी/अगस्त 27, 2024

'गीतायन', प्लाट नं. 685/19

वाटर फिल्टर प्लांट के सामने

तुलसीनगर नौढ़िया, सीधी (म.प्र.) 486661

मोबाइल- 9479825125

प्रकाशक- प्रखर गूँज पब्लीकेशन रोहिणी, दिल्ली

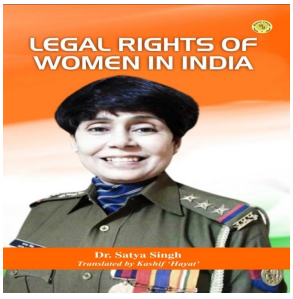

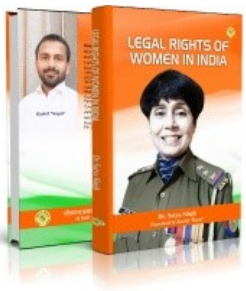

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

सौभाव्य प्रकाशन

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के

साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-3-1
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 118
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

आज
ऐसी दुनिया
मेरी आंखों के आगे से गुजरी
जिसे न कभी देखा था
न समझा था
जानना तो खैर जाना ही नहीं

आज ऐसे शब्द
मेरी आंखों से गुजरा
जिसे न कभी पढ़ा था
न सोचा था
देखना तो खैर देखा ही नहीं

आज
ऐसे रंग
मेरी आंखों से गुजरा
जिसे न कभी महसूस किया
न चाहा ही
रंगना तो खैर रंगा ही नहीं

आज
ऐसी खुश्बू
मेरी नाक से टकराया
जिसे न कभी सूंघा था
न तलाश थी
चूमना तो खैर चूमा ही नहीं

आज
ऐसा ही कुछ
मेरी आंखों से गुजरा
जिसे न कभी गुजरना था
न आशा थी
चाहना तो खैर चाहा ही नहीं

आज
मेरी आंखों के आगे
एक मुक्त नदी बही जा रही थी
एक मुक्त हवा भी
और एक मुक्त पूरा इंसान भी.
अभी भी समय है

देखो
अभी भी समय है
जंगल के पार देखने का
अनछुए ओस को महसुसने का
और कर गुजरने का
जिंदगी की गाड़ी खींचने के सिवा भी

देखो
अभी भी समय है
नदी को लांघ जाते का
रसोई की बाती को सुलगाने का
और मर मिटने का
सीधी राह पर चलने के सिवा भी

देखो
अभी भी समय है
सागर की हिलोरों को
मुठ्ठी में बंद रखने का
दर्द कि छुवन को
सहलाने का
और गीत गाने का
यों ही मर जाने के सिवा भी

देखो
अभी भी समय है
लोरी के गीत नहीं सुनने का
दाल रोटी की चिंता नहीं करने का
और लंबी तान नहीं सोने का
जिंदगी को जिंदा रखने के सिवा भी

देखो
अभी भी समय है
समय को ठीक से पहचानने का
पश्चिमी आंधी रोकने का
और अपनी पहचान बनाने का
दर्ज होने के शब्द मिटने के सिवा भी.

मोतीलाल दास

तुहिन बनाम धूप

नन्ही नन्ही गोल गोल, प्यारी-प्यारी अनमोल।
अमल और धवल, झलकती झलझल।
मनोहार मनभावन, लुभावन तुहिन कन।

मृदुल मखमल सी, हरित दूब सुन्दर सी।
छोटी-छोटी बूंद सी, चरूतना निशि नीर सी।
चमकती वह हीर सी, मन में बसती मोती सी।

भीषण वर्षा के पश्चात, शरद सुहावन ऋतु आती।
प्राची दिशा में जो पीली, स्वर्णिम घाम पसरती।
हँसती खिलखिलाती, सुनहरी आभा छितराती।

अंशुमाली पांव पसारता, ऊर्जा बांटता, जीवन देता।
धरा को सतरंगी रंगता, पंछी भी पंख पसारता।
सुमन सौरभ सुगंध बिगराता, प्रकृति में वह रंग भरता।

अस्तित्व तो है सभी का, रवि तथा रजनी जल का।
धरती और आसमान का, यद्यपि कुछ शाश्वत हैं
वहीं कुछ क्षण भंगुर भी, पर मान सभी का होता है।

दोनो ही वरेण्य रुप है, सभी स्वागत अधिकारी।
मैं ढूँढ़ती नन्ही,सी बूंद को, वाष्पित रजनी जल बूंद को।
करती मैं प्रणाम सभी को, रखती हूँ मान सभी का।

सुषमा सक्सेना, वाराणसी

विश्वकर्मा भगवान

तकनीकी कला के ज्ञाता,
देवालय, शिवालय के विज्ञाता।
सत्रह सितम्बर हैं जन्म दिवस,
कहलाते शिल्पकला के प्रज्ञाता।।

कला कौशल में निपुण,
बनाए सोने की लंका,
विश्वकर्मा भगवान तो है,
सभी देवों के अभियंता।।

शिल्प कला के है जो ज्ञाता,
विष्णु वैकुंठ के हैं निर्माता।
कहते हम प्रभु दो हमको ज्ञान,
क्योंकि हमें कुछ भी नहीं आता।।

पृथ्वी, स्वर्ग लोक के भवन बनाए,
विष्णु चक्र, शिव त्रिशूल तुम्हीं से पाए।
किए सब देवन पर कृपा भारी,
पुष्पक दें कुबेर को किए विमान धारी।।

इंद्रपुरी, कुबेरपुरी और यमपूरी बनाए,
द्वारिका बसा कृष्ण के प्रिय कहलाएं।
तुम्हारे बनाए कुंडल को धारण कर,
दानी कर्ण कुंडल धारक कहलाए।।

विश्वकर्मा जी है पंच मुखधारी
करते है हंस की सवारी,
तीनों लोक, चौदहों भुवन में,
सब करते उनकी जय जयकारी।।

मनु, मय, त्वष्ठा, शिल्पी, दैवज्ञा पुत्र तुम्हारे,
पधार प्रभु इनके संग आज द्वार हमारे।
महर्षि प्रभास, देवी वरस्त्री के सुत आप,
आए हरो प्रभु अब, कष्ट सब हमारे।।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक

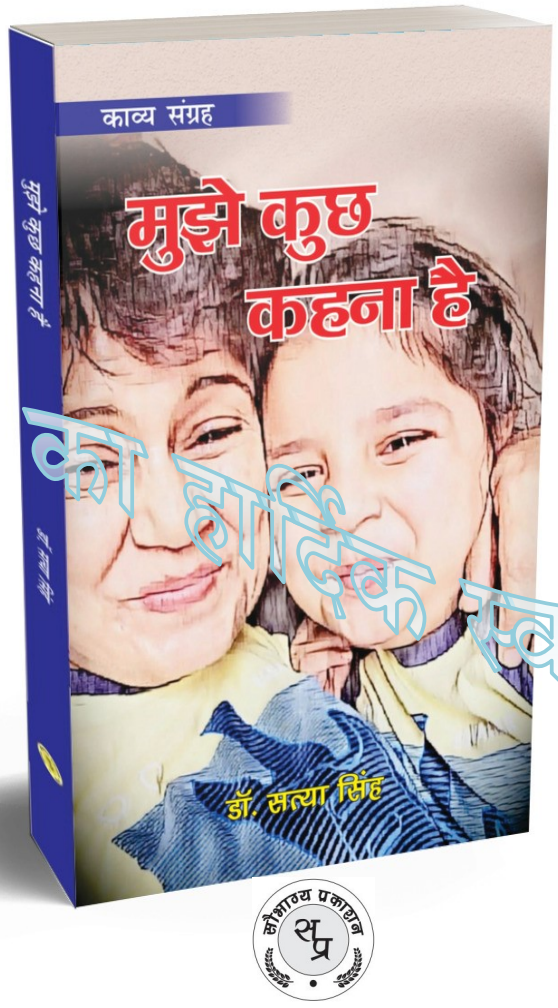

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : : 978-81-963524-8-6
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 126
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

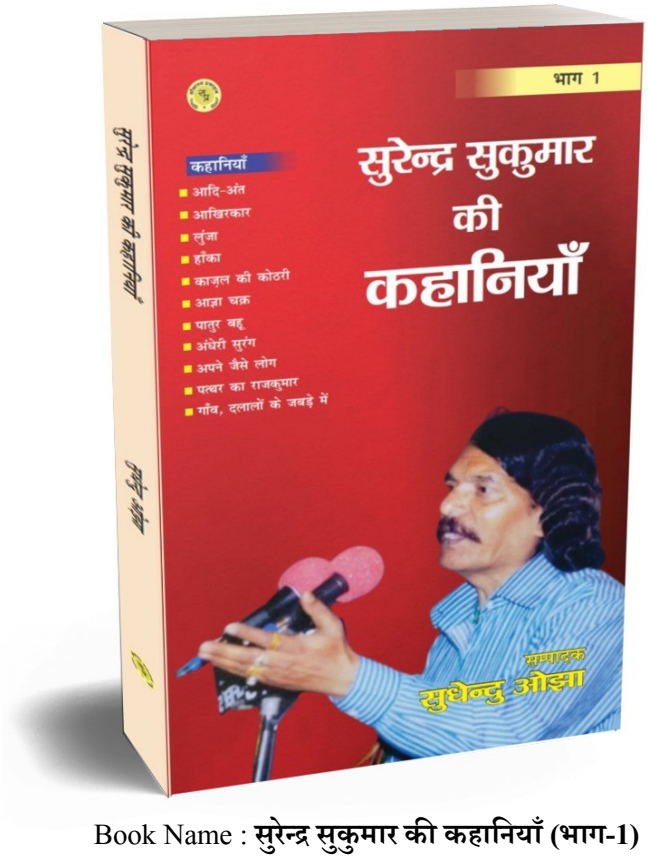

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**
Editor : सुधेन्दु ओझा
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Price : 250/-
Genre Prose

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

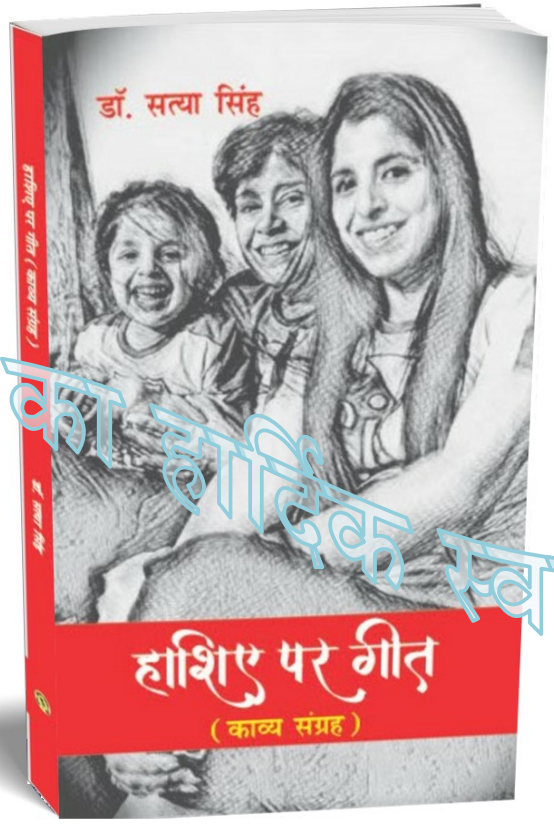

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : हाशिए पर गीत
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-963524-7-9
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 120
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

अण्डमान-निकोबार में हिन्दी की दशा और दिशा

कृष्ण कुमार यादव

हिंदी दिवस (14 सितंबर) पर विशेष :

सुदूर काला पानी कहे जाने वाले अण्डमान -निकोबार में भी हिंदी की गूंज

भारत की भाषायी विविधता हमारी सांस्कृतिक विविधता का मूलाधार है और हिन्दी इस सांस्कृतिक सामासिकता की संवाहक है। यही कारण है कि भारत के हर अंचल में हिन्दी का बखूबी प्रयोग होता है। भारत के सुदूर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी में अवस्थित अंडमान-निकोबार द्वीप समूह भी इससे अछूता नहीं है। इन द्वीपों में हिन्दी उस समय से संपर्क भाषा बनी हुई है जब 1858 में ब्रिटिश सरकार ने स्वाधीनता सेनानियों को कालेपानी की सजा देकर इन द्वीपों में भेजा था। भारत के विभिन्न राज्यों से यहाँ लाए गए यह स्वाधीनता सेनानी भिन्न-भिन्न भाषायें

बोलते थे। ऐसे में आपस में संपर्क और आजादी के जज्बातों को धार देने के लिए उन्हें एक ऐसी भाषा की जरुरत महसूस हुई, जिसे सभी लोग समझ-बोल सकते थे और इस प्रकार एक संपर्क भाषा के रुप में यहाँ हिन्दी का तेजी से विकास हुआ। यहाँ तक कि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद इन द्वीपों में आए विभिन्न भाषा-भाषी लोगों ने भी राष्ट्र प्रेम को दर्शाते हुए हिन्दी को सहर्ष संपर्क भाषा के रूप में अपनाया, जो आज भी इस द्वीप समूह की संपर्क भाषा बनी हुई है। यहाँ बसे सभी लोग चाहे उनकी मातृभाषा कोई भी हो हिन्दी बोलते और समझते हैं।

ब्रिटिश सरकार द्वारा अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध लिखने के कारण तमाम लेखकों-संपादकों-कवियों-शायरों को अंडमान में निर्वासित किया गया। इन लोगों ने यहाँ हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सेल्युलर जेल की दीवारों पर तमाम क्रांतिकारियों ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया। सेल्युलर जेल की दीवारों पर वीर सावरकर ने 11,000 पंक्तियों की अप्रतिम रचना 'कमला काव्य' की रचना की। लेखनी के अभाव में उन्हें जेल की कोठरी की दीवारों पर कीलों और कांटों से उत्कीर्णित कर कंठस्थ करने की चेष्टा की। वीर सावरकर ने सेल्युलर जेल में कारावास के दौरान न सिर्फ अन्य क्रांतिकारी कैदियों को पढ़ाना आरम्भ किया बल्कि एक हिन्दी वाचनालय भी शुरू किया। सावरकर ने देश के विभिन्न प्रांतों से आए क्रांतिकारियों के मध्य संप्रेषण-भाषा के रुप में हिन्दी की आवश्यकता पर भी जोर दिया और मराठी भाषी होते हुए भी हिन्दी के प्रबल समर्थक व प्रचारक बने। वीर सावरकर के साहित्य में करीब 12,000 पृष्ठ तत्कालीन काला पानी पर आधारित है। 10 साल की कैद के दौरान सावरकर ने द्वीपों का सच्चा इतिहास लिख दिया, जो भारत के इतिहास में अमिट है। कालांतर में उन्होंने हिन्दी भाषा से विदेशी शब्दों को हटाने हेतु 'भाषा शुद्धि आंदोलन' भी चलाया और तमाम नए शब्दों की रचना की। 'शहीद' के स्थान पर 'हुतात्मा', 'मेयर' के स्थान पर 'महापौर', मोनोपोली के स्थान पर 'एकत्व', 'प्रूफ' के स्थान पर 'उपमुद्रित' जैसे शब्दों की रचना वीर सावरकर की ही देन है। इलाहाबाद से प्रकाशित मशहूर 'स्वराज्य' पत्र के संपादक होतीलाल वर्मा और संपादक लद्दाराम समेत कुल नौ संपादकों को यहाँ निर्वासित किया गया था। समय-समय पर इन लोगों सहित युगांतर के संपादक रामचरण लाल इत्यादि तमाम लोगों ने यहाँ क्रांतिकारी साहित्य को प्रोत्साहित किया। उर्दू शायर मिर्जा गालिब के परम मित्र अल्लामा फज्लुल हक्क (खैराबादी) व मौलाना लियाकत अली भी यहाँ कैद रहे। कामागाटामारू कांड से जुड़े पं.

परमानन्द, डी.ए.वी. कानपुर के छात्र एवं भगत सिंह व चन्द्रशेखर आजाद के सहयोगी महावीर सिंह, अरविंद घोष के भाई वारीन्द्र कुमार घोष, बटुकेश्वर दत्त, अनुशीलन से जुड़े शचीन्द्रनाथ सान्याल सहित तमाम ऐसे लोग यहाँ कैद थे। इन सभी क्रांतिवीरों ने निर्वासन के बावजूद यहाँ क्रांतिकारी साहित्य को प्रोत्साहित किया। स्वराज्य के संपादक होतीलाल वर्मा ने अपनी बुद्धिमत्ता से सेल्युलर जेल की भयंकर यातनाओं पर एक पत्र जेल से बाहर भेजा, जिसे सुरेंद्रनाथ बनर्जी तक पहुँचाया गया और उन्होंने उसे प्रकाशित कर अंग्रेजी हुकूमत को बाध्य किया कि सेल्युलर जेल का अवलोकन कर जेल अधिकारियों के अत्याचार को रोका जाय।

द्वितीय महायुद्ध की विभिषिका और जापानियों के जुल्मोसितम के बावजूद इन द्वीपों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार जारी रहा। जापानी-आधिपत्य के दौरान स्थानीय 'सत्संग मण्डली' के मंच मास्टर केसरदास ने देशभक्ति गीतों की रचना करके हिन्दी को समृद्ध करने का प्रयास किया। गुरूद्वारा डा. दीवान सिंह में हिन्दी की कक्षायें चलाई जाती थीं तो तत्कालीन समाज सेविका इच्छावती नाग और उससे पूर्व प्रेम देवी ने घर-घर, गाँव-गाँव जाकर महिलाओं को हिन्दी पढ़ने-लिखने के लिये प्रेरित किया। द्वीपवासियों के हिन्दी के प्रति गहरे लगाव के साथ-साथ नौटंकी, फाग, आल्हा, रामलीला इत्यादि के माध्यम से इन सुदूर टापुओं में भारतीय कला व संस्कृति जीवित रही। कला व संस्कृति के इन उपासकों में रामसिंह, अंगद सिंह व सरजू लाल इत्यादि के नाम सदैव अविस्मरणीय रहेंगे। यह हिन्दी एवं भारतीय कला व संस्कृति का ही प्रभाव था कि ये द्वीप समूह आजादी के बाद पूर्वी पाकिस्तान से न जुड़कर भारत के साथ जुड़े और स्वाधीन भारत के साथ इन द्वीपों का जनमानस भी जुड़ा। आजादी के बाद यहाँ हिन्दी का क्रमिक विकास हुआ। 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' जैसी संस्था की इन द्वीपों में भी स्थापना हुई। द्वीप समूह के स्कूलों में हिन्दी शिक्षा का माध्यम बनी। शिक्षा से परे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भी तमाम लोगों ने महत्वपूर्ण कार्य किया।

अंडमान-निकोबार द्वीप समूह ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके बिना आजादी का इतिहास अधूरा है। इतिहास का यह काला पानी आज 'मुक्ति तीर्थ' के रूप में जाना जाता है। स्वाधीनता आंदोलन के बहाने हिन्दी बीज स्वरूप में इन द्वीपों में लाई गई. जो आज समय व अवसर पाकर इन द्वीपों की धरती पर पल्लवित व पुष्पित हो रही है। देश व इन द्वीपों के तमाम साहित्यकारों ने काला पानी की यातनाओं को केंद्रबिंदु में रखकर कविताएं लिखीं। ये काव्य रचनाएँ द्वीप समूह के हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। बानगी के रूप में कुछ पंक्तियाँ गौरतलब हैं-

जो वर्षों तक लड़े जेल में/उनकी याद करें

जो फाँसी पर चढ़े खेल में/उनकी याद करें

याद करें काला पानी को/अंग्रेजों की मनमानी को

कोल्हू में जुट तेल पेरते/सावरकर की बलिदानी को। (उनको याद करें : अटल बिहारी वाजपेयी)

.....

दिन भर कोल्हू को खींच-खींच/मेरे कंधे कट जाते हैं

रजनी में इन हत्यारों के/अभिशाप बहुत बढ़ जाते हैं

दीवारों पर नाखूनों से/लिख रहा मुक्ति के गीत बंधु

मुर्गे ने दे दी बाँग कहीं/सो सका न सारी रात बंधु।

(विजगीषु : जगदीश नारायण राय)

.....

सड़ा आटा, सूखी जली रोटियाँ/सड़ी रेतीली साग-सब्जियाँ

दाल में कीड़े, पानी न मिलता/ऐसी थी जेलों की प्राण लेवा दुर्गति।

(गौरव गान : जंगबहादुर सिंह 'भ्रमर')

.....

जिसकी कोठरी नं. 113/वीर सावरकर के

वर्षों एकांतवास की/कहानी कहती है। (किसको नमन करुँ : डॉ0 गोविंद सिंह पवार)

वक्त बीतने के साथ-साथ, जैसे-जैसे बाहरी लोगों का पदार्पण अंडमान -निकोबार में हुआ, काला पानी का दाग छूटता गया। यहाँ का सुन्दर प्राकृतिक परिवेश, लहराता समुद्र, चारों तरफ बिखरी हरियाली, चहचहाती चिड़िया से लेकर यहाँ के आदिवासी व आज का अंडमान-निकोबार प्रस्फुटित होने लगा। ऐसे में यहाँ के साहित्यकारों-रचनाधर्मियों ने इन द्वीपों के गौरवपूर्ण इतिहास, अनूठी संस्कृति से लेकर इसके अप्रतिम सौंदर्य और सौहार्दपूर्ण वातावरण को सुन्दर शब्दों में गूँथकर अभिव्यक्त किया है। द्वीपों की सामासिकता व सद्भाव किसी के लिए भी आकर्षण का केंद्रबिंदु हो सकती है-

गीता, गुरुग्रंथ, बाइबिल, कुरान/सब ग्रंथों का यहाँ सार होगा

कलियुग में चलकर नाम इसी का/अण्डमान-निकोबार होगा।

(द्वीपों की उत्पत्ति : राम प्रसाद 'निर्दोष')

अंडमान का सौंदर्य कवियों को अपनी ओर अनायास ही खींचता है-

प्रिये/तुम द्वीप-समूह हो/सौंदर्य की अपूर्व प्रतिमा

नीले वस्त्रों में लिपटी/लहरों-सी अकुलाती तुम

माउंट हैरियट के विशाल माथे पर/नार्थ बे की हरियाली की टिकुली।

(द्वीप-एक रेखचित्र : राजेश कुमार 'निराश')

आज भी अंडमान के आदिवासी आधुनिकता से दूर प्रकृति के साहचर्य में जी रहे हैं-

अंडमान के आदिवासी/सभ्यता से कोसों दूर/द्वीपों पर अलग-थलग पड़े/

तीर-भाले से करते शिकार/ प्रकृति के सहवास में।

(अंडमान के आदिवासी : कृष्ण कुमार यादव)

आज अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह जहाँ पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र-बिन्दु है, वहीं तमाम मानव-वैज्ञानिकों, इतिहासकारों और साहित्यकारों को भी गवेषणा, अनुसंधान और साहित्य सृजन के लिए अपनी ओर खींचता है। स्वतंत्रता सेनानियों के पदरज से पावन इस पुण्यभूमि की शहीदी गाथाओं, त्यागों और बलिदानियों की कहानियाँ सुनने के लिए भी लोग निरंतर आ रहे है। वे यहाँ का भौगोलिक परिवेश, सागर-तटों, झरनों-पहाड़ों का सांदर्य, लता-गुल्मों, वृक्षों की हरीतिमा, ष्कालेपानीष् की यातना, आदिमानवों की सांस्कृतिक विरासत आदि को अपनी आँखों में बसाकर ले जाना नहीं भूलते। उनमें से कुछ अपने अनुभवों को बाँटने और उन्हें स्थायी बनाने के उद्देश्य से पुस्तकों की रचना तक कर डालते हैं। स्वतंत्रता सेनानियों की यातनाओं से द्रवीभूत हिमांशु जोशी 'यातना शिविर' लिखने से नहीं चूकते तो चर्चित साहित्यकार लीलाधर मंडलोई ने 'काला पानी' नामक पुस्तक रच डाली। ग्रेट अंडमानी, ओंगी, निकोबारी तथा शोम्पेन जनजातियों को लोक-कथाओं को भी हिन्दी में लाने वाले वे पहले रचनाकार हैं। डॉ. ब्रह्मस्वरूप शर्मा की पुस्तक 'आँखों देखा अण्डमान' यहाँ की जीवन-शैली, रीति-नीति, आचार-विचार, मान्यता-सिद्धांत, सुन्दरता-कुरूपता, स्नेह-सौहार्द्र को बड़ी सहजता और स्वाभाविकता के साथ प्रस्तुत करती है। वस्तुत: जिन व्यक्तियों ने अपने जीवन का महत्वपूर्ण भाग यहाँ बिताया हो, पेड़-पौधों से बातें की हो, नदी-झरनों का संगीत सुना हो, सेल्युलर जेल की भयावहता को रोज निहारा हो, आदिमानवों के जीवन को करीब से देखा हो, ऐसे में अगर वह इन पर पुस्तक लिखे तो निश्चित रूप से अन्य की अपेक्षा उसके अनुभवों में अधिक गहराई और प्रामाणिकता होगी।

अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में एक लघु भारत बसता है। यहाँ हर जाति, धर्म, भाषा व प्रान्त के लोग मिलेंगे। यह गर्व की बात है कि इतनी विविधता होते हुए भी यह द्वीप एकता और भाईचारे का उत्कृष्ट मिसाल है। यहाँ के विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच हिन्दी का एक रूप स्वतः ही संपर्क भाषा के रूप में उभर कर सामने आया है, जो अपने

आप में एक बड़ी उपलब्धि है। यहाँ तक कि यहाँ तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल के लोग जन-व्यवहार में हिन्दी ही बोलते नजर आएंगे। जब भी हिन्दी की बात होती है तो उत्तर-दक्षिण की बात आरंभ हो जाती है। ऐसा माना जाता है कि दक्षिण भारत में हिन्दी का विरोध होता है, पर उस अंडमान-निकोबार की बात कोई नहीं करता, जहाँ हिन्दी सर्वव्यापी है। यहाँ यह बताना जरुरी है कि अंडमान-निकोबार द्वीप समूह भारत का सबसे दक्षिणी क्षोर पर स्थित संघ शासित प्रदेश है। यहाँ स्थित इंदिरा प्वाइंट को भारत का सबसे दक्षिणतम क्षोर माना जाता है। जहाँ तमाम प्रमुख संस्थाओं में अंग्रेजी में भाषणबाजी/ वक्तवय देना आम बात है, वहीं यहाँ पर सरकारी कार्यालयों में भी हिन्दी फल-फूल रही है। हिन्दी यहाँ की सर्वप्रमुख भाषा है, यहाँ तक कि निकोबारी और ग्रेट अण्डमानी आदिवासी और कुछ हद तक जारवा आदिवासी भी भलीभांति हिन्दी समझ-बोल लेते हैं। इसके अलावा यहाँ निकोबारी, तमिल, बंगला, मलयालम और तेलुगु भी बोली जाती है। निश्चितत: एकता की भावना की यह धरोहर अनुपम और अनमोल है।

अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में हिन्दी सिर्फ संपर्क भाषा के रूप में नहीं बल्कि साहित्य के रूप में भी दिनों-ब-दिन समृद्ध हो रही है। यहाँ कविता, कहानी, नाटक, गीत, संस्मरण, लेख व निबंध, लघुकथाएं, व्यंग्य, उपन्यास, बाल साहित्य, संस्मरण जैसी साहित्य की सभी विधायें प्रस्फुटित हो रही हैं। एक तरफ इन रचनाओं में स्थानीय सामाजिक परिवेश परिलक्षित होता है तो नई पीढ़ी के रचनाकार अपनी रचनाओं से समाज में चेतना की अलख जगा रहे हैं। अण्डमान में हिन्दी साहित्य की एक दीर्घजीवी परंपरा है, जो काला पानी के दिनों से आरंभ होकर नित्य प्रवाहमान है। अण्डमान की धरती को सौभाग्य प्राप्त है कि काला पानी के ही बहाने तमाम प्रखर पत्रकारों, संपादकों, लेखकों, कवियों ने इस धरा पर साँस ली और कुछ-न-कुछ रचा। कहते हैं वार्तायें-चर्चायें, गीत-संगीत, नाटक और कवितायें-कहानियाँ मुखरित होती हैं और अनंत में विलीन हो जाती हैं, किंतु छपी हुई पठनीय सामग्री विचारों तथा भावनाओं को कालातीत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अण्डमान-निकोबार की आदि-संस्कृति को सभ्य समाज के समक्ष लाने के लिए तमाम प्रयास किए जा रहे हैं। डॉ. राम कृपाल तिवारी ने 'अंडमान-निकोबार की जनजातीय बोलियों का भाषिक अध्ययन' पुस्तक द्वारा इनसे न सिर्फ हिन्दी पाठकों को जोड़ा बल्कि इससे जनजातीय संस्कृति और सरोकारों की पहुँच भी दूरगामी हुई। डॉ. तिवारी ने 'शोम्पेन हिन्दी शब्दावली' का भी निर्माण किया है। 'अंडमान तथा निकोबार के आदिवासी और उनकी बोलियाँ' (सं. डॉ. व्यासमणि त्रिपाठी) एवं अंडमान तथा निकोबार की लोक कथाएं (सं. लीलाधर मंडलोई-जे. एस.राज) भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण पुस्तक हैं। श्री पुष्पोत्तम लाल 'वशिष्ठ' एवं डॉ. जयदेव सिंह ने स्थानीय बोली के भाषा वैज्ञानिक पहलू से संबंधित तमाम शोध-लेख रचे हैं। यहाँ के तमाम साहित्यकार देश की मुख्य धारा की पत्र-पत्रिकाओं में प्रतिष्ठापरक रूप में निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में तमाम संस्थाएं भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उत्तरोत्तर वृद्धि में संलग्न हैं। इन संस्थाओं के तत्वाधान में यहाँ कवि सम्मेलन, मुशायरा, साहित्यकार-अभिनन्दन, साहित्य गोष्ठियाँ, परिचर्चा, नाटक, नुक्कड़ नाटक इत्यादि कार्यक्रम चलते रहते हैं, जिससे हिन्दी को एक भाषा एवं साहित्य दोनों रूपों में ऊर्जा प्राप्त होती है। यहाँ सर्वाधिक पुरानी और प्रतिष्ठित संस्था के रूप में पोर्टब्लेयर के हिन्दी साहित्य, संस्कृति व कला प्रेमियों और बुद्धिजीवियों द्वारा 'हिंदी साहित्य कला परिषद्' का 12 मार्च, 1962 को गठन हुआ। परिषद द्वारा द्वीपों की एकमात्र हिंदी साहित्यक पत्रिका 'द्वीप-लहरी' का अर्द्धवार्षिक प्रकाशन भी किया जाता है। यह पत्रिका मुख्यभूमि एवं द्वीपसमूह के बीच साहित्य-सेतु की भूमिका बखूबी निभा रही है। 'हिन्दी साहित्य कला परिषद्' के अलावा भी यहाँ कई संस्थाएं सक्रिय हैं। इनमें आठवें दशक में 'नवपरिमल' संस्था का गठन हुआ। 1998 में यहाँ 'चेतना' नामक साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्था का गठन किया गया। 'राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी' भी हिंदी को इन द्वीपों में बखूबी समृद्ध रही है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भी विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु सम्यक रूप में कार्य कर रही है। पोर्टब्लेयर स्थित जवाहर लाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय का हिन्दी विभाग भी इस संबध में गतिविधियाँ आयोजित करता रहता है।

हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता एक सिक्के के दो पहलू हैं। विभिन्न भाषाओं में यहाँ से लगभग 35 अखबार निकलते हैं, जिनमें अधिकतर टेबलायड आकार में साप्ताहिक या पाक्षिक हैं। पोर्टब्लेयर से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी समाचार पत्र हैं- अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार, द्वीप मंथन, अण्डमान एक्सप्रेस, संपूर्ण आवाज, सागर, साहिल की ओर। इनमें सरकारी प्रेस द्वारा प्रकाशित 'द्वीप समाचार' प्रमुख है। गौरतलब है कि अण्डमान-निकोबार में सरकारी प्रेस द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक 'दि डेली टेलीग्राम्स' और हिन्दी दैनिक 'अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार' समाचारों व सूचनाओं के प्रमुख स्रोत हैं। राजधानी पोर्टब्लेयर से प्रकाशित हिन्दी अखबारों के अलावा हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं भी यहाँ उपलब्ध हो जाते हैं। मुख्य-भूमि से आने के कारण प्राय: सभी पत्र-पत्रिकाएं यहाँ दुगुने-तिगुने मूल्यों पर उपलब्ध होती हैं। ऐसे में तमाम पत्र-पत्रिकाओं से यहाँ के लोगों को वंचित रह जाना पड़ता है। फिर भी हिन्दी साहित्य में अभिरूचि रखने वाले लोग तमाम पत्र-पत्रिकाओं से डाक-माध्यम द्वारा जुड़ ही जाते हैं। पोर्टब्लेयर में स्थित स्टेट लाइब्रेरी में भी हिन्दी एवं अन्य भाषाओं की पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकायें पढ़ने को मिलती हैं।

आकाशवाणी और दूरदर्शन के बिना हिन्दी का प्रचार-प्रसार अधूरा ही

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-8-7**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 198

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

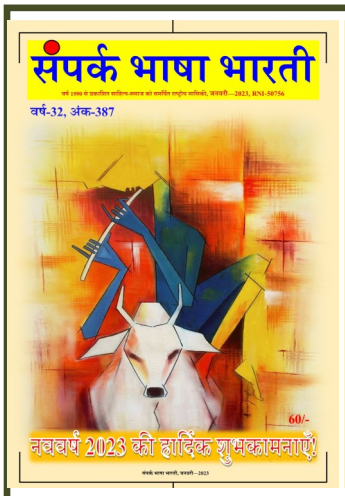

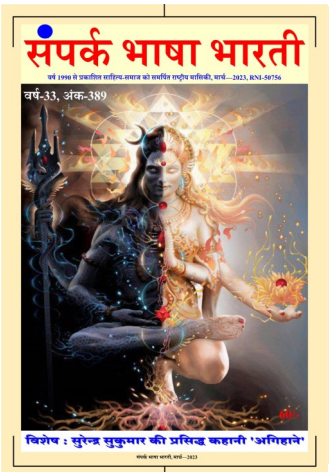

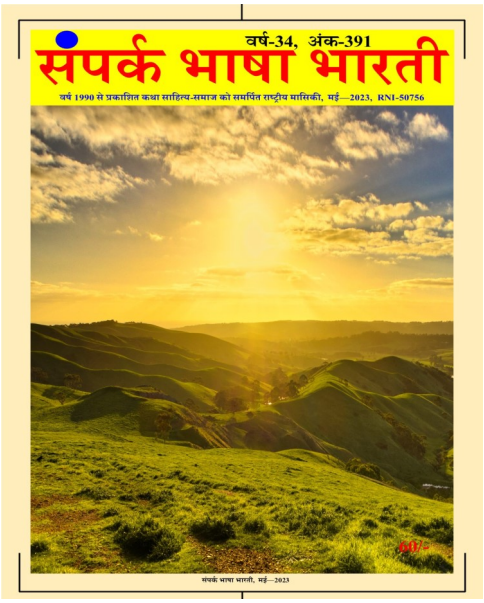

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

माना जाएगा। 1960 के दशक में पोर्टब्लेयर में आकाशवाणी का केंद्र खुला। हिन्दी आकाशवाणी केंद्र के रूप में इस केंद्र से प्रसारित हिन्दी प्रादेशिक समाचार बुलेटिनों, साहित्यिक कार्यक्रम, हिन्दी भाषा पाठ तथा संगीत के विभिन्न कार्यक्रमों के जरिये इन द्वीपों में हिन्दी के प्रचार व प्रसार को एक नई दिशा मिली है। यथाचर्चित आकाशवाणी के अतिरिक्त दूरदर्शन ने भी यहाँ हिन्दी को समृद्ध किया है। लगभग सभी हिन्दी चैनल्स यहाँ देखे जा सकते हैं। फिल्म-थिएटर न होने के कारण हिन्दी फिल्में मात्र टीवी चैनल्स पर उपलब्ध हो पाती हैं। 'भारतीय साहित्य अकादमी' के तत्वाधान में साहित्यक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए प्राय: हर वर्ष यहाँ कार्यक्रम होते हैं। तमाम दिग्गज हिन्दी साहित्यकार अण्डमान-निकोबार का भ्रमण कर हिन्दी साहित्य के प्रति अभिरूचि पैदा करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सिर्फ साहित्य ही नहीं बल्कि रामलीला, नौटंकी, मानस पाठ, भजन कीर्तन का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। ये विधायें एक तरफ 'लोक' को संरक्षित रखती हैं, वहीं इनके माध्यम से लोगों का अपनी जमीं से जुड़ाव बना रहता है। उत्तर भारत से आकर अण्डमान में रह रहे तमाम लोग इन विधाओं को रस लेकर देखते-सुनते हैं। निश्चितत: अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में हिन्दी की दशा और दिशा को देखकर कहा जा सकता है कि यहाँ हिन्दी के विकास को लेकर अभी भी अनंत संभावनाएं हैं।

कृष्ण कुमार यादव

पोस्टमास्टर जनरल, उत्तरी गुजरात परिक्षेत्र, अहमदाबाद - 380004 मो0- 09413666599 ई-मेल:

kkyadav.t@gmail.com

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

रतन चंद 'रत्नेश' की लघुकथा

टाइम पास

'द्वार पर एक घोड़ा बँधा होना चाहिए।' पत्नी की कई दिनों से यही जिद थी, परंतु न जाने क्यों मुझे घोड़े की कोई अहमियत नज़र नहीं आ रही थी। अतः अब तक टालता आ रहा था। आस -पास के घरों के बाहर घोड़े बँधे होते और पत्नी को इसमें अपनी तौहीन दिखती। जब से नई सरकार बनी थी, घोड़े खुले आम बीच बाजार मिलने बंद हो गए थे क्योंकि सरकार बनते ही एक कैबिनेट मंत्री की तत्परता से एक विभाग का नवनिर्माण हो चुका था- -जी.पी.डब्ल्यू.डी. यानी घोड़ा पालने वाला डिपार्टमेंट। अब किसी को घोड़ा लेना हो तो इसी विभाग के शरणागत होना पड़ता। सरकार इस बात पर जोर दे रही थी कि लोग वाहनों को छोड़कर घोड़े अपनाएँ।

आज मुझे उस विभाग में जाना ही पड़ा। घर से पैदल ही निकला। सोचा, जब सरकार पर्यावरण के प्रति इतनी सचेत है तो मुझे भी अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए। बहरहाल, सड़क पर न कोई घोड़ा दिखा, न वाहन। विभाग के मुख्यद्वार से अंदर जाते ही मैंने वहाँ के चौकीदार को ऊँघता पाया। पास ही एक चतुर्थ श्रेणी किस्म का कर्मचारी बेंच पर लेटा हुआ था। उसने मुझे देखकर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। एक ओर पाँच-छः तंदरूस्त घोड़े बँधे थे। मैं भी चुपचाप पंक्तिबद्ध कमरों की ओर बढ़ चला। पहले कमरे में बाहर से ही झाँका। एक बाबू चश्मा चढ़ाए फाइलों में खोये हुए थे। उसी कमरे में उनके सामने दूसरा शख्स कागजों की तीली बनाकर अपना मुँह बनाता कान साफ कर रहा था। सामने दीवार पर घोड़ों के झुंड की एक तस्वीर और संबंधित कैबिनेट मंत्री जी लटके हुए थे। उन्हें बिना कुछ कहे मैं आगे बढ़ा। अगले कमरे में कोई नहीं था। कुर्सियों और मेज पर धूल ने स्थायी जगह बना रखी थी। इसी बीच लेटा हुआ चतुर्थ श्रेणी किस्म को वह शख्स मेरे पास उस कमरे तक आया और खुलासा किया कि साहब लोग घोड़े का इंतज़ाम करने दौरे पर गए हैं।

मैं विभाग के दूसरे दरवाजे से बाहर निकला तो वहाँ अपने कार्यालय के वाहनचालक मोहन लाल को एक कुर्सी पर बैठकर अखबार बाँचते पाया। मैंने पूछा, 'मोहन लाल, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'

उसने अखबार से बिना आँखें हटाए कहा, 'टाइम पास।'

मुझे यों लगा कि घोड़ा चालकों के लिए पद भरे जाने की संभावना बन रही है। मैं भी टाइम पास करके वहाँ से वापस लौट आया।

***

कीमती कुर्ता

मेरी खुशी आज़ सातवें आसमान पर थी। बात ही कुछ ऐसी थी। मेरे गृहनगर में एक कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के तौर पर मुझे बुलाया गया था। जबसे फोन आया था मैं अपने आस पास के सभी लोगों को यह बात बता चुका था। घर पर और कार्यालय में प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि मैं किसी कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि बनकर जाऊंगा। उनमें से कोई भी मेरी अतिरिक्त खुशी का कारण नहीं समझ पा रहा था क्योंकि शहर में आए दिन विभिन्न कार्यक्रमों में विशिष्ट अतिथि बनने का निमंत्रण आता रहता था और मैं मना कर देता था। अब उन्हें कैसे समझता कि उस सम्मान की बात ही कुछ और होती है जो अपने घर वालों से मिलता है। इतने वर्षों से सफल कारोबारियों की गिनती में आ रहा था लेकिन आज पहली बार मुझे लग रहा था कि वास्तव में सफल हो गया हूं। बड़ा आदमी बन गया हूं। बहुत आगे बढ़ गया हूं जीवन में। गृहनगर से आए इस बुलावे ने एक नई ऊर्जा का संचार मेरे शरीर में कर दिया था। किसी कामयाबी या पुरस्कार के मिलने से ऊपर थी यह खुशी।

अपने शहर जाने के लिए मैंने आरक्षण करवा लिया था। निर्धारित समय पर कार्यक्रम में उपस्थित हो गया। कार्यक्रम समाप्त हुआ तो मुझे भी दो शब्द बोलने थे। दो शब्दों में मैंने अपने संघर्ष और सफलता की पूरी कहानी सुना डाली। मेरी बात सुनने के लिए सभी लोग रुके हुए थे। जब तक मैंने धन्यवाद नहीं कहा कोई अपनी जगह से हिला तक नहीं। कार्यक्रम बेहद सफल रहा। अपनी बात समाप्त करके मैं मंच से नीचे उतर रहा था तभी मुझे लगा आयोजकों में से कुछ लोग मंच के पीछे खड़े होकर मेरे बारे में चर्चा कर रहे थे।," ये तो वही है जिसके बाप ने अपनी लड़की की शादी में जमीन बेच दी थी।" दूसरे ने हंसकर जवाब दिया," हां, वही है यार। सुना है बड़ा कारोबारी बन गया है। कुर्ता तो तीन सौ का पहन कर आया है। लगता तो सेल्समैन है।" कहकर दोनों ने जोर से ठहाका लगाया। मैं नीचे उतरा तब तक उन्हें किसी ने आवाज़ लगा ली थी। मेरा सारा उत्साह ठंडा पड़ गया था। जैसे तैसे मैंने खाना खाया और रात में ही ट्रेन पकड़कर घर वापिस आ गया। ना वहां रुकने का मन हुआ न ही किसी से बात करने का। घर वापिस आया तो सभी कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानना चाहते थे लेकिन मैं थके होने का बहाना बनाकर सोने चला गया। रात में सोते हुए भी कुर्ता और उसकी कीमत मेरे दिमाग में घूमती रही।

ज़िंदगी अपनी रफ्तार से चल रही थी। व्यस्तता भी बहुत थी। यही कारण था कि उस घटना को मैं जल्दी ही भूल गया। एक दिन रात को बिस्तर पर बैठ कर कोई पुस्तक पढ़ रहा था सोने से पहले। तभी फोन की घंटी बजी। आवाज़ जानी पहचानी लग रही थी। उसने अपने परिचय में यही बताया कि जिस कार्यक्रम में मैं अतिथि बना था वह

उसके आयोजकों में से एक था। इस शहर में किसी कंपनी के साथ सामान खरीदने को लेकर कोई डील करने आया था। ट्रेन में उसका बैग चोरी हो गया। सब सामान, सारे पते उसी में थे इसलिए अब स्टेशन पर खड़ा था। मैंने उसे जल्द ही सहायता पहुंचाने का आश्वासन दिया।

ड्राइवर को स्टेशन पर भेजा और कंपनी के गेस्ट हाउस में उनके ठहरने का इंतज़ाम करवा दिया। मैं खुद ही स्टेशन जाना चाहता था लेकिन "तीन सौ के कुर्ते" ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया। अगले दिन फैक्ट्री से फोन आया ," सर आपके शहर से कोई व्यक्ति अपने शोरूम के लिए एक बड़ी डील करना चाहता है हमारी कंपनी के साथ।" मैंने तुरंत हां कहा।," उनसे पेमेंट की बात मत करना। मैं खुद बात कर लूंगा।" कहकर मैंने फोन रख दिया। शाम को कंपनी के गेट से बाहर निकल रहा था तभी चौकीदार ने रोका।," साहेब एक आदमी दोपहर से आपका इंतज़ार कर रहा है मिलने के लिए।" मैं गाड़ी से बाहर आया तो देखा कि बेंच पर एक आदमी बैठा हुआ है। चौकीदार ने उसे बताया तो उसने हाथ जोड़कर अभिवादन किया। वही व्यक्ति था जो उस दिन मेरा मज़ाक उड़ा रहा था।," सर आपका आभारी रहूंगा जीवन भर। आप नहीं होते तो मुझे खाली हाथ वापिस जाना पड़ता। मैंने औपचारिकता से कहा," मैंने तो अपना फर्ज निभाया है भाई। अच्छा होता तुम यहां आने से पहले एक बार संपर्क कर लेते।" उसने बिना जवाब दिए नजरें झुका ली।," तुम्हे विश्वास नहीं था कि मैं तुम्हारी कोई मदद कर पाऊंगा। तीन सौ रुपए का कुर्ता जो पहनता हूं।" मैंने हंसकर पूछा तो उसने हां में सिर हिला दिया। फिर कुछ सोचकर बोला," सर, आप इतने अमीर हैं तो इतने साधारण कपड़े पहनने की वजह क्या है ?" मैं उसके सवाल से खुश था।," कारण है मेरे पिताजी। उन्होंने मुझे सबसे महंगा कुर्ता तीन सौ का खरीद कर दिया था। उस ज़माने में तीन सौ रुपए बड़ी रकम हुआ करती थी। अब अपनी हर कामयाबी पर तीन सौ का ही कुर्ता पहनता हूं ताकि पिताजी को गर्व महसूस होता रहे।" उसने मेरे पैर पकड़ लिए।," भाई साहब हो सके तो उस दिन की बदसलूकी के लिए माफ कर देना।" मैंने नीचे झुक कर उसे उठाया।," माफ कर दिया है। चलो घर। भाभी के हाथ का बना खाना खाकर जाना। मैं तुम्हे ट्रेन में बिठाकर आ जाऊंगा।" मेरे इतना कहते ही उसकी आंखें नम हो गई। गाड़ी में उसे बिठाकर मैं घर की ओर मुड़ गया।

अर्चना त्यागी

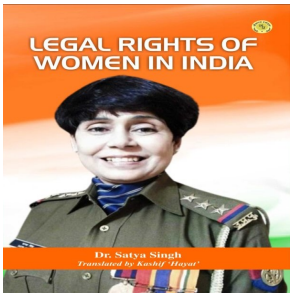

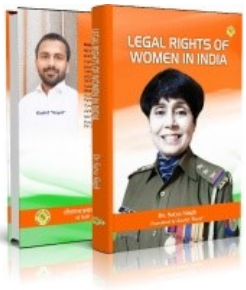

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

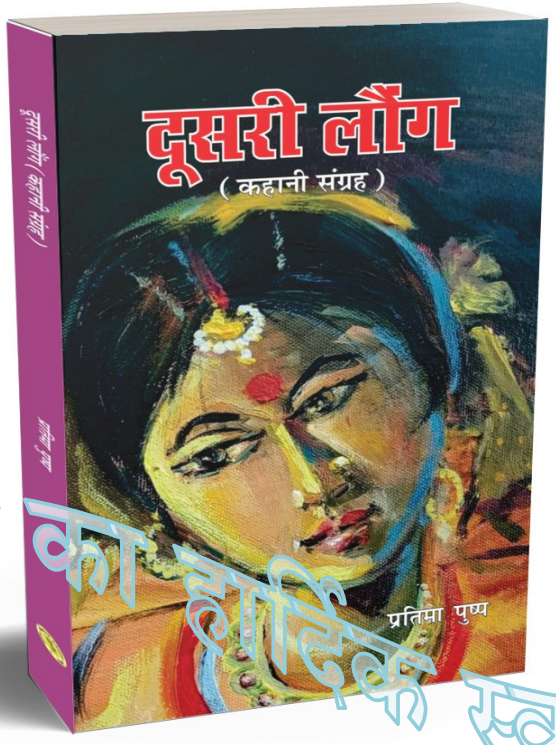

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

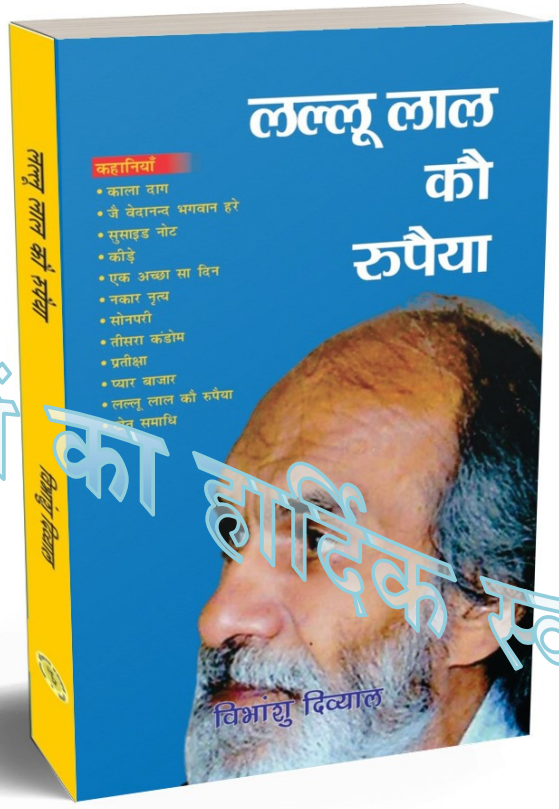

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

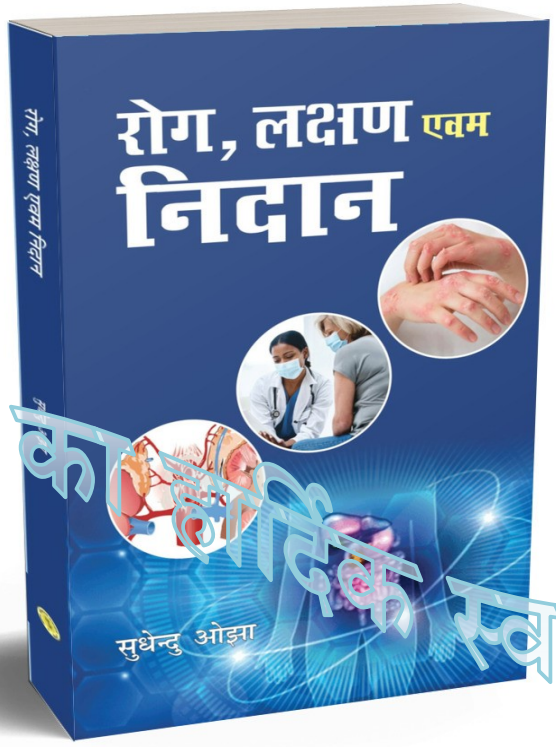

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान
Author : सुधेन्दु ओझा
ISBN : : 978-81-958985-7-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 150/-
Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : **978-81-964179-7-0**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 154

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

यात्रा छोटा कश्मीर अनूठा अर्बुदाचल

डॉ. सतीश "बब्बा"

मैंने पर्यटन स्थल, धार्मिक स्थलों पर महसूस किया है कि, पत्थर की मूर्तियां जहां भगवान बसते हैं वहां मंदिर भी पत्थर के हैं। वहां के इंसान पत्थर दिल है।

साथ में हमसफर हो तो सफर का आनंद ही कुछ और होता है। कोच स्लीपर हो या वातानुकूलित फर्क नहीं पड़ता है।

पत्थरों की मूर्तियों के भगवान, और पत्थरों के पहाड़ देखने में, सैर करने में हमें बहुत ही मजा नहीं आनंद आता था।

हां तो हम अपने हमसफर के साथ जब दुबारा अर्बुदाचल यानी कि, आबू पर्वत की यात्रा का मन बनाया तो हमें स्लीपर में सीटें मिल गई, गाड़ी थी इलाहाबाद से अहमदाबाद जो मानिकपुर स्टेशन पर रात्रि में दस बजे के बाद ही आती थी।

यात्रा में हम दोनों के बीच ज्यादा सामान नहीं हुआ करता था। बस एक झोला हुआ करता था जिसमें, कुछ नमकीन, तले काजू, और तले मखाना, कुछ बादाम और बांकी कपड़े एक गिलास या छोटा लोटा और छोटी सी थाली, जिसे स्टील की बड़ी प्लेट भी कह सकते हैं।

शुक्रवार दिन था शायद! हम स्टेशन पर थे। हमारे पास तब टच वाला मोबाइल नहीं था। वही कीपैड फोन, छोटा मोबाइल फोन था। जिसमें मैसेज आया था। तब हम बी एस एन एल का सिम उपयोग किया करते थे। उस समय भी बी एस एन एल कहा करता था 'भाई साहब नहीं लगेगा!'

मानिकपुर स्टेशन में ही गाड़ी आने के कुछ देर पहले एक मैसेज आया जिसे मैंने टी टी साहब को दिखाया तो वह बोला, "बधाई हो, वातानुकूलित B -1 में चौदह और सोलह नंबर की सीट हैं आपकी!"

मैंने कहा, "हम तो स्लीपर कोच की.....!"

टी टी ने बीच में ही बात काटकर कहा कि, "ऐसा हो जाता है, क्या दिक्कत है आपको!" और हमारी टिकट पर लिख दिया।

चौबीस घंटे में दूसरे दिन आधी रात को अहमदाबाद पहुंच गए थे। उसी स्टेशन से इंटरसिटी एक्सप्रेस गाड़ी से हम सुबह आबूरोड स्टेशन पहुंच गए थे। स्टेशन से बाहर आकर हमने यात्री निवास में कमरा तलाश किया जहां कमरा मिलने में ज्यादा दिक्कत नहीं हुई थी। हमने कमरे की आमद करवाया और नहा धोकर तैयार हुए।

यात्री निवास के बाहर आए तो रोड पर ही माटी के कुल्हड़ में रबड़ी बिक रही थी और उस चौराहे पर सभी दुकानें लगभग रबड़ी वाली ही थी। शायद अब महंगी होगी; उस समय हमने तीस - तीस रुपए की रबड़ी खाई थी। जो वास्तव में लाजवाब थी। यह रबड़ी आबूरोड की फेमस चीज है। आबू रोड की प्रसिद्ध खानगी वास्तव में बहुत अच्छी थी। पहले तो मेरी श्रीमती ने मुझे रोका था। लेकिन रबड़ी खाने के बाद कहा, "बब्बा, मैं सोच रही थी, बेकार पैसे बर्बाद कर रहे हैं लेकिन यह खाने लायक थी।

अब हम बस से अबू पर्वत के लिए रवाना हुए। और समय से दोपहर ग्यारह बजे के आसपास पहुंच गए थे। अर्बुदाचल का आबू नाम शायद अंग्रेजों ने किया होगा। हमने सरोवर में फिर से स्नान किया और फिर वहां गए जहां से खेत ऐसे दिखते थे जैसे, राजस्व विभाग का नक्शा बिछा दिया गया हो।

आगे हम माताराणी के मंदिर गए जो शक्तिपीठ है। जहां पर माता पार्वती के होंठ गिरे थे।

उस छोटी सी सौ, दो सौ सीढियां चढ़ते चढ़ते मैं थक गया था। और

मेरी श्रीमती जी शोभा देवी मिश्रा मेरे आगे आगे चढ़ रही थी। वह सुस्ताने के लिए खड़ी हो जाती और मुझे भी राहत हो जाती थी।

वास्तव में उस समय की वह पुराने जमाने की सीढ़ियां थी और गुफा में माता के दर्शन किए। वहां पर हमें बहुत ही अच्छा लग रहा था।

आगे हम दिगंबर जैन मंदिर में गए। जहां हमने सुंदरता का बेजोड़ नमूना देखा। हमें हमारी यात्रा बहुत ही सफल लगी। मैं किन शब्दों में उस जैन मंदिर की प्रशंसा करूं, लिखूं! मेरे शब्द कम पड़ जाएंगे और कलम की स्याही भी!

वह जैन मंदिर जिसमें बहुत से दिगंबर जैन संत शिरोमणि, महात्माओं की मूर्तियां स्थापित की गई हैं और उनमें उनका नाम भी लिखा गया है।

हमने देखा उस जैन मंदिर के एक एक पत्थर, खम्भे और छत पर, खिड़कियों, दरवाजों पर वह पूरा संगमरमर का बना मंदिर है; जिसमें बहुत ही बारीकी से नक्काशी की गई है। चित्रकारी का एक एक नमूना जो अवर्णनीय है।

हमने एक सज्जन से पूछा, "इसे किसने बनवाया है और कब का बना है!" उसने बताया कि, "जिस राजा ने इसे बनवाया था, वह कारीगर को मजदूरी के रूप में जितने पत्थर के टुकड़े, किरचे कारीगर अपनी छेनी हथौड़ी से निकालता था उसी के बराबर तराजू के एक पलड़े में पत्थर और एक पलड़े में सोना, स्वर्ण मुद्राएं वह राजा दिया करता था!"

हमने देखा कि, पूरे मंदिर में संगमरमर के पत्थर लगे हैं और बहुत ही तन्मयता से कारीगर ने चित्रों को उकेरा है। कहीं फूल, कहीं पत्तियां और कमल आदि आदि! न जाने क्या क्या वही जीती जागती चित्रकारियां!

वाह क्या कहूं उस कारीगर की कला को और उस बनवाने वाले उदार आत्मा, महान आत्मा को; उनकी जितनी भी सराहना की जाए कम होगी। वो बहुत ही प्रशंसनीय हैं।

वहां हम दोनों पति-पत्नी ने अपने पोते के लिए एक उड़ती हुई चिड़िया जो सेल से चलती है खरीदी थी। जो अभी तक थी। अब खरीदने वाला नहीं है उस चिड़िया की हिफाजत कौन करे!

बहुत सी सुंदर बाजार, बढ़िया राजस्थानी पोशाक लोग पहन - पहनकर फोटो खिंचवा रहे थे।

साथ में मेरा हमसफर था। इसलिए थकी नाम की चीज नहीं थी।

हम दोनों पति-पत्नी वहां शाम तक घूमते रहे। क्या नजारे हैं, जो प्रकृति ने बनाया है।

वास्तव में स्कंद पुराण में वर्णित अर्बुदाचल जो आबू पर्वत के रूप में आज भी बुला रहा है। सैलानियों को, पर्यटकों को और श्रद्धालुओं को बुला रहा है और मन मोह रहा है।

हम शाम को वहां ठंड महसूस किया और पाया कि, यह वास्तव में भारत का एक और छोटा कश्मीर, अनूठा कश्मीर है, जहां बादल अठखेलियां करते हैं और मोर नाचते हैं; हिरणें कुलांचे भरती हैं।

हम ऊपर इसलिए नहीं कमरा लेना पसंद किया था, क्योंकि वहां ऊपर आबू पर्वत में सबकुछ महंगा है। क्योंकि एक बार वहां रुककर देख चुके हैं। ठंड भी रहती है।

हम आबू रोड आकर एक मारवाड़ी होटल में खाना खाया और कमरे में आकर सो गए।

सुबह उठकर नहाकर बिना कुछ खाए पीए अम्बा जी को रवाना हुए।

अरावली पर्वतमाला में अम्बा माता का भव्य एवं विशाल मंदिर आबूरोड के पास ही है। जहां पर एक यंत्र उकेरा गया है और उसी यंत्र पर प्रतिदिन मां की बहुत सुंदर मूर्ति मां अम्बा जी की बनाई जाती है। वह मूर्ति ऐसी लगती है मानो अभी बोल देंगी और मन मुताबिक वरदान दे देंगी।

कहते हैं माता अम्बा जी का कोई भक्त दूर से आया करता था और माता अम्बा को प्रसन्न करके अपने यहां ले जाना चाहता था।

एक दिन मां अम्बा जी प्रसन्न होकर कहा, "मैं तुम्हारे साथ चलने के लिए तैयार हूं। लेकिन मेरी एक शर्त है कि, "तुम आगे आगे चलोगे मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊंगी और अगर तुम पीछे मुड़कर देखा तो मैं वहीं रुक जाऊंगी फिर आगे नहीं जाऊंगी!"

अब वह भक्त नदी, पहाड़ों को लांघते हुए कि, जल्दी पहुंच जाऊं चला जा रहा था। तभी एक पहाड़ी पर मां की पैजनिया टूटकर गिर गई और मां की पायजेब का बजना बंद हो गया और तभी मां उस पहाड़ी की चोटी पर पुनः पैजनिया पहनने के लिए झुकी थी कि, उस भक्त को लगा कि क्या हुआ और वह पीछे मुड़कर देखा तो शर्त के मुताबिक मां वहीं रुक गई!

हम दोनों उस पहाड़ी पर गए जहां ऊपर उड़न खटोले से जाना हुआ था। सुंदर पहाड़ों का दृश्य अभी भी रोमांचित करता है।

पहाड़ी की चोटी पर जहां मां की पायजेब गिरी थी वहां पर दर्शन करके हम धन्य हो गये। वह पहाड़ी, स्थान वास्तव में बहुत दुर्गम स्थान है जिसमें पहाड़ी की चोटी पर स्थित जहां पैजनिया का परिक्रमा करते हैं अगर जरा भी देह का बैलेंस बिगड़ा तो फिर बहुत ही नीचे आदमी गया।

हो सकता है अब कुछ बदलाव हुआ हो। उस समय तो हम दोनों एक दूसरे को संभालते हुए परिक्रमा किया था।

यह सच है जहां मां अम्बा है वहीं सुख और शांति है। फिर वहां से संगमरमर की भव्य खानें देखते हुए वहां पर एक शिवलिंग का भी दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह शिवलिंग दो संगमरमर के पहाड़ों के बीच से निकलती नदी के किनारे पर स्थित है।

और फिर वहां से हम पुनः आबूरोड स्टेशन लौट आए और फिर जयपुर होते हुए वापस आ गए।

अपना अगला अनूठा संस्मरण लेकर पुनः मिलता हूं। तब तक के लिए जय माता अम्बा जी, जय अर्बुदाचल!

गायत्री मंत्र

शशिबिन्दुनारायण मिश्र

अनेक संदर्भों सहित 'गायत्री-मंत्र' की विस्तृत व्याख्या अपने विद्यालय में 12 वीं कक्षा मे अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के आग्रह पर मुझे इस वर्ष सत्रारंभ मे करनी पड़ी थी।

सर्वप्रथम 'ऋग्वेद' में उल्लिखित 'गायत्री -मन्त्र' है --

"ॐ भूर्भुवः स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्।" 'गायत्री' शब्द 'गायत्र:' से बना है, जिसका अर्थ है तीनों लोकों में व्याप्त ईश्वर का गान जो कि मूलतः प्रकाश रूप में है, (सृष्टि का गान, जीवन का गान और ईश्वर का गान अर्थ भी बताया गया है)।

बचपन में ही माता कैलासी देवी, पिता जी की फूआ फूलमती शुक्ल और प्रपितामह साधक मनीषी साहित्यकार पं. गणेश दत्त मिश्र 'मदनेश' जी को 'गायत्री-मन्त्र' के प्रति अटूट आस्था के साथ जप-स्मरण आदि देखकर मेरे मन में भी "गायत्री-मन्त्र' के प्रति आकर्षण पैदा हो गया था और बचपन मे ही 'मदनेश' जी ने अपनी गोद मे बैठाकर मुझमें इसकी नींव डाल दी थी, जो कि आज भी मेरे दैनंदिन पूजा-पाठ का हिस्सा है। ब्रह्माण्ड की सर्वव्यापी सत्ता 'तेज /प्रकाश / ज्योति' स्वरूप ही है, जिसे वेदों ने ईश्वर नाम दिया है (आदित्यानामहं विष्णुर्कोतिषां रविरंशुमान्)। श्रीमद्भगवद्गीता के 'विश्वरूप दर्शन योग' में अर्जुन ने वासुदेव श्रीकृष्ण के मुख में ईश्वर को केवल अलौकिक तेज के रूप में ही देखा था और देखते ही तुरंत अचेत हो गये थे, पुनः वासुदेव श्रीकृष्ण की कृपा से पूर्ववत् चेतना लौटने पर अर्जुन करबद्ध भक्ति भाव से पुकार उठे थे --"त्वामादिदेव: पुरुष: पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् । वेत्तासि वेद्यं च परम च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूपम्।" (11-38)

प्रकाश देवता सूर्य को समर्पित / निवेदित उक्त पवित्रतम ऋचा 'गायत्री-मन्त्र' मे तीन व्याहृतियों को छोड़कर गायत्री मन्त्र कुल 24 वर्णों का वैदिक छंद हैं। वैसे वैदिक ग्रन्थों में यत्र-तत्र सप्त व्याहृतियों की भी चर्चा आती है। लेकिन 'गायत्री-मन्त्र' में मन्त्रद्रष्टा ऋषि ने तीन व्याहृतियों का ही प्रयोग किया है। 'गायत्री-मन्त्र' के मन्त्रद्रष्टा ऋषि विश्वामित्र हैं। 'गायत्री-मन्त्र' मे तीनों व्याहृतियाँ निम्न हैं -- 'भूर्भुवः स्वः' = भू:+ भुव:+ स्व: (भूर्

भुवर् भुवस् स्वर्)-- विसर्ग संधि के 'ससजुषोरुः' सूत्र के अनुसार । व्याहृतियों से पूर्व 'ॐ'कार की ध्वनि ब्रह्माण्ड की पहली ध्वनि मानी जाती है। व्याहृतियों के अतिरिक्त शेष गायत्री-मंत्र -- 'तत्सवितुर्वरेण्यं' = (तत्सवितु: + वरेण्यं) यहाँ भी सन्धि का 'ससजुषोरुः' सूत्र है।

'भर्गोदेवस्य' = (भर्ग: + देवस्य) विसर्ग संधि के 'हशि च' सूत्र के नियमानुसार।

'धियो यो नः' = (धिय: + य:+ न:) नियम 'हशि च' ।

वैदिक देव मण्डल मे द्यावापृथिवी के लिए 'भूर्भुवः' युग्म प्रसिद्ध है (द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः, श्रीमद्भगवद्गीता,11-20) ।

श्रीमद्भगवद्गीता मे वासुदेव श्रीकृष्ण, अर्जुन से कहते हैं -- "वृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्।" (10-35)

अर्थात् "हे पार्थ ! गायन करने योग्य सामवेद (श्रुतियों मे) के गीतों मे मै वृहत्साम हूँ और समस्त छन्दों मे गायत्री मै ही हूँ।" सामवेद देवताओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों का संग्रह है ,इन गीतों में एक वृहत्साम है,जिसकी ध्वनि सर्वाधिक सुमधुर होती है, जिसे अर्द्धरात्रि मे गाया जाता है।

ललित निबन्धकार कुबेरनाथ राय ने इस सम्बन्ध मे एक जगह 'वृहत्' का अर्थ परमात्मा/विश्वात्मा बताया है।

वैदिक ऋचाओं से लेकर आज तक के उच्च कोटि के ललित साहित्य को 'साम-सम्पृक्त' माना जाता है। वासुदेव श्रीकृष्ण ने कहा --"वेदानां सामवेदोऽस्मि"...।

-"वेदों में मैं सामवेद हूँ।" डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन कहते हैं कि सामवेद का उल्लेख उसके गान-सौन्दर्य के कारण मुख्य वेद के रूप में किया गया है।

'गायत्री-मन्त्र' विशेषतया ईश्वर-साक्षात्कार के निमित्त ही है, इसीलिए यह परमेश्वर (ब्रह्माण्ड की सर्वव्यापी सत्ता) का स्वरूप है।

सूर्य का मूल रूप है द्यु- मण्डल का सविता। यह सविता ही द्वितीय मण्डल अन्तरिक्ष में द्वादशादित्य और सोम बनकर अवतीर्ण है तथा पार्थिव-मण्डल में अग्नि बनकर । सविता का क्रियात्मक रूप 'साम' - भूर्भुवः स्वः' --- भू: (पहली व्याहृति) अर्थ है = पृथ्वी , धरती का प्रतिनिधित्व करने वाली, यह भूलोक का वाची है।

भुवः (भुवर् भुवस् - दूसरी व्याहृति) = तीनों लोकों में से दूसरा लोक, अन्तरिक्ष लोक, यह अंतरिक्ष लोक का वाचक है।

स्वः (स्वर् - तीसरी व्याहृति) = स्वर्गलोक, द्युलोक तक व्याप्त, मृत्यु के पश्चात् पुण्यात्माओं का अस्थायी आवास, ध्रुवतारे और सूर्य के बीच का रिक्त स्थान। यह स्वर्ग लोक का वाची है।

इन तीनों व्याहृतियों का प्रयोग 'ॐ'कार ध्वनि के पश्चात् ही किया जाता है। उपर्युक्त तीनों व्याहृतियों (भू: भुवः स्वः) का प्रयोग देवाधिदेव -महादेव शिव को समर्पित दीर्घायुष्य और सर्वारिष्टनिवारणार्थ समर्पित 'महामृत्युञ्जय-मंत्र' में भी अनिवार्य रूप से प्रयोग किया जाता है। वासुदेव श्रीकृष्ण ने समस्त रुद्रों मे अपने को शिव माना है --"रुद्राणां शंकराश्चास्मि"।

'महामृत्युञ्जय-मन्त्र' के श्रद्धापूर्वक जप-अनुष्ठान आदि से आस्थावान लोग सर्वारिष्टनिवारण करते हुए आरोग्य और दीर्घायुष्य प्राप्त करते हैं।

ऊपर कहा जा चुका है कि गायत्री मंत्र मे व्याहृतियों को छोड़कर 24 वर्ण हैं। उन 24 वर्णों (अक्षरों) की 24 शक्तियाँ , 24 वर्णों के 24 ऋषि , 24 अक्षरों के 24 पुष्प हैं।

गायत्री मंत्र मे 'तत्' तेजस रूप अग्नि देव का, 'सवितुः' सूर्य का, 'धीमहि' मति या विचार का, 'धियः' अन्तरात्मा का, 'नः' अपने स्वरूप का अर्थात् हमारे अर्थ का वाचक है। 'प्रचोदयात्' (प्रचोद:) से बना है,यह प्रेरणा की इच्छा का द्योतक है।

तपोनिष्ठ आचार्य पं. श्रीराम शर्मा गायत्री मंत्र का ठोस अर्थ निम्न प्रकार से बताते हैं --"उस प्रमाणस्वरूप, दुःखनाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा मे धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।" सविता ही सगुण ब्रह्म का प्रथम व्यक्त रूप है। जिसका 'ॐ' से सीधा संबंध है। सविता ही सगुण ब्रह्म का प्रथम व्यक्त रूप है।

'सवितृ' (वि.) = जनक, उत्पादक, फल देने वाला।

'सावित्री' (स्त्री.) = प्रकाश की किरण (सूर्य को सम्बोधित करने के कारण इसका नाम सावित्री पड़ा) । सावित्री को ही गायत्री कहा जाता है। 'अग्नि-पुराण' में भी 'गायत्री-मंत्र' के बारे में कहा गया है -- "गायन्शिष्यान्यतस्त्रायेत्काय: यं प्राणांस्तथैव च", तत: स्मृतेयं गायत्री।" अर्थात् 'गायत्री-मंत्र' के श्रद्धापूर्वक जप-स्मरण करने से शरीर और प्राणों की रक्षा होती है। अतः इसको स्मरण किया जाना चाहिए।

'गायत्री-मंत्र' सर्वप्रथम ऋग्वेद मे उद्धृत हुआ है। उसके बाद अथर्ववेद मे उल्लेख किया गया है। उपनिषदों मे भी इसके बारे मे विस्तार से बताया गया है। उक्त ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि वायु से अग्नि, अग्नि से ॐकार, ॐकार से व्याहृतियाँ , व्याहृतियों से गायत्री की उत्पत्ति हुई। गायत्री से सावित्री, सावित्री से वाग्देवी सरस्वती और वाग्देवी सरस्वती से चारों वेदों की उत्पत्ति हुई। "व्याहृत्या: गायत्र्यभवत्।..... सरस्वत्या: सर्वे वेदा: अभवन्। अथातो गायत्री व्याहृतयश्च।" नास्तिक और कुतर्की जो कहते हैं कि सरस्वती देवी ने कौन-सा ग्रन्थ लिखा है कि उन्हें ज्ञान की देवी माना जाय ? उन मूर्खों को पहले अपने दिमाग का इलाज कराना चाहिए और खूब पढ़ना चाहिए, जैसा कि सरस्वती/ गायत्री के बारे में उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है। हमारे विद्यालय मे प्रार्थना सभा स्थल पर होने वाली दैनंदिन प्रार्थना का हिस्सा है -'गायत्री-मंत्र' । मेरे यहाँ विद्यालय की दैनंदिन प्रार्थना मे 'गायत्री-मन्त्र' का पाठ लगभग 50 वर्षों से अनवरत चल है।

53- डी , गोरक्षनगर, सिंघड़िया कूड़ाघाट, गोरखपुर उ. प्र.

दूरभाष --9453609462